धनञ्जय कवि विरचित

नाममालादि शब्दकोश

- नाममाला
- अनेकार्थ
- अनेकार्थ निघण्टु
- एकाक्षरी शब्दकोश

सम्पादक/अनुवादक
ब्र. पवन कुमार सिद्धान्तरत्न, न्यायरत्न
ब्र. कमल कुमार सिद्धान्तरत्न, न्यायरत्न

नाममालादि शब्द कोश

संपादकअनुवादक
ब्र. पवन कुमार 'सिद्धान्त रत्न' 'न्यायरत्न'
ब्र. कमल कुमार 'सिद्धान्त रत्न' 'न्यायरत्न'

प्रकाशक

श्री दिगम्बर साहित्य प्रकाशन समिति बरेला
जबलपुर (म.प्र.)

प्रथम संस्करण - 2200 प्रतियाँ

मूल्य : 15/-

❑ **कृति** - नाममालादि शब्द कोश

❑ **लेखक** - धनञ्जय कवि

❑ **संपादन** -ब्र. पवन कुमार 'सिद्धान्तरत्न', न्यायरत्न
ब्र. कमल कुमार 'सिद्धान्तरत्न', न्यायरत्न
श्री वर्णी-दि० जैन गुरुकुल, पिसनहारी मढ़िया, जबलपुर, (म.प्र.)

❑ **मुद्रण सहयोग** - योगेश जैन, 2402, तोताराम बाजार, त्रीनगर, दिल्ली-35

❑ **प्रथम संस्करण** - 2200 प्रतियाँ

❑ **मूल्य** - 15.00 रुपये मात्र

❑ **प्राप्ति स्थान :**

■ **श्री दिगम्बर साहित्य प्रकाशन समिति**
जैन ट्रेडर्स, जैन मन्दिर के सामने, बरेला, जिला-जबलपुर (म.प्र.)
फोन : 0761-89487, 89483, 89481, 89431, 89150

■ **ब्र० जिनेश शास्त्री**
संचालक-श्री वर्णी दि० जैन गुरुकुल पिसनहारी मढ़िया,
जबलपुर (म.प्र.) फोन : 0761-422991

■ **आचार्य श्री विद्यासागर सहित्य सदन**
श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर, सरागवाड़ा, मौ० चाहपारस, देववन्द,
जिला सहारनपुर (उ०प्र०) फोन : 01336-22512, 22606, 23068

■ **प्रदीप वुक स्टॉल/चाँदनी इलैक्ट्रीकल्स**
शिन्दे की छावनी, लश्कर, ग्वालियर (म०प्र०) फोन : 0751-334055

■ **श्री दि० जैन ज्ञानाराधना साहित्य केन्द्र**
नसियाँ जी, आदिनाथ नगर, कोटा (राज०) फोन : 0744-425519, 435535

■ **ब्र० अनिल जैन एम.ए.एल.एल.बी.**
उदासीन आश्रम, छप्पन दुकान के पीछे, एम.जी रोड़, तुकोगंज, पलासिया, इन्दौर

■ **डॉ० अनुज गोयल (जैन) एम०डी०**
वीर नर्सिंग होम, देववन्द, जिला सहारनपुर (उ०प्र०) फोन: 01336-22520, 22529

■ **वावूलाल सुमत कुमार जैन (अखाई वाले)**
मेन वाजार, अशोक नगर, जिला गुना (म.प्र.) फोन : 07543-22620, 22615

■ **गुरुवर विद्यासागर जीव रक्षा केन्द्र**
1202-वी, प्रथम मंजिल, वहादुरगढ़ रोड़, दिल्ली-6 फोन : 011-3542125

■ **प्रकाश सिंघई**
द्वारा-चौक दिगम्बर जैन मंदिर, भोपाल, फोन : 0755-538967

■ **रायल कम्प्यूटर्स**
वनवे रोड़, सागर, (म०प्र०) फोन : 07582-63270

अन्तर की आवाज

श्री वर्णी दिगम्बर जैन गुरुकुल , पिसनहारी मढ़िया, जबलपुर के मेधावी विद्वान् ब्रह्मचारी पवन कुमार जी सिद्धान्तरत्न और ब्र. कमल कुमार जी सिद्धान्तरत्न ने 'अनेकार्थ निघण्टु' नामक ग्रन्थ पुरुषोत्तम कवि कृत 'एकाक्षरी शब्द कोश' एवं अमर कविकृत 'एकाक्षरी शब्द कोश' का हिन्दी अनुवाद कर '**नाममालादि शब्द कोश**' नामक ग्रन्थ सम्पादित किया है। इन दोनों ब्र. बन्धुओं ने 'कुन्द-कुन्द ज्ञान पीठ' परीक्षा संस्थान, इन्दौर से 'सिद्धान्त रत्न' पूर्ण एवं 'न्याय रत्न' प्रथम वर्ष की परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। स्वाध्याय , अध्ययन, अध्यापन में निरन्तर निमग्न रहते हैं। गुरुकुल में ये दोनो 'राम-लक्ष्मण' के नाम से जाने जाते हैं। ये कुशल वक्ता हैं तथा अपनी वक्तृत्व शैली के कारण समाज में सर्वत्र सादर आमन्त्रित होते हैं। मैं इनके सुन्दर भविष्य की कामना करता हूँ। इनके द्वारा सम्पादित 'सूक्तिमुक्तावली', 'सुबोध संस्कृत भारती', 'श्रावक चर्या', 'वृहद् सामायिक पाठ', 'नाममालादि शब्दकोश' आदि कृतियों को देखकर अन्तःकरण अत्यन्त प्रफुल्लित हो उठता हैं। इनके द्वारा इसी प्रकार पुरातन कृतियों का सृजन होता रहें और माँ जिनवाणी की सेवा में तत्पर रहें यही मेरी भावना हैं।

दिनांक 1-9-2000

अधिष्ठाता
पन्नालाल साहित्यचार्य
श्री वर्णी दि. जैन गुरुकुल
पिसनहारी मढ़िया, जबलपुर (म.प्र.)

सम्पादकीय

प्रियपाठको ! 'नाममालादि शब्द कोश' आपके कर कमलों में आ रहा है। यह प्राचीनग्रन्थ लगभग 8 वीं सदी का माना जाता है। इसका एक भाग पहले प्रकाशित हो चुका है जिसमे लगभग 245 श्लोकों का अनुवाद था । किन्तु धनञ्जय नाममाला भाष्य में लगभग एक सौ पचास श्लोक और भी देखने में आये जो '' अनेकार्थ निघण्टु'' के नाम से जाने जाते हैं। उनका अनुवाद हम लोगों ने अपने विद्यागुरु पं. श्री पन्नालालजी साहित्याचार्य के निर्देशन में पूर्ण किया। कुछ श्लोक तो पुस्तक में आधे ही छपे हुये हैं। और कुछ श्लोकों में कुछ अशुद्धियाँ होने के कारण अर्थ स्पष्ट नही हो सका उनके नीचे ''अर्थ स्पष्ट नही '' ऐसा लिख दिया गया है। हम लोगों ने इसकी पाण्डुलिपि खोजने की बहुत कोशिश की किन्तु उपलब्ध नही हो सकी इसलिये कही-कही स्वयं संशोधित पाठ को कोष्ठक में रखकर अर्थ किया है। वर्णी गुरुकुल जबलपुर के स्वर्ण जयंति समारोह के अवसर पर मढ़िया जी पधारे पूज्य मुनि श्री समाधि सागरजी महाराज को जब अनुवाद दिखाया तो मुनि श्री ने प्रेरणा दी कि पूर्वश्लोकों को भी इसमे सम्मिलित करलो तो धनञ्जय कवि का शब्द कोश एक स्थान पर उपलब्ध हो जायेगा, इसलिये पंडित मोहनलालजी द्वारा प्रकाशित नाममाला को भी इसमें सम्मिलित कर लिया है। इसके बाद अमर कवि कृत 'एकाक्षरी कोश' भी उपलब्ध हुआ जिसमें 19 श्लोक हैं। वह भी भाष्य के अन्त में छपा हुआ था। तथा कातन्त्र रुपमाला के प्रारंभ में पुरुषोत्तम कवि कृत 'एकाक्षरी कोश' का अनुवाद करके इसी मे प्रकाशित कर रहे हैं।

इन संकेत नियमों का ध्यान रखे ।

अनुवाद के बीच-बीच में ब्रेकिट में' पु.' 'स्त्री', 'नपुं.' और 'अ' ऐसा लिखा हुआ है जिसका मतलब यह है कि' पु.' से पुल्लिङ्ग, 'स्त्री'. से 'स्त्रीलिंग' और 'नपुं'. से 'नपुंसक लिंग' 'अ' से अव्यय और 'त्रि' से तीनो लिंगो अर्थात् वह शब्द तीनों लिंगों मे प्रयुक्त होता है ऐसा जानना चाहिये। '' को न विमुह्यति शास्त्र समुद्रे की उक्ति के अनुसार यदि त्रुटि रह गई हो तो विद्वत्गण ज्ञापित करने का कष्ट करें।

ग्रन्थ की साजसज्जा और प्रेस तक भेजने का पूर्ण सहयोग हमारे ज्येष्ठ

का रहा है , इन्होने और भी पूर्व ग्रन्थों ''सुबोध सस्कृत भारती'' ''श्रावकचर्या'' में अथक परिश्रम करके प्रकाशित करवाये हैं। इनका हम लोगों के प्रति अत्यन्त वात्सल्य हैं। अतः हम लोग इनके प्रति चिर कृतज्ञ रहेगें । ब्र.जिनेशजी को भी नहि भुलाया जा सकता जिनके संचालन कुशलता से गुरुकुल निरन्तर प्रगति पर है ।

सम्पादक
ब्र. पवन कुमार 'सिद्धान्त रत्न'
ब्र. कमल कुमार 'सिद्धान्त रत्न'
श्री वर्णी दि. जैन गुरुकुल
पिसनहारी मढ़िया जबलपुर (म.प्र.)

धनञ्जय शब्द कोश

विषय सूची

क्र.	नाम	श्लोक नं.
1.	मंगलाचरण	1
2.	'गो' शब्द के नाम	2
3.	'क' शब्द के नाम	3
4.	कं अनिमिष शब्द के नाम	4
5.	शिखिन् शब्द के नाम	5
6.	हंस शब्द के नाम	6
7.	सारस और राजा शब्द के नाम	7
8.	विभावसु और हिमाराति शब्द के नाम	8
9.	धनञ्जय और वीभत्स शब्द के नाम	9
10.	विरोचन शब्द के नाम	10
11.	पाञ्चजन्य और कम्बु शब्द के नाम	11
12.	भास्कर और पतंग शब्द के नाम	12
13.	कोशिक और शम्भु शब्द के नाम	13
14.	शंकु और जम्बुक शब्द के नाम	14
15.	अर्क और मन्थी शब्द के नाम	15
16.	केतु और तमोनुद शब्द के नाम	16
17.	मयूख और सप्तर्षि के नाम	17
18.	वसु और धिष्ण शब्द के नाम	18
19.	अम्बर और पय शब्द के नाम	19
20.	शिव शब्द के नाम	20
21.	क्षर और स्यन्दन शब्द के नाम	21
22.	कृष्ण और क्षीर शब्द के नाम	22
23.	शव और घृत शब्द के नाम	23
24.	विष और कर शब्द के नाम	24
25.	कीलाल और भुवन शब्द के नाम	25
26.	कोमल और सदन शब्द के नाम	26
27.	सद्मऔर संवर शब्द के नाम	27
28.	संवर और इडा शब्द के नाम	28
29.	इडा और अदिति शब्द के नाम	29
30.	भिदि और वृष शब्द के नाम	30
31.	वृषन् और रौहिणेय शब्द के नाम	31
32.	शेष और राम शब्द के नाम	32
33.	वराह शब्द के नाम	33
34.	वराह और अज शब्द के नाम	34
35.	अज और पुत्र शब्द के नाम	35
36.	पुष्कर और कूल शब्द के नाम	36
37.	अनन्त शब्द के नाम	37
38.	प्रजापति शब्द के नाम	38
39.	वाम शब्द के नाम	39
40.	आगोप और अंक शब्द के नाम	40
41.	वासर और विभावसु शब्द के नाम	41
42.	शर्वरी और सान्द्र शब्द के नाम	42
43.	स्व शब्द के नाम	43
44.	ककुप् शब्द के नाम	44
45.	क्षय और प्लव शब्द के नाम	45
46.	प्रसाद और धन शब्द के नाम	46
47.	घन और वरुथ शब्द के नाम	47
48.	वर्म और असुर शब्द के नाम	48
49.	नाग और गन्धर्व शब्द के नाम	49
50.	तार्क्ष्य और वालेय शब्द के नाम	50
51.	तृणी और शिखरी शब्द के नाम	51
52.	द्विज और मलिम्लुच शब्द के नाम	52
53.	आत्मज और कीनाश शब्द के नाम	53,54
54.	अवदात और ज्योति शब्द के नाम	55
55.	अवदात और वलाहक शब्द के नाम	56
56.	तोयद और जीमूत शब्द के नाम	57
57.	पौलस्त्य और शुचिकृत् शब्द के नाम	58
58.	ज्योति और प्रधान शब्द के नाम	59
59.	पर्यजन्य और शिलीमुख शब्द के नाम	60
60.	लेखा और अम्बरीष शब्द के नाम	61

क्र.	नाम	श्लोक नं.	क्र.	नाम	श्लोक नं.
61.	पुंस और असु शब्द के नाम	62	93.	बाँस, मेघ, और चतुर के नाम	96
62.	माया और मधु शब्द के नाम	63	94.	आकूत और मुख के नाम	97
63.	मधु और खं शब्द के नाम	64,65	95.	श्याम, कपिल और दूर के नाम	98
64.	प्रभाकर और सफेद शब्द के नाम	66	96.	श्रेष्ठ और स्नेह के नाम	99
65.	काले और नकुल शब्द के नाम	67	97.	चर्मकार और नाई के नाम	100
66.	बिल्ली और यम शब्द के नाम	68	98.	रोग के नाम	101
67.	लक्ष्मण शब्द के नाम	69	99.	वेग और क्यारी के नाम	102
68.	दक्ष शब्द के नाम	70	100.	चिडिया के नाम	103
69.	निपुण और आदित्य शब्द के नाम	71	101.	मंदिर, इन्द्र और युद्ध के नाम	104
70.	रोग ओर नितम्ब शब्द के नाम	72	102.	हरे, नीलेरंग, वैल ओर भैस के नाम	105
71.	वसु और सारंग के नाम	73	103.	बन्ध्यास्त्री और वास के नाम	106
72.	कदली और मेघ के नाम	74	104.	काम और पाप के नाम	107
73.	आत्मा और कर्ष शब्द के नाम	75	105.	राजा और रत्न के नाम	108
74.	पासा और कमल के नाम	76	106.	दीर्घ और वहुत के नाम	109
75.	आयतन और पुष्प के नाम	77	107.	हवा और प्रिय वाक्य के नाम	110
76.	वाजी शब्द के नाम	78	108.	वाजा के नाम	111
77.	हरि ललाम और शुक्र के नाम	79,80	109.	मालती के नाम	112
78.	वक्रवक्त्र और पुलिन के नाम	81	110.	आयु के नाम	113
79.	पाप, शीघ्र और प्रातः काल के नाम	82	111.	अग्नि और भीम के नाम	115
80.	तिलक और निकष के नाम	83	112.	युद्धशौण्ड के नाम	116
81.	मञ्जूष और केसरि के नाम	84	113.	समूह के नाम	117,118
82.	आलात और कल के नाम	85	114.	उपमा के नाम	119
83.	भाव और विलास के नाम	86	115.	यम और मंद के नाम	120
84.	कवन्ध और पगडी के नाम	87	116.	कृतध्न और अध्यात्म के नाम	121,122
85.	मण्डूक के नाम	88	117.	समाधि और दान्त के नाम	123
86.	शिवा, शंकर, किसान के नाम	89	118.	बहुत बोलने वाले के नाम	125
87.	कानीन और उत्कृष्ट के नाम	90	119.	प्रीति का लक्षण	126
88.	हस्तिदाँत और हस्ति बन्धन के नाम	91	120.	ख्याति का लक्षण	127
89.	घनाघन और वृद्धि के नाम	92	121.	उदारता का लक्षण	128
90.	वृक्ष और नदी के नाम	93	122.	तेज के नाम	129
91.	रुदन और कच्चे मांस के नाम	94	123.	नास्तिक के नाम	130
92.	मोती के नाम	95	124.	षड्वद के नाम	131

क्र.	नाम	श्लोक नं.
125.	अमृत और गोलक के नाम	132
126.	वस्त्रो के भेद	135
127.	स्त्री के भेद	136
128.	वर वर्णिनी का स्वरुप	137
129.	सुन्दर स्त्री के नाम	138
130.	अन्न के नाम	139
131.	लोहितग्रीव और रावण के नाम	140
132.	न्यग्रोध का लक्षण	141
133.	राजीव लोचन की परिभाषा	142
134.	भार्या शब्द के नाम	146
135.	कोटरस्था जन्तुओं के नाम	148
136.	दूरी नापने का यंत्र	150
137.	प्रस्था का नाम	
138.	जंगल का नाम	151
139.	बर्फ का नाम	152
140.	अँगरखे के नाम	198
145.	अँगुली के नाम	100
146.	अग्नि के नाम	64,65
147.	अचानक के नाम	182
148.	अन्धकार का नाम	149
149.	अफवाह के नाम	156
150.	अभ्यास के नाम	188
151.	अर्जुन के नाम	143,144
152.	अवस्था के नाम	124
153.	अष्टापद के नाम	90
154.	आकाश के नाम	53
155.	आज्ञा के नाम	155
156.	आदिनाथ के नाम	115
157.	आमन्त्रण के नाम	158
158.	आवाजों के नाम	105,106,107
159.	आश्चर्य के नाम	173
160.	आसन के नाम	113
161.	इन्द्र के नाम	130
162.	इन्द्रिय के नाम	139
163.	उत्प्रेक्षा के नाम	139
164.	उत्साह के नाम	174
165.	उपमा के नाम	137
166.	अपमान के नाम	137,138
167.	ऊँचे नीचे का नाम	185
168.	ऊँचे के नाम	159
169.	ऊँट के नाम	91
170.	ओष्ठ के नाम	101
171.	कटाक्ष के नाम	99
172.	कठोर के नाम	156
173.	कदली के नाम	183
174.	कन्धे के नाम	100
175.	कपूर के नाम	118
176.	कमर के नाम	103
177.	कमर के आगे-पीछे के नाम	103
178.	कमल के नाम	16,20
179.	कमलिनी के नाम	23
180.	क रधौनी के नाम	120
190.	कर्ण के नाम	98
191	कलंक के नाम	153,154
192	कल्याण के नाम	200
193	कस्तूरी के नाम	118
194	कष्ट के नाम	189
195	काम के नाम	77,80,81,83,84
196	काम के धनुष के नाम	83
197	कार्तिकेय के नाम	66, 127
198	काल के नाम	145,146
199	काले रंग के नाम	148
200	किरण के नाम	40,46
201	कीचड़ के नाम	20

क्र.	नाम	श्लोक नं.
202	कीर्ति के नाम	154,155
203	कुत्ते के नाम	92
204	कुल के नाम	125
205	कुबेर के नाम	95,96
206	कूख के नाम	102
207	कृष्ण के नाम	74,75
208	केशर के नाम	118
209	कोट के नाम	135
210	कोमल के नाम	157
211	कंजूस के नाम	176
212	क्रोध के नाम	109
213	खाई के नाम	134
214	खूटी के नाम	135
215	खून के नाम	191
216	गंगा के नाम	71,164
217	गड्ढे केनाम	193
218	गरुड़ के नाम	129,130
219	गले के नाम	101
220	गहने के नाम	119
221	गायों के घेरों का नाम	165
222	गुप्तचर के नाम	181
223	गुप्त बात के नाम	172
224	गोपुर के नाम	135
225	गोल के नाम	185
226	ग्रन्थकार का लघुताप्रकाशन	201
227	घमण्डी के नाम	169,170
228	घुटने के नाम	103
229	घृत के नाम	123
230	घोड़े के नाम	52
231	घोर के नाम	186
232	चकवे के नाम	51
234	चतुर के नाम	164
235	चन्द्रमा के नाम	46,47
236	चन्द्रमा के नाम	128,182
237	चाँदी के नाम	97
238	चोटी के नाम	199
239	चोर के नाम	170
240	छल के नाम	138,191
241	छज्जे के नाम	125
242	छत्र के नाम	198
243	छत्ते के नाम	198
244	छाँछ के नाम	123
245	छात्र के नाम	102
246	छिद्र के नाम	4
247	जल के नाम	15
248	जवानी के नाम	124
249	जबरदस्ती के नाम	182
250	जानी हुई वस्तु के नाम	108
251	जाँघ के नाम	103
252	जिनेन्द्रदेव के नाम	114,132
253	जुवारी के नाम	122
254	झरोखे के नाम	136
255	टुकड़े के नाम	190
256	तट के नाम	26,27
257	तत्काल के नाम	159
258	तलवार के नाम	85
259	तेज के नाम	46,186
260	तेंदुए के नाम	90
261	दया के नाम	110
262	दिक्पाल के नाम	61
263	दिग्गज के नाम	61
264	दिगम्बर के नाम	61,117
265	दिन के नाम	50
266	दिशा के नाम	61

क्र.	नाम	श्लोक नं.
267	दु:ख के नाम	189
268	दुर्बल के नाम	175
269	दूध के नाम	123
270	देर के नाम	186
271	देव के नाम	56
272	देश के नाम	97
273	धन के नाम	95
274	धनुष्य के नाम	79
275	धनुष की डोरी के नाम	82
276	धान के नाम	164
277	धूर्त के नाम	186
278	धूलि के नाम	156
279	धैर्य के नाम	175
280	ध्वजा के नाम	84
281	नक्षत्र के नाम	48
282	नगरी के नाम	97
283	नदी के नाम	24
284	ननद के नाम	
285	नरक के नाम	197
286	नवीन के नाम	157
287	नाम के नाम	167
288	नारद के नाम	73
289	नासिका के नाम	102
290	निन्दा के नाम	191
300	निषेध के नाम	159
301	नीच के नाम	169
302	नीचे के नाम	160
303	नील रंग के नाम	151
304	नेत्र के नाम	99
305	नौकर के नाम	29
306	पक्षी के नाम	54
307	पण्डित के नाम	111
308	पति के नाम	37
309	पतिव्रता स्त्री के नाम	34
310	पत्थर के नाम	171
311	पराग के नाम	152,153
312	पर्वत के नाम	7,8,9
313	पशु के नाम	16
314	पाप के नाम	131,132
315	पाशबद्ध के नाम	177,178
316	पिता के नाम	38
317	पीतरंग के नाम	151
318	पुण्य के नाम	131
319	पुत्र के नाम	39
320	पुत्री के नाम	40
321	पुराने के नाम	175,158
322	पुष्प के नाम	80
323	पृथ्वी के नाम	5.6
324	पेट के नाम	102
325	पैर के नाम	103
326	प्यारी स्त्री के नाम	33
327	प्रतापी के नाम	196
328	प्रातःकाल के नाम	182
329	प्रेरित वस्तु के नाम	104
330	बजने वाले बांस के नाम	184
331	बराबर के नाम	136,137
332	बलभद्र के नाम	143
333	बहिन के नाम	43
334	बहुत के नाम	172,194
335	बहुत काल के नाम	182
336	बाण के नाम	78
337	बालक के नाम	40
338	बात के नाम	156
339	बाहु के नाम	100

क्र.	नाम	श्लोक नं.
340	बुड्ढे के नाम	124
341	बुद्धि के नाम	110
342	बँधान के नाम	134
343	ब्रह्मा के नाम	72,126
344	भाई के नाम	42,43
345	भीम के नाम	63
346	भील के नाम	13,14
347	भेड़िया के नाम	127
348	भैंस के नाम	162
349	भँवर के नाम	27
350	भ्रमर के नाम	82
351	मकान के नाम	132,134
352	मछली के नाम	16,17
353	मदिरा के नाम	121
354	मद्यपी के नाम	122
355	मन के नाम	81
356	मनुष्य के नाम	28
357	महल के नाम	135
358	महादेव के नाम	68,71
359	महावत के नाम	89
360	महावीर के नाम	116
361	माता के नाम	38
362	मामी के नाम	43
363	मार्ग के नाम	163
364	माला के नाम	119
365	मांस के नाम	55
366	मित्र के नाम	41
367	मित्रता के नाम	187
368	मुख के नाम	98
369	मुनि के नाम	3,61,117
370	मूर्ख के नाम	168
371	मृतप्राणी के नाम	108
372	मेघ के नाम	16,18
373	मोचा के अर्थ	182
374	मोटे के नाम	185
375	मोती के नाम	94
376	मोर के नाम	126,127
377	युगल के नाम	2
378	युद्ध के नाम	87
379	युधिष्ठिर के नाम	147,148
380	युवा पुरुष के नाम	124
381	योग्य के नाम	188
382	रत्नत्रय के नाम	203
383	राक्षस के नाम	55
384	राग के नाम	162
385	राजा के नाम	7,10,28,112
386	रात्रि के नाम	48
387	लक्ष्मी के नाम	76
388	लड़ाई के नाम	191
389	लता के नाम	62
390	लम्बे के नाम	185
391	लहर के नाम	27
392	लालरंग के नाम	150
393	लोहे के नाम	119
394	बखतर के नाम	172
395	बछड़े के नाम	198
396	वज्र के नाम	19
397	वन के नाम	13
398	बन्दर के नाम	12
399	वर के नाम	192
400	बर्फ के नाम	180,181
401	वस्त्र के नाम	117
402	वाणी के नाम	104
403	बालों के नाम	199

क्र.	नाम	श्लोक नं.
404	वायु के नाम	62,63
405	बारम्वार के नाम	188
406	बिजली के नाम	18,19
407	बिछुओं के नाम	107
408	विद्याधर के नाम	54
409	विवाह के नाम	192
410	विवाहिता स्त्री के नाम	32
411	वृक्ष के नाम	7,11
412	वेश्या के नाम	36
413	व्यभिचारणी स्त्री के नाम	35
414	व्यर्थ के नाम	157,186
415	व्याना के नाम	197
416	शत्रु के नाम	44
417	शरीर के नाम	38,39
418	शास्त्र के नाम	4
419	शिर के नाम	104
420	शीघ्र के नाम	176,177
421	शूकर के नाम	91
422	शूरवीर के नाम	196
423	श्लोकों का परिमाण	204
424	सखी के नाम	41
425	सत्य के नाम	182
426	सफेद के नाम	1,9,150
427	सभासद के नाम	112
428	समीप के नाम	141,142
429	समुद्र के नाम	16,25
430	समूह के नाम	139,140
431	सम्पूर्ण के नाम	190
432	सर्प के नाम	128,129
433	सहायक के नाम	42
434	सहित के नाम	162
435	साथ के नाम	160
436	सिंह के नाम	90

क्र.	नाम	श्लोक नं.
437	सींग वाले पशु के नाम	164
438	सुन्दर के नाम	178,186
439	सुवर्ण के नाम	93,172
440	सूर्य के नाम	48,49,52
441	सेना के नाम	86
442	सौभाग्यवती स्त्री के नाम	32
443	संशय के नाम	158
444	संसार के नाम	113,195
445	स्तन के नाम	102
446	स्त्री के नाम	30,34
447	स्पष्ट के नाम	172
448	स्वभाव के नाम	188
449	स्वर्ग के नाम	56
450	स्वीकृत के नाम	197
451	हथियार के नाम	83
452	हनुमान के नाम	63
453	हमेशा के नाम	161,192
454	हरिण के नाम	128
455	हरे रंग के नाम	151
456	हर्ष के नाम	109
457	हल के नाम	142
458	हस्त के नाम	100
459	हस्ती के नाम	88,89
460	हंस के नाम	126
461	हंसिनी के नाम	127

नामावली

मङ्गलाचरण

तन्नमामि परं ज्योति – रवाङ्मनस – गोचरम्।
उन्मूलयत्यविद्यां यद्, विद्यामुन्मीलयत्यपि ॥1॥

अन्वयार्थ - (अहम् = मैं) तत् = उस, परंज्योतिः = उत्कृष्ट ज्योति स्वरूप केवलज्ञान को, नमामि = नमस्कार करता हूँ। यत् = जो, अवाङ् मनसगोचरम् = वचन और मन के अगोचर (अस्ति) = है, अविद्याम् = अज्ञान को, उन्मूलयति = नष्ट करता है। ,(च) = और, विद्याम् = ज्ञान को, उन्मीलयति = प्रकाशित करताहै।

भावार्थ - मैं धनञ्जय कवि उस उत्कृष्ट ज्योति-स्वरूप 'केवलज्ञान को' नमस्कार करता हूँ, जो यद्यपि अज्ञान को दूर कर ज्ञान का प्रकाश करता है, तो भी वचन और मन से नहीं जाना जाता है।

युगल (जोड़े) के नाम

द्वयं द्वितय – मुभयं , यमलं युगलं युगम्।
युग्मं द्वन्द्वं यमं द्वैतं, पादयोः पातु जैनयोः ॥2॥

द्वय, द्वितय, उभय, यमल, युगल, युग, युग्म, द्वन्द्व, यम और द्वैत (न.) ये 10 युगल (जोड़े) के नाम हैं। (जैनयोः) श्री जिनेन्द्रदेव के (पादयोः) चरणों का युगल (जोड़ा) सबकी (पातु) रक्षा करें।

मुनि के नाम

ऋषि–र्यति–र्मुनि–र्भिक्षुस्तापसः संयतो व्रती।
तपस्वी संयमी योगी, वर्णी साधुश्च पातु वः ॥3॥

ऋषि , यति, मुनि, भिक्षु, तापस, संयत, व्रतिन् , तपस्विन्, संयमिन्, योगिन् , वर्णिन् और साधु (पु.) ये 12 मुनि के नाम हैं। वे मुनि (वः) तुम्हारी (पातुः) रक्षा करें।

शास्त्र और शिष्य के नाम

कृतान्ताऽऽगम–सिद्धान्ताः, ग्रन्थः शास्त्रमतः परम्।
दीक्षितं मौण्ड्यं शिष्यं च, तमन्तेवासिनं विदुः ॥4॥

कृतान्त , आंगम , सिद्धान्त, ग्रन्थ (पु.) और शास्त्र (न.) ये 5 शास्त्र के नाम हैं। (अतः परम्) इनके आगे दीक्षित्, मौण्ड्य, शिष्य और अन्तेवासिन् (पु.) ये 4 छात्र के नाम (विदुः) जानना चाहिए।

नोट : छात्र के नामों के अन्त में स्त्री बोधक प्रत्यय जोड़ देने से छात्रा के नाम बन जाते हैं। जैसे - शिष्या , दीक्षिता , मौण्ड्या और अन्तेवासिनी (स्त्री.) आदि।

पृथ्वी (जमीन) के नाम

भूमि भूः पृथिवी पृथ्वी, गह्वरी मेदिनी मही।
धरा वसुमती धात्री, क्षमा विश्वम्भराऽवनिः ॥5॥
वसुधा धरणी क्षोणी, क्षमा धरित्री क्षितिश्च कुः।
कुम्भिनीलोर्वरा चोर्वी , जगती गौ र्वसुन्धरा ॥6॥

भूमि, भू , पृथिवी, पृथ्वी, गह्वरी, मेदिनी, मही, धरा, वसुमती, धात्री, क्षमा, विश्वम्भरा, अवनि, वसुधा, धरणी, क्षोणी, क्षमा, धरित्री, क्षिति, कु, कुम्भिनी, इला' उर्वरा, उर्वी, जगती, गो और वसुन्धरा (स्त्री.) ये 27 पृथ्वी (जमीन) के नाम हैं।

पर्वत राजा और वृक्ष के नाम

तत्पर्यायधरः शैलः, तत्पर्यायपतिर्नृपः।
तत्पर्याय रुहो वृक्षः, शब्दमन्यञ्च योजयेत् ॥7॥

(तत्पर्याय) अर्थात् पृथ्वी के नामों के अन्त में 'धर' शब्द जोड़ देने से पर्वत के नाम बन जाते हैं। जैसे - भूमिधर, और भूधर (पु.) आदि। 'पतिवाचक' शब्द जोड़ देने से राजा के नाम बन जाते हैं। जैसे भूमिपति और भूपति (पु.) आदि।

तथा 'रुह' शब्द जोड़ देने से वृक्ष के नाम बन जाते है जैसे - भूमिरुह, क्षितिरुह, कुरुह और भूरुह (पु.) आदि।

''शब्दमन्यं च योजयेत्'' अर्थात् पृथ्वी के नामों के अन्त में अन्य शब्द जोड़ कर और भी नाम बनाये जा सकते हैं। जैसे - भृत् शब्द जोड़ देने से पर्वत और राजा के नाम बन जाते हैं। जैसे - भूमिभृत् और भूभृत् (पु.) आदि। ध्र शब्द जोड़ देने से पर्वत के नाम बन जाते हैं। जैसे - भूमिध्र और भूध्र (पु.) आदि।

स्वामिवाचक तथा पाल शब्द जोड़ देने से राजा के नाम बन जाते हैं। जैसे - भूस्वामी और भूपाल (पु.) आदि। इसी प्रकार अन्य शब्द जोड़कर और भी शब्द बनाये जा सकते हैं। जैसे - चर शब्द जोड़कर भूचर (पु.) आदि भूमिगोचरी मनुष्य के नाम बनाये जा सकते हैं। और देव शब्द जोड़कर भूदेव (पु.) ब्राह्मण के नाम बनाये जा सकते हैं इत्यादि।

पर्वत के (दूसरे) नाम

दरीभृदचलः श्रृङ्गी, पर्वतः सानुमान्गिरिः ।
नगः शिलोच्चयोऽद्रिश्च, शिखरी त्रिककुन्मरुत् ॥8॥

दरीभृत् , अचल , श्रृङ्गिन्; , पर्वत, सानुमत, गिरि, नग, शिलोच्चय, अद्रि, शिखरिन् , त्रिककुत् और मरुत् (पु.) ये 12 पर्वत (पहाड़) के नाम हैं।

पर्वत के (तीसरे) नाम

प्रस्थं पार्श्वं तटं सानु, मेखलोपत्यका तटी ।
नितम्बमन्तो दन्तश्च, तद्वानपि गिरिः स्मृतः ॥9॥

प्रस्थ (पु. न.) - पर्वत की चोटी या समभूमि, पार्श्व (पु. न.) - पर्वत का पिछला भाग, तट (त्रि.) -पर्वत का किनारा, सानु (पु. न.) - पर्वत का शिखर या चोटी, मेखला (स्त्री.) - पर्वत का मध्य भाग , उपत्यका (स्त्री.) पर्वत के पास की जमीन, तटी (स्त्री.) पर्वत का किनारा, नितम्ब (पु.न.) पर्वत का मध्य भाग, अन्त (पु.) - पर्वत का समीप और दन्त (पु.) - निकुञ्ज (लतागृह , या अधनिकली चट्टान) का नाम है।

इन सबके अन्त में सम्बन्ध और आधार वाचक मतुप् प्रत्यय जोड़ देने से पर्वत के नाम (स्मृतः) स्मरण किये जाते हैं अर्थात् बन जाते हैं। जैसे प्रस्थवत् आदि।

राजा के नाम

राजाऽधिपः पतिः स्वामी, नाथः परिवृढः प्रभुः ।
ईश्वरो विभुरीशानो, भर्तेन्द्र इन ईशिता ॥10॥

राजन्, अधिप, पति, स्वामिन्; नाथ, परिवृढ़, प्रभु , ईश्वर, विभु , ईशान, भर्तृ , इन्द्र , इन और ईशितृ (पु.) ये 14 राजा के नाम हैं।

वृक्ष के नाम

अनोकहस्तरुः शाखी, विटपी फलिनो नगः ।
द्रुमोऽङ्घ्रिपः फलेग्राही, पादपोऽगो वनस्पतिः ॥11॥

अनोकह, तरु, शाखिन् , विटपिन् , फलिन्; , नग द्रुम, अङ्घ्रिप, फलेग्राहिन् , पादप, अग और वनस्पति (पु.) ये 12 वृक्ष (पेड़) के नाम हैं।

बन्दर के नाम

तत्पर्याय - चरो ज्ञेयो, हरि-र्बलिमुखः कपिः ।
वानरः प्लवगश्चैव, गोलाङ्गूलोऽथ मर्कटः ॥12॥

(तत्पर्याय) अर्थात् वृक्ष के नामों के अन्त में 'चर' शब्द जोड़ देने से बन्दर के नाम बन जाते हैं। जैसे - अनोकहचर और तरुचर (पु.) इत्यादि। तथा हरि, बलिमुख , कपि, वानर , प्लवग (प्लवङ्ग) गोलाङ्गूल और मर्कट (पु.) ये 7 बन्दर के नाम हैं ।

वन (जङ्गल) और भील के नाम

विपिनं गहनं कक्ष,-मरण्यं काननं वनम् ।
कान्तारमटवी दुर्गं, तच्चरः स्याद्वनेचरः ॥13॥

विपिन, गहन, कक्ष, अरण्य , कानन, वन, कान्तार (न.), अटवी (स्त्री.) और दुर्ग (न.) ये 9 वन (जंगल) के नाम हैं। इनके अन्त में 'चर' शब्द जोड़ देने से वनेचर (भील) के नाम बन जाते हैं। जैसे - विपिनचर, गहन चर (पु.) आदि।

भील के नाम

पुलिन्दः शवरो दस्यु - र्निषादो व्याधलुब्धकौ ।
धानुष्कोऽथ किरातश्च, सोऽरण्यानीचरः स्मृतः ॥14 ॥

पुलिन्द, शवर,दस्यु, निषाद, व्याध, लुब्धक, धानुष्क और किरात (पु.) ये अरण्यानीचर (पु.) अर्थात् भील के नाम हैं। अरण्यानी (स्त्रीं) बड़ी पहाड़ी (जंगल) का नाम (स्मृतः) स्मरण किया गया हैं। उसमें रहने के कारण भील को अरण्यानीचर कहते हैं।

पानी के नाम

वा र्वारि कं पयोऽम्भोऽम्बु, पाथोऽर्णः सलिलं जलम् ।
सरं वनं कुशं नीरं, तोयं जीवनमब्विषम् ॥15॥

वार्, वारि, क, पयस्, अम्भस् , अम्बु , पाथस् , अर्णस् , सलिल , जल, सर, वन, कुश, नीर , तोय , जीवन (न.) , अप् (स्त्री. बहु.), और विष (न.) ये 18 जल के नाम हैं ।

मछली, मेघ, कमल और समुद्र के नाम

तत्पर्याय – चरो मत्स्यस् तत्पर्याय–प्रदो घनः ।
तत्पर्यायोद्भवं पद्मं , तत्पर्यायधरोऽम्बुधिः ॥16॥

(तत्पर्याय) अर्थात् पानी के नामों के अन्तमें चर शब्द जोड़ देने से मत्स्य अर्थात् मछली के नाम हो जाते हैं । जैसे - वाश्चर, पाथश्चर, अर्णश्चर और वारिश्चर (पु.) इत्यादि । प्रदशब्द जोड़ देने से मेघ के नाम वन जाते हैं । जैसे - वाःप्रद, वारिप्रद (पु.) आदि ।

उद्भव शब्द जोड़ देने से कमल के नाम बन जाते हैं । जैसे - वारुद्भव और वार्युद्भव (न.) इत्यादि । तथा धरशब्द जोड़ देने से मेघ के नाम बन जाते हैं । जैसे - जलधर, वार्धर, पयोधर, अम्बुधर, सलिलधर और अम्भोधर (पु.) इत्यादि ।

मछली के नाम

पृथुरोमा षडक्षीणो, यादो वैसारिणो झषः ।
विसारी सफरो मीनः, पाठीनोऽनिमिषस्तिमिः ॥17॥

पृथरोमन् , षडक्षीण (पु.), यादस् (न.), वैसारिण, झष, विसारिन् , सफर, मीन, पाठीन , अनिमिष और तिमि (पु.) ये 11 मछली के नाम हैं। 'विसार' यह पाठान्तर भी है ।

मेघ बिजली और वज्र के नाम

घनाघनो घनो मेघो, जीमूतोऽभ्रं बलाहकः ।
पर्जन्यो मुदिरोऽनभ्राट् , शम्पा सौदामिनी तडित् ॥18॥
आकालिकी क्षणरुचि – र्विद्युत् तत्पतिरम्बुदः ।
निर्घातमशनि र्वज्र–मुल्काशब्दं च योजयेत् ॥19॥

घनाघन, घन, मेघ, जीमूत (पु.), अभ्र (न.) बलाहक, पर्जन्य, मुदिर और अनभ्राज् (पु.) ये 9 मेघ के नाम हैं। शम्पा, सौदामिनी (सौदामनी), तडित्, आकालिकी, क्षणरुचि और विद्युत्; (स्त्री.) ये 6 विजली के नाम हैं।

निर्घात (न.), अशनि (स्त्री. पु.) और वज्र (पु. न.) ये 3 वज्र और गाज के नाम हैं। (तत्) बिजली और वज्र के नामों तथा (उल्का) उल्का (रेखाकार तेज) शब्द के अन्त में (पतिः) पतिवाचक शब्द (योजयेत्) जोड़ देने से भी मेघ के नाम बन जाते हैं। जैसे - शम्पापति, निर्घातपति और उल्कापति (पु.) इत्यादि।

कीचड़ और कमल के नाम

परिषत्कर्दमः पङ्कस् तज्जं तामरसं विदुः ।
कमलं नलिनं पद्मं, सरोजं सरसीरुहम् ।।20।।
खरदण्डं कोकनदं, पुण्डरीकं महोत्पलम् ।
इन्दीवरं चारविन्दं, शतपत्रं च पुष्करम् ।।21।।
स्यादुत्पलं कुवलय - मथ नीलाम्बुजन्म च ।
इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन्, सिते कुमुदकैरवे ।।22।।

परिषत् कर्दम और पङ्क (पु.) ये तीन कीचड के नाम हैं। इनके अन्त में ज शब्द जोड़ देने से तामरस (न.) अर्थात् कमल के नाम(स्यात्) होते हैं। जैसे - परिषज्ज, कर्दमज, प ङ्कज आदि।

कमल, नलिन (न.), पद्म (न. पु.) सरोज, सरसीरुह, खर दण्ड , कोकनद, पुण्डरीक, महोत्पल, इन्दीवर, अरविन्द, शतपत्र, पुष्कर, उत्पल और कुवलय (न.) ये 15 सामान्य कमल केनाम हैं। नीलाम्बुजन्मन् और इन्दीवर (न.) ये 2 नीलकमल के नाम हैं। तथा कुमुद और कैरव (न.) ये 2 श्वेत कमल के नाम हैं।

लता और कमलिनी के नाम

तद्वती विसिनी ज्ञेया, व्रतती वल्लरी लता ।
वल्ली नामानि योज्यानि, वारिधिर्वर्ण्यतेऽधुना ।।23।।

(तद्वती) कमल के नामों के अन्त में स्त्रीप्रत्ययान्त मतुप् प्रत्यय जोड़ देने से विसिनी (स्त्री.) अर्थात् कमलिनी के नाम (ज्ञेया) जानना चाहिये। जैसे - कमलवती (स्त्री.) इत्यादि। व्रतती, वल्लरी, लता और वल्ली (स्त्री.) ये 4 लता के नाम हैं। (वल्ली नामानि) कमल के नामों के अन्त में लता के नामों को (योज्यानि) जोड़ देने से भी कमलिनी के नाम बन जाते हैं - जैसे - कमल व्रतती, पद्मवल्ली और सरोजलता (स्त्री.) इत्यादि। (अधुना) अब (वारिधिः) जलाशय के नाम (वर्ण्यते) कहे जाते हैं।

नदी के नाम

स्रोतस्विनी धुनी सिन्धुः , स्रवन्ती निम्नगाऽऽपगा ।
नदी नदो द्विरेफश्च, सरिन्नाव्या तरङ्गिणी ॥24॥

स्रोतस्विनी, धुनी, सिन्धु, स्रवन्ती, निम्नगा, आपगा, नदी (स्त्री.), नद, द्विरेफ (पु.) , सरित् , नाव्या और तरङ्गिणी (स्त्री.) ये 12 नदी के नाम हैं। यहाँ मूलपाठ 'सरिन्नामा' है। परन्तु संशोधित पाठ ही उपयुक्त है।

समुद्र के नाम

तत्पतिश्च भवत्यब्धिः, पारावारोऽमृतोद्भवः ।
अपारवारकूपारो, रत्न-मीनाऽभिधा-करः ॥25॥
समुद्रो वारिराशिश्च, सरस्वान्सागरोऽर्णवः ।

(तत्पतिः) अर्थात् नदी के नामों के अन्त में 'पति-वाचक' शब्द जोड़ देने से (अब्धि) अर्थात् समुद्र के नाम (भवति)होते हैं। जैसे - सरित्पति (पु.) आदि। तथा अब्धि, पारावार, अमृतोद्भव, अपारवार, अकूरपार् , रत्नाकर, मीनाकर, समुद्र, वारिराशि, सरस्वत्, सागर और अर्णव (पु.) ये 12 समुद्र के नाम हैं।

तट, भँवर और लहर के नाम

सीमोपकण्ठं तीरं च, पारं रोधोऽवधिस्तटम् ॥26॥
पालीवेला तटोच्छ्वासो, विभ्रमोऽयमुदन्वतः ।
भङ्गस्तरङ्गकल्लोलौ, वीचिरुत्कलिकावलिः ॥27॥

सीमा, सीमन् (स्त्री.), उपकण्ठ, तीर, पार, रोधस् (न.), अवधि (पु.), तट (त्री.) पाली और बेला (स्त्री.) ये 10 तीर केनाम हैं। तटोच्छ्वास (पु.) यह समुद्र की विभ्रम (भँवर-भौंर) का नाम हैं। भङ्ग, तरङ्ग, कल्लोल (पु.), वीचि (पु. स्त्री.) , उत्कलिका और आवलि (स्त्री.) ये 6 जल की लहर के नाम हैं।

मनुष्य और राजा के नाम

मनुष्यो मानुषो मर्त्यो, मनुजो मानवो नरः ।
ना पुमान् पुरुषो गोधा, धवः स्यात्तत्पतिर्नृपः ॥28॥

मनुष्य, मानुष, मर्त्य, मनुज, मानव, नर, नृ , पुम्स् , पुरुष (पु. और गोधा (स्त्री.) ये ।। मनुष्य के नाम हैं। (तत्पतिः) अर्थात् मनुष्य के नामों के अन्त में 'पतिवाचक' शब्द जोड़ देने से राजा के नाम (स्यात्) होते हैं। जैसे - मनुष्यपति और नृपति (पु.) आदि।

नोकर के नाम

भृत्योऽथ भृतकः पत्तिः, पदातिः पदगोऽनुगः ।
भटोऽनुजीव्यनुचरः, शस्त्रजीवी च किङ्करः ॥29॥

भृत्य, भृतक, पत्ति, पदाति, पदग, अनुग, भट, अनुजीविन् , अनुचर, शस्त्रजीविन् और किंकर (पु.) ये ।। नोकर के नाम हैं।

स्त्री के नाम

स्त्री नारी वनिता मुग्धा, भामिनी भीरुरङ्गना ।
ललना कामिनी योषिद्, योषा सीमन्तिनी वधूः ।30।
नितम्बिन्यबला बाला, कामुकी वामलोचना ।
भामा तनूदरी रामा, सुन्दरी युवतिश्चला ॥31॥

स्त्री, नारी, वनिता, मुग्धा, भामिनी, भीरु, अङ्गना, ललना, कामिनी, योषित् , योषा, सीमन्तिनी, वधू, (नितम्बिनी) नितम्बिनी, (अबला) अबला, बाला, कामुकी, वामलोचना, भामा, तनदूरी, रामा, सुन्दरी, युवति और चला (स्त्री.) ये 24 सामान्य स्त्री के नाम हैं।

विवाहिता और सौभाग्यवती स्त्री के नाम

भार्या जाया जनिः कुल्या, कलत्रं गेहिनी गृहम् ।
महिला मानिनी पत्नी तथा दाराः पुरन्ध्रिका ॥32॥

भार्या, जाया, जनि, ज़नी, कुल्या (स्त्री.), कलत्र (न.), गेहिनी (स्त्री.), गृह (न.), महिला, मानिनी, पत्नी (स्त्री.), और दारा (पु.) ये 12 विवाहिता स्त्री के नाम हैं। पुरन्ध्रिका, पुरन्ध्रि और पुरन्ध्री (स्त्री.) ये 3 पुत्र और पति वाली (सौभाग्यवती) स्त्री के नाम हैं।

प्यारी स्त्री के नाम

वल्लभा प्रेयसी प्रेष्ठा, रमणी दयिता प्रिया ।
इष्टा च प्रमदा कान्ता, चण्डी, प्रणयिनी तथा ॥33॥

वल्लभा, प्रेयसी, प्रेष्ठा, रमणी, दयिता, प्रिया, इष्टा, प्रमदा, कान्ता, चण्डी, प्रणयिनी (स्त्री.) ये ।1 प्यारी स्त्री के नाम हैं।

पतिव्रता स्त्री के नाम

सती पतिव्रता साध्वी, पतिवत्न्येकपत्न्यपि ।
मनस्विनी भवत्यार्या, विपरीता निरूप्यते ।।34।।

सती, पतिव्रता, साध्वी, (पतिवत्नी) पतिवत्नी, (एक पत्नी) एकपत्नी, मनस्विनी (अपि) और आर्या (स्त्री.) ये सात पतिव्रता अर्थात् (आर्या) सदाचारिणी स्त्री के नाम (भवति) हैं। अब आगे के श्लोक मे इससे (विपरीता) विपरीत व्यभिचारिणी स्त्री के नाम (निरुप्यते) कहते हैं।

व्यभिचारिणी और दूती के नाम

बन्धकी कुलटा मुक्ता, पुनर्भूः पुंश्चलीखला ।
स्पर्शाऽभिसारिका दूती, स्वैरिणी सम्फली तथा ।।35।।

बन्धकी, कुलटा, मुक्ता, पुनर्भूः, पुंश्चली और खला (स्त्री.) ये 6 व्यभिचारिणी स्त्री के नाम हैं। स्पर्शा, अभिसारिका , दूती, स्वैरिणी और सम्फली (स्त्री.) ये 5 दूती के नाम हैं।

वेश्या के नाम

गणिका लञ्जिका वेश्या, रूपाजीवा विलासिनी ।
पण्यस्त्री दारिका दासी, कामुकी सर्ववल्लभा ।।36।।

गणिका , लञ्जिका, वेश्या, रूपाजीवा, विलासिनी, पण्यस्त्री, दारिका, दासी, कामुकी और सर्ववल्लभा (स्त्री.) ये 10 वेश्या के नाम हैं। दासी पाठान्तर भी हैं।

पति के नाम

कान्तेष्टौ दयितः प्रीतः, प्रियः कामी च कामुकः ।
वल्लभोऽसुपतिः प्रेयान् , विटश्च रमणो वरः ।।37।।

कान्त, इष्ट, दयित, प्रीत, प्रिय, कामिन् , कामुक, वल्लभ असुपति, प्रेयस् , विट, रमण और वर (पु.) वे 13 पति के नाम हैं।

माता - पिता और शरीर के नाम

सवित्री जननी माता, सविता जनकः पिता ।

देहोऽपघनकायाङ्गं, वपुः संहननं तनुः ।।38।।

सवित्री , जननी और मातृ (स्त्री.) ये 3 माता के नाम हैं। सवितृ, जनक और पितृ (पु.) ये 3 पिता के नाम हैं। देह (पु.न.) , अपघन (पु.) काय (पु.न.) , अङ्ग, वपुस् , संहनन (पु.) तनु , तनू (स्त्री.) ।

शरीर , पुत्र , बालक और पुत्री के नाम

कलेवरं शरीरं च, मूर्तिरस्माद्भवः सुतः ।

पुत्रः सूनुरपत्यं च, तुक् तोकं चात्मजः प्रजा ।।39।।

उद्वहस्तनयः पोतो , दारको नन्दनोऽर्भकः ।

स्तनन्धयोत्तानशयौ, स्त्रीत्वे दुहितरं विदुः ।।40।।

कलेवर, शरीर (न.) और मूर्ति (स्त्री.) ये 11 शरीर के नाम हैं। (अस्मात् भवः सुताः) शरीर के नामों के अन्त में भव या भू वाचक शब्द जोड़ देने से पुत्र के नाम हो जाते हैं। जैसे - देहभवं, आत्मभू , तनुज (पु.) आदि। मूर्तिरस्माद्भवः सुताः यह पाठान्तर भी है।

सुत , पुत्र , सूनु (पु.) , अपत्य (न.) तुक् (पु.), तोक (न.), आत्मज (पु.), प्रजा, (स्त्री.) ये पुत्र के नाम हैं। उद्वह, तनय, पोत, दारक, नन्दन, अर्भक, स्तनन्धय और उत्तानशय (पु.) ये बालक के नाम हैं।

(स्त्रीत्वे दुहितरं) पुत्र के नामों के अन्त में स्त्रीलिङ्गबोधक प्रत्यय जोड़ देने से दुहितृ (स्त्री.) अर्थात् पुत्री के नाम (विदुः) जानना चाहिए। जैसे - सुता, पुत्री और दारिका (स्त्री.) आदि।

नोट : अपत्य और तोक शब्द नपुंसकलिङ्ग में रहते हुए ही पुत्र व पुत्री दोनों के वाचक हैं।

सखी और मित्र के नाम

वयस्याऽऽली सहचरी , सध्रीची सवयाः सखी ।

आलीविवर्जितं मित्रं , सम्बन्धो मित्रयुक् सुहृत् ।।41।।

वयस्या, आली, आलि , सहचरी, सध्रीची, सवयस् और सखी (स्त्री.)

ये 7 सखी के नाम हैं। इनमें से (आली विवर्जितं) आली शब्द को छोड़ कर शेष शब्द स्त्रीबोधक प्रत्यय निकाल देने से मित्र के नाम बन जाते हैं। जैसे वयस्य सहचर, सध्रयच्; सवयस् और सखि (पु.) तथा मित्र (न.) सम्बन्ध मित्रयुज् और सुहृत् (पु.) ये 9 मित्र के नाम हैं।

सहायक, भाई , बहिन, नन्द व भाभी के नाम

सहकृत्वा सहकारी, सहायः सामवायिकः ।
सनाभिः बन्धुसगोत्रौ, सोदर्योऽ वरजोऽनुजः ॥42॥
कनीयानग्रजो ज्येष्ठो, भ्रातृजानी स्वासाऽनुजा ।
भर्तुःस्वसा ननान्दा स्यान्मातुलानी प्रियाम्बिका ॥43॥

सहकृत्वन् , सहकारिन् , सहाय और सामवायिक (पु.) ये 4 सहायक के नाम हैं। सनाभि, बन्धु, सगोत्र, और सौदर्य (पु.) ये 4 सगे भाई के नाम हैं। अवरज, अनुज और कनीयस् (पु.) ये तीन छोटे भाई के नाम हैं। अग्रज और ज्येष्ठ (पु.) ये 2 बड़े भाई के नाम हैं।

भ्रातृजानी और स्वसृ (स्त्री.) ये दो बहिन के नाम हैं। अनुजा (स्त्री.) यह छोटी बहिन का नाम है। ननान्दृ (स्त्री.) यह पति की बहिन (ननद) का नाम हैं। तथा मातुलानी और प्रियाम्बिका (स्त्री.) ये 2 मामी अर्थात् मामा की स्त्री के नाम (स्यात्) होते हैं।

शत्रु के नाम

वैर्यरातिरमित्रोऽरिर्द्विट् सपत्नो द्विषद्रिपुः ।
असेव्यो दुर्जनः शत्रु – र्दुष्टो द्वेषी खलोऽहितः ॥44॥

वैरिन्, अराति, अमित्र, अरि, द्विष् , सपत्न, द्विषत् , रिपु, असेव्य, दुर्जन, शत्रु , दुष्ट , द्वेषिन् , खल और अहित (पु.) ये 16 शत्रु के नाम हैं।

किरण और तेज के नाम

दीधितिर्भानुरुस्रोंऽशु – र्गभस्तिः किरणः करः ।
पादो रुचि र्मरीचि र्भास्तेजोऽर्चि र्गौर्द्युतिः प्रभाः ॥45॥
दीप्तिर्ज्योतिर्महो धाम, रश्मिरुर्जो विभावसुः ।
शीतोष्णप्रायपूर्वाञ्चौ, तद्वन्ताविन्दुभास्करौ ॥46॥

दीधिति (स्त्री.) , भानु, उस्र, अंशु , गभस्ति, किरण, कर, पाद, (पु.), रुचि (स्त्री.), मरीचि (पु. स्त्री.) भास् (स्त्री.), तेजस् , अर्चिष्; (न.), गो (स्त्री. पु.), द्युति और प्रभा (स्त्री.) ये 16 किरण के नाम हैं।

दीप्ति (स्त्री.) , ज्योतिष् , ज्योति , महस् , धामन् (न.), रश्मि (पु.), उर्जस् (न.) और विभावसु (पु.) ये 8 तेज के नाम हैं।

(तदवन्तौ) अर्थात् किरण और तेज के नामों के आदि में शीत शब्द और अन्त में मतुप् प्रत्यय जोड़ देने से इन्दु अर्थात् चन्द्रमा के नाम तथा आदि में 'उष्ण' शब्द और अन्त में मतुप् प्रत्यय जोड़ देने से सूर्य के नाम बन जाते हैं। जैसे - शीतदीधितिमत् , शीतकिरणवत् तथा उष्णदीधितिमत् और उष्णकिरणवत् (पु.) आदि।

चन्द्रमा के नाम

शशी विधुः सुधासूतिः, कौमुदी कुमुदप्रियः ।
कलाभृच्चन्द्रमाश्चन्द्रः, कान्तिमानौषधीश्वरः ।।47।।

शशिन् , विधु , सुधासूति , कौमुदिन् , कुमुदप्रिय, कलाभृत् , चन्द्रमस् चन्द्र, कान्तिमत् और औषधीश्वर (पु.) ये 10 चन्द्रमा के नाम हैं। ओषधीश्वर पाठान्तर भी हो सकता हैं।

नक्षत्र, चन्द्रमा और रात्रि के नाम

उडूनि भानि तारर्क्षं, नक्षत्रं तत्पति-र्निशा ।
क्षणदा रजनी नक्तं, दोषा श्यामा क्षपाकरः ।।48।।

उडु, भ (न.), तारा (स्त्री.), ऋक्ष और नक्षत्र (न.) ये 5 नक्षत्र के नाम हैं। इनके अन्त में 'पति-वाचक' शब्द जोड़ देने से चन्द्रमा के नाम बन जाते हैं। जैसे - उडुपति, तारापति इत्यादि।

निशा, क्षणदा, रजनी (स्त्री.) , नक्तं (अव्यय) दोषा, श्यामा और क्षपा (स्त्री.) ये 7 रात्रि के नाम हैं। इनके अन्त में 'कर' शब्द जोड़ देने से भी चन्द्रमा के नाम बन जाते हैं। जैसे - निशाकर और क्षपाकर (पु.) आदि।

सूर्य , दिन और चकवे के नाम

तरणिस्तपनो भानु-र्ब्रध्नः पूषाऽर्यमा रविः ।
तिग्मः पतङ्गो द्युमणि-र्मार्तण्डोऽर्को ग्रहाधिपः ।।49।।

इनः सूर्यस्तमोध्वान्त तिमिराऽरि र्विरोचनः ।
दिनं दिवाह-र्दिवसो, वासरस्तत्करश्च सः ॥50॥
चक्रवाकाऽब्जपर्याय - बन्धु कुमुदविप्रियः ।
यमुनायमकानीन - जनकः सविता मतः ॥51॥

तरणि, तपन, भानु, व्रघ्न, पूषन् , अर्यमन् , रवि, तिग्म, पतङ्ग, द्युमणि, मार्तण्ड, अर्क, ग्रहाधिप, इन, सूर्य , तमोरि, ध्वान्तारि, तिमिरारि और विरोचन (पु.) ये 19 सूर्य के नाम हैं।

दिन (न.) दिवा (अव्यय) , अहन् (न.) दिवस और वासर (पु.) ये 5 दिन के नाम हैं। (तत्करः) अर्थात् दिन के नामों के अन्त में 'कर' शब्द जोड़ देने से भी सूर्य के नाम हो जाते हैं। जैसे - दिनकर आदि।

कोक, चक्र, चक्रवाक और रथाङ्ग (पु.) ये 4 चकवे के नाम हैं । (अब्जपर्याय) अर्थात् चकवे के नामों के अन्त में और पूर्वोक्त कमल के नामों के अन्त में 'बन्धुवाचक' शब्द जोड़ देने से भी सूर्य के नाम बन जाते हैं। जैसे कोकबन्धु और कमलबन्धु (पु.) आदि। तथा कुमुदविप्रिय, यमुनाजनक, यमजनक और कानीनजनक (पु.) ये भी सवितृ (पु.) अर्थात् सूर्य के नाम हैं।

घोड़े के नाम

वाहोऽश्वस्तुरगो वाजी, हयो धुर्यस्तुरङ्गमः ।
सप्तिरर्वा हरी रथ्यः, सप्ताद्यश्वो मयूखवान् ॥52॥

वाह, अश्व, तुरग, वाजिन् , हय , धुर्य , तुरङ्गम, सप्ति, अर्वन् , हरि और रथ्य (पु.) ये 11 घोड़े के नाम हैं। (सप्ताद्यश्वो) अर्थात् घोड़ें के नामों के आदि में 'सप्त' शब्द जोड़ देने से (मयूखवत्)(पु.) अर्थात् सूर्य के नाम बन जाते हैं। जैसे - सप्तवाह, सप्तवाजिन् , सप्तसप्ति, और सप्ताश्व (पु.) आदि।

आकाश के नाम

खं विहायो वियद्व्योम, गगनाकाशमम्बरम् ।
द्यौ र्नभोऽभ्रोऽन्तरिक्षं च, मेघवायु-पथोऽप्यथ ॥53॥

ख (न.), विहायस् (पु. न.), वियत् , व्योमन् , गगन, आकाश, अम्बर(न.), द्यो , दिव् (स्त्री.), नभस् , अभ्र , अन्तरिक्ष, अन्तरीक्ष (न.),

मेघपथ और वायुपथ (पु.) ये 15 आकाश के नाम हैं।

विद्याधर और पक्षी के नाम

तच्चरः खेचरस्तद्गः, पक्षी पत्री पतत्र्यपि ।
शकुन्तिः शकुनि र्विश्च, पतङ्गो विष्किरो वयः ॥54॥

(तत्चरः) अर्थात् आकाश के नामों के अन्त में 'चर' शब्द जोड़ देने से विद्याधर के नाम बन जाते हैं। जैसे - खेचर और विहायश्चर (पु.) आदि। तथा 'ग' शब्द जोड़ देने से पक्षी और विद्याधर के नाम हो जाते हैं। जैसे - खग, विहायोग, नभोग, और वियद्ग (पु.) आदि। तथा पक्षिन् , पत्रिन्, पतत्रिन्, शकुन्ति , पतङ्ग, विष्किर (पु.) और वयस् (न.) ये 9 पक्षी के नाम हैं।

नोट - नभचर इत्यादि शब्दों के प्रयोग से ध्वनित होता हैं आकाश के नामों के अन्त में चरशब्द जोड़ देने से पक्षी के भी नाम बन जाते हैं।

मांस तथा राक्षस के नाम

जाङ्गलं पिशितं मांसं, पलं पेशी च तत्प्रियः ।
यातुधानस्तथा रक्षो , रात्र्यादिचर इष्यते ॥55॥

जाङ्गल, पिशित , मांस , पल (न.) और पेशी (स्त्री.) ये 5 मांस के नाम हैं। इनके अन्त में 'प्रिय' शब्द जोड़ देने से राक्षस के नाम बन जाते हैं। जैसे - मांसप्रिय (पु.) आदि। यातुधान (पु.) और रक्षस् (न.) ये भी राक्षस के नाम हैं। तथा (रात्र्यादि चर) अर्थात् रात्रि के नामों के अन्त में 'चर' शब्द जोड़ देने से भी राक्षस के नाम (इष्यते) माने जाते हैं। जैसे - रात्रिचर और निशाचर (पु.) आदि।

देव और स्वर्ग के नाम

सुतोऽदितेस्तडिद्धन्वा, सेन्द्रो देवः सुरोऽमरः ।
स्व द्यौः स्वर्गोऽथ नाकश्च, तद्वासस्त्रिदशो मतः ॥56॥

(सुतोऽदिते) अर्थात् अदिति शब्द के अन्त में पुत्रवाचक शब्द जोड़ देने से देव के नाम बन जाते हैं। जैसे - अदितिसुत और अदितिसूनु आदि तथा तडिद्धन्वन् , सेन्द्र, देव , सुर और अमर (पु.) ये 5 देव के नाम हैं। स्वर् (अव्यय) दिव् , द्यो

(स्त्री.) , स्वर्ग और नाक (पु.) ये 5 स्वर्ग के नाम हैं। (तद्वासः) अर्थात् स्वर्ग के नामों के अन्त में 'वास' शब्द जोड़ देने से भी त्रिदश (पु.) अर्थात् देव के नाम बन जाते हैं। जैसे - स्वर्वास, द्युवास और द्योवास (पु.) इत्यादि।

इन्द्र के नाम

तत्पतिः शक्र इन्द्रश्च, सुनाशीरः शतक्रतुः ।
प्राचीनबर्हीः सूत्रामा, वज्री चाखण्डलो हरिः ॥57॥
शत्रु र्बलस्य गोत्रस्य, पाकस्य नमु - चेरपि ।
वृत्रहा च सहस्राक्षो, गीर्वाणेशः पुरन्दरः ॥58॥
विडौजाश्चाप्सरोनाथो, वासवो हरिवाहनः ।
मरुत्पति र्मरुत्वाँश्च, वृषा चैरावणाधिपः ॥59॥
शतमन्युस्तुराषाट् च, पुरुहूतश्च कौशिकः ।
सङ्क्रन्दनोऽथ मघवान्, पुलोमारि र्मरुत्सखः ।60।

(तत्पतिः) अर्थात् देव और स्वर्ग के नामों के अन्त में 'पतिवाचक' शब्द जोड़ देने से इन्द्र के नाम बन जाते हैं। जैसे - त्रिदशपति , देवपति, स्वर्गपति और नाकपति (पु.) आदि। तथा शक्र, इन्द्र , सुनाशीर, शतक्रतु, प्राचीनबर्हिष् , सूत्रामन् , वज्रिन् , आखण्डल, हरि , बलशत्रु , गोत्रशत्रु , पाकशत्रु , नमुचिशत्रु वृत्रहन् , सहस्राक्ष, गीर्वाणेश, पुरन्दर, विडौजस् , अप्सरोनाथ, वासव, हरिवाहन, मरुत्पति, मरुत्वात्, वृषन् , ऐरावणाधिप , शतमन्यु, तुराशाह, पुरुहूत , कौशिक, सङ्क्रन्दन, मघवत् पुलोमारि और मरुत्सख (पु.) ये 33 शब्द इन्द्र (देवराज) के नाम हैं।

दिशा और दिगम्बर मुनि के नाम

काष्ठा ककुब् दिगाशा च, दक्षकन्या तथा हरित् ।
तत्पर्यायपरं योज्यं, प्राज्ञैः पालगजाम्बरम् ॥61॥

काष्ठा, ककुप् , दिश् , आशा , दक्षकन्या और हरित् (स्त्री.)ये 6 दिशा के नाम हैं। (तत्पर्याय परं) अर्थात् दिशा के नामों के अन्त में 'पाल' शब्द जोड़ देने से कष्ठापाल और दिक्पाल (पु.) आदि दिक्पाल के , 'गज' शब्द जोड़ देने से दिग्गज (पु.) आदि दिग्गज के तथा वस्त्रवाचक 'अम्बर' आदि शब्द जोड़ देने से दिगम्बर , काष्ठाम्बर और दिग्वासस् (पु.) आदि दिगम्बर मुनि के नाम बन जाते हैं।

वायु, भीम और हनुमान के नाम

पवनः पवमानश्च, वायु र्वातोऽनिलो मरुत् ।
समीरणो गन्धवाहः, श्वसनश्च सदागतिः ॥62॥
नभस्वान् मातरिश्वा च, चरण्यु-र्जवनश्चलः ।
प्रभञ्जनोऽस्य पर्याय , पुत्रो भीमाञ्जनात्मजौ ॥63॥

पवन, पवमान, वायु, वात, अनिल, मरुत् , समीरण, गन्धवाह, गन्धवह, श्वसन, सदागति, नभस्वत् , मातरिश्वन् , चरण्यु, जवन, चल और प्रभञ्जन (पु.) ये 17 वायु के नाम हैं।

(अस्य पर्याय पुत्र) अर्थात् वायु के नामों के अन्त में 'पुत्रवाचक' शब्द जोड़ देने से भीम के तथा अञ्जना के नामों के अन्त में आत्मज शब्द जोड़ देने से हनुमान् के नाम बन जाते हैं। जैसे - पवनपुत्र वायुसूनु और अञ्जनात्मज (पु.) आदि।

अग्नि के नाम

तत्सखोऽग्निःशिखी वह्निः , पावकश्चाऽऽशुशुक्षणिः ।
हिरण्यरेताः सप्तार्चि - र्जातवेदास्तनूनपात् ॥64॥
स्वाहापति र्हुताशश्च, ज्वलनो दहनोऽनल : ।
वैश्वानरः कृशानुश्च, रोहिताश्वो विभावसुः ॥65॥
वृषाकपिः 'समीगर्भो, हव्यवाहो हुताशनः ।

(तत्) अर्थात् पवन के नामों के अन्त में 'सखि' आदि मित्रवाचक शब्द जोड़ देने से अग्नि के नाम बन जाते हैं। जैसे - पवन सख (पु.) आदि। तथा अग्नि, शिखिन् , वह्नि, पावक , आशुशुक्षणि, हिरण्यरेतस् (पु.) सप्तार्चिष्; (न.) जातवेदस् , तनूनपात् , स्वाहापति, हुताश, ज्वलन , दहन , अनल , वैश्वानर, कृशानु, रोहिताश्व, विभावसु , वृषाकपि , समीगर्भ , हव्यवाह और हुताशन (पु.) ये 22 अग्नि के नाम हैं।

कार्तिकेय के नाम

तदादिसूनुः सेनानीः, स्कन्दश्च शिखिवाहनः ॥66
कार्तिकेयो विशाखश्च, कुमारः षण्मुखो गुहः ।

शक्तिमान् क्रौञ्चभेदी च, स्वामी शरवणोद्भवः ॥67॥

अग्नि के नामों के अन्त में 'सुनु आदि पुत्रवाचक' शब्द जोड़ देने से कार्तिकेय के नाम बन जाते हैं। जैसे - अग्निसूनु , वह्निपुत्र (पु.) आदि। तथा सेनानी, स्कन्द शिखिवाहन , कार्तिकेय , विशाख , कुमार षण्मुख , गुह , शक्तिमत् क्रौञ्चभेदिन् , स्वामिन् और शरवणोद्भव (पु.) में 12 कार्तिकेय के नाम हैं।

महादेव के नाम

तत्पिता शङ्करः, शम्भुः, शिवः स्थाणु र्महेश्वरः ।
त्र्यम्बको धूर्जटिः शर्वः, पिनाकी प्रमथाधिपः ॥68॥
त्रिपुरारि, र्विशालाक्षो, गिरीशो नीललोहितः ।
रुद्रेन्दुमौली यज्ञारि - स्त्रिनेत्रो वृषभध्वजः ॥69॥
उग्रः शूली कपाली च, शिपिविष्टो भवो हरः ।
उमापति र्विरूपाक्षो, विश्वरूपः कपर्द्यपि ॥70॥

(तत्पिता) अर्थात् कार्तिकेय के नामों के अन्त में 'पितृवाचक' शब्द जोड़ देने से महादेव के नाम बन जाते हैं। जैसे - सेनानी पितृ और गुहजनक (पु.) आदि। तथा शङ्कर शम्भु , शिवं स्थाणु , महेश्वर , त्र्यम्बक, धूर्जटि , शर्व , पिनाकिन् प्रमथाधिप, त्रिपुरारि, विशालाक्ष , गिरीश, नीललोहित, रुद्र, इन्दुमौलि, यज्ञारि, त्रिनेत्र, वृषभध्वज, उग्र, शूलिन् , कपालिन् शिपिविष्ट , भव , हर , उमापति, विरूपाक्ष, विश्वरूप और कपर्दिन् (पु.) ये महादेव के नाम हैं।

गंगा और महादेव के नाम

भागीरथी त्रिपथगा, जाह्नवी हिमवत्सुता ।
मन्दाकिनी द्युपर्याय-धुनी गङ्गा नदीश्वरी ॥71॥

भागीरथी, त्रिपथगा, जाह्नवी, हिमवत्सुता, मन्दाकिनी , गङ्गा और नदीश्वरी (स्त्री.) ये 7 गङ्गा के नाम हैं। (द्युपर्याय धुनी) अर्थात् स्वर्ग के नामों के अन्त में 'धुनी' आदि नदीवाचक शब्द जोड़ देने से भी गङ्गा के नाम बन जाते हैं। जैसे - स्वर्धुनी , नाकनदी, स्वर्गधुनी, (स्त्री.)। 'नदीश्वरः' पाठान्तर है। जिससे नदी के नामों के अन्त में ईश्वर शब्द जोड़ देने से महादेव के नाम बनते हैं , ऐसा ध्वनित होता है।

ब्रह्मा और नारद के नाम

विधि वेंधा विधाता च, द्रुहिणोऽजश्चतुर्मुखः ।
पद्म–पर्याय–योनिश्च, पितामह विरिञ्चनौ ॥72॥
हिरण्यगर्भः स्रष्टा च, प्रजापतिस्सहस्त्रपात् ।
ब्रह्मात्मभूरनन्तात्मा, कस्तत्पुत्रो हि नारदः ॥73॥

विधि, वेधस् , विधातृ , द्रुहिण, अज, चतुर्मुख , पितामह, विरिञ्चन, हिरण्यगर्भ , स्रष्टन् , प्रजापति , सहस्त्रपात् , ब्रह्मन् , आत्मभू , अनन्तात्मन् और क (पु.) ये 16 ब्रह्मा के नाम हैं।

तथा (पद्मपर्याय) अर्थात् कमल के नामों के अन्त में 'योनि' शब्द जोड़ देने से भी ब्रह्मा के नाम बन जाते हैं। जैसे - कमलयोनि , पद्मयोनि और कुमुदयोनि (पु.) आदि। (तत्पुत्रों) अर्थात् ब्रह्मा के नामों के अन्त में पुत्रवाचक , शब्द जोड़ देने से नारद के नाम बन जाते हैं। जैसे - विधिपुत्र और ब्रह्मसूनु (पु.) आदि।

कृष्ण और लक्ष्मी के नाम

कृष्णो दामोदरो विष्णु - रुपेन्द्रः पुरुषोत्तमः ।
केशवश्च हृषीकेशः,शाङ्‌र्गी नारायणो हरिः ॥74॥
केशी मधु बलि र्वाणो, हिरण्यकशिपु र्मुरः ।
तदादि–सूदनः शौरिः, पद्मनाभोऽप्यधोक्षजः ॥75॥
गोविन्दो वासुदेवश्च, लक्ष्मीः श्रीर्गोमिनीन्दिरा ।
तत्पतिः शैलभूम्यादि - धरश्चक्रधरस्तथा ॥76॥

कृष्ण, दामोदर, विष्णु, उपेन्द्र , पुरुषोत्तम, केशव, हृषीकेश, शार्ङ्गिन्, नारायण , हरि , केशिसूदन , मधुसूदन , बलिसूदन, बाणसूदन, हिरण्यक - शिपुसूदन, मुरसूदन, शौरि, पद्मनाभ, अधोक्षज, गोविन्द और वासुदेव (पु.) ये 21 कृष्ण के नाम हैं।

लक्ष्मी , श्री , गोमिनी और इन्दिरा (स्त्री.) ये लक्ष्मी (कृष्ण की स्त्री) के नाम हैं । (तत्पतिः) अर्थात् कृष्ण के नामों के अन्त में 'पतिवाचक' शब्द तथा (शैलभूमि आदि) पर्वत और भूमि के नामों के अन्त में (धरः) 'धर' शब्द जोड़ देने से भी (चक्रधरः) कृष्ण के नाम बन जाते हैं। जैसे - लक्ष्मीपति, पर्वतधर और भूमिधर (पु.) आदि। चक्रधर भी कृष्ण का नाम हैं।

कामदेव के नाम

तत्पुत्रो मन्मथः कामः, शङ्कारिरनन्यजः ।
कायपर्याय - रहितो, मदनो मकरध्वजः ।।77।।

(तत्पुत्रः) अर्थात् कृष्ण के नामों के अन्त में 'पुत्र - वाचक शब्द और (काय पर्यायः) शरीर के नामों के अन्त में (रहितः) 'रहित' शब्द अथवा आदि में 'अ' शब्द जोड़ देने से कामदेव के नाम बन जाते हैं। जैसे - कृष्णपुत्र , शौरिसूनु , कायरहित और अकाय (पु.) आदि। तथा मन्मथ, काम, शङ्करारि अनन्यज, मदन और मकरध्वज (पु.) ये 6 कामदेव के नाम हैं।

बाण के नाम

शिलीमुखः शरो बाणो, मार्गणो रोपणः कणः ।
इषु काण्डं क्षुरप्रञ्च, नाराचं तोमरं खगः ।।78।।

शिलीमुख, शर, बाण, मार्गण, रोपण, कण, इषु (पु.), काण्ड, क्षुरप्र, नाराच , तोमर (पु. न.) और खग (पु.) ये 12 बाण केनाम हैं।

धनुष और धनुष की कोटि के नाम

कार्मुकं धन्व चापं च, धर्मं कोदण्डकं धनुः ।
शिलीमुखाद्य-मासनं , तत्कोटिमटनीं विदुः ।।79 ।।

कार्मुक , धन्वन् (न.), चाप, धर्मन् , धर्म, कोदण्डक और धनुष् (पु.न.) ये 7 धनुष् के नाम हैं। तथा (सिली मुखादि आसनं) अर्थात् बाण के नामों के अन्त में 'आसनवाचक' शब्द जोड़ देने से भी धनुष् के नाम बन जाते हैं। जैसे - शिलीमुखासन, शरासन और इष्वासन (न.) आदि। (तत्कोटिम्) धनुष की कोटि (अग्रभाग, नोक) को अटनी या अटनि (स्त्री.) (विदुः) जानना चाहिए।

पुष्प और काम के नाम

पुष्पं सुमनसः फुल्लं, लतान्तं प्रसवोद्गमौ ।
प्रसूनं कुसुमं ज्ञेयं, तदाद्यस्त्रशरः स्मरः ।।80।।

पुष्प (न.) , सुमनस् (स्त्री. बहु.), फुल्ल, लतान्त (न.), प्रसव, उद्गम (पु.), प्रसून और कुसुम (न.) ये 8 पुष्प (फूल) के नाम हैं। (तदादि अस्त्र) अर्थात् पुष्प के नामों के अन्त में 'अस्त्र' (हथियार) वाचक शब्द और (शरः)

शर (बाण) के नामों कों जोड़ देने से स्मर (काम) के नाम बन जाते है। जैसे पुष्पास्त्र कुसुमायुध प्रसूनहेति, पुष्पशर और प्रसूनबाण (पु.) आदि। इस श्लोक में सुमनसः यह बहुवचन का रूप हैं।

मन और कामदेव के नाम

स्वान्तमास्वनितं चित्तं, चेतोऽन्तः करणं मनः।
हृदयं विशिखाकूतं , मारस्तत्रोद्भवो मतः ।।81।।

स्वान्त, आस्वनित, चित्त, चेतस् अन्तःकरण मनस् , हृदय , विशिख और आकूत (न.) ये 9 मन के नाम हैं। इनके अन्त में 'भव' अथवा 'उद्भव' वाचक शब्द जोड़ देने से कामदेव के नाम (मतः) माने जाते हैं। जैसे - मनोभव, स्वान्तोद्भव, मनोज और चित्तजन्य (पु.) आदि।

धनुष की डोरी और भ्रमर के नाम

मौर्वी जीवा गुणो गव्या, ज्याऽलि भृङ्गः शिलीमुखः।
भ्रमरः षट्पदो ज्ञेयो, द्विरेफश्च मधुव्रतः ।।82।।

मौर्वी, जीवा (स्त्री.), गुण (पु.), गव्या और ज्या (स्त्री.) ये 5 धनुष की डोरी के नाम हैं। अलि, भृङ्ग , शिलीमुख , भ्रमर , षट्पद, द्विरेफ और मधुव्रत (पु.) ये 7 भ्रमर के नाम(ज्ञेयः) जानना चाहिये।

मौर्व्यादि - प्रान्तमल्यादि, कन्दर्पस्यैक्षवं धनुः।
हेतिरस्त्रायुधं शस्त्रं, पुष्पाद्यस्त्रः स्मरो मतः ।।83।।

(मौर्व्यादिप्रान्तम्) अर्थात् अलि आदि भ्रमर के नामों के अन्त में मौर्वी आदि डोरी के नामों को जोड़ देने से काम के नाम बन जाते हैं। जैसे अलिमौर्वी (स्त्री.) आदि। काम के धनुष को ऐक्षव (न.) कहते हैं।

हेति (स्त्री.) अस्त्र ' आयुध और शस्त्र (न.) ये हथियार के नाम हैं। (पुष्पाद्यस्त्र) अर्थात् पुष्प के नामों के अन्त में हथियार और बाण के नामों को जोड़ देने से भी कामदेव के नाम (मतः) माने जाते हैं। जैसे - पुष्पहेति और पुष्पवाण (पु.) आदि।

ध्वजा और काम के नाम

ध्वजा पताका केतुश्च, चिह्नं तद्वैजयन्त्यपि।
तत्तदन्तो ? झषाद्यादिः, शम्भो र्विघ्नकरः स्मरः ।।84।।

ध्वजा (त्रि.) पताका (स्त्री.), केतु (पु.), चिह्न (न.) और वैजयन्ती (स्त्री.) ये 5 ध्वजा के नाम हैं। (झषाद्यादि) अर्थात् मछली के नामों के अन्त में (तत्तदन्तो) ध्वजा के नामों को जोड़ देने से और शंकर के नामों के अन्त में 'विध्नकर' शब्द जोड़ देने से कामदेव के नाम बन जाते हैं। जैसे - झषध्वज , मीनकेतु और शिवविध्नकर (पु.) इत्यादि।

तलवार के नाम

कौक्षेयकोऽसि र्निस्त्रिंशः, कृपाणः करबालकः।
तरवारि र्मंडलाग्रः, खड्गनामावलि र्मता ॥85॥

कौक्षेयक, असि, निस्त्रिंश, कृपाण, करबालक , तरवारि , मण्डलाग्र और खड्ग (पु.) ये 8 तलवार के नाम(मता)माने गये हैं।

सेना के नाम

अक्षौहिणी बलानीकं, वाहिनी साधनं चमूः ।
ध्वजिनी प्रतना सेना, सैन्यं दण्डो वरूथिनी ॥86॥

अक्षौहिणी (स्त्री.), बल, अनीक (न.) , वाहिनी (स्त्री.), साधन (न.), चमू , ध्वजिनी, प्रतना, सेना (स्त्री.), सैन्य (न.), दण्ड (पु.) और बरूथिनी (स्त्री.) ये 12 सेना के नाम हैं।

युद्ध के नाम

कदनं समरं युद्धं, संयुगं कलहं रणम् ।
सङ्ग्रामं सम्परायाजी, संयदाहु र्महाहवम् ॥87॥

कदन , समर (पु. न.), युद्ध (न.) संयुग , कलह (पु.), रण (पु. न.), सङ्ग्राम , सम्पराय (पु.) आजि, संयत् (स्त्री.) और महाहव (पु.) ये 12 युद्ध के नाम हैं।

हस्ती (हाथी) और महावत के नाम

गजो मतङ्गजो हस्ती, वारणोऽनेकपः करी ।
दन्ती स्तम्बेरमः कुम्भी, द्विरदेभ-मितङ्गमाः ॥88॥
शुण्डालः सामजो नागो, मातङ्गःपुष्करी द्विपः ।
करेणुः सिन्धुरस्तेषु, यन्ता याता निषाद्यपि ॥89॥

गज, मतङ्गज, हस्तिन् , वारण, अनेकप, करिन् , दन्तिन् , स्तम्बेरम, कुम्भिन्, द्विरद, इभ , मितङ्गम, शुण्डाल, सामज, नाग, मातङ्ग, पुष्करिन् , द्विप, करेणु और सिन्धुर (पु.) ये 20 हाथी के नाम हैं। इनके अन्त में यन्तृ, यातृ और निषादिन् (पु.) शब्द जोड़ देने से महावत् के नाम बन जाते हैं। जैसे - गजयन्तृ , गजयातृ और गजनिषादिन् (पु.) आदि।

सिंह , तेंदुए और अष्टापद के नाम

नागाद्यरिः कण्ठीरवो, मृगेन्द्रः केशरी हरिः ।
व्याघ्रश्चमूरः शार्दूलः , शरभोऽष्टापदोऽष्टपात् ॥90॥

हस्ती के नामों के अन्त में 'अरि' वाचक शब्द जोड़ देने से सिंह के नाम बन जाते हैं। जैसे - गजारि (पु.) आदि। तथा कण्ठीरव, मृगेन्द्र , केशरिन् , केसरिन् और हरि (पु.) ये 5 सिंह के नाम हैं। व्याघ्र , चमूर और शार्दूल (पु.) ये 3 तेंदुए के नाम है। शरभ, अष्टापद और अष्टपात् (पु.) ये ३ अष्टापद के नाम है।

सुअर और ऊँट के नाम

क्रोडो वराहो दंष्ट्री च, घृष्टिः पोत्री च शूकरः ।
उष्ट्रो मयः श्रृंखलिकः, करभः शीघ्रगामुकः ॥91॥

क्रोड, वराह, दंष्ट्रिन् , घृष्टि , पोत्रिन् और शूकर (पु.) ये 6 सुअर के नाम हैं। उष्ट्र , मय, श्रृङ्खलिक , करभ और शीघ्रगामुक (पु.) ये 5 ऊँट के नाम हैं। सूकर यह पाठान्तर भी है।

कुत्ते के नाम

कौलेयकः सारमेयो, मण्डलः श्वा पुरोगतिः ।
जिह्वापो ग्रामशार्दूलः, कुक्कुरो रात्रिजागरः ॥92॥

कौलेयेक , सारमेय , मण्डल, श्वन् , पुरोगति, जिह्वाप , ग्रामशार्दूल कुक्कर और रात्रिजागर (पु.) ये 9 कुत्ते के नाम हैं।

सुवर्ण (सोने) और चाँदी के नाम

हेम चाष्टापदं स्वर्णं, कनकार्जुन-काञ्चनम् ।
सुवर्णं हिरण्यं भर्म, जातरूपं च हाटकम् ॥93॥
तपनीयं कलधौतं, कार्तस्वरं शिलोद्भवम् ।

रूप्यं रजतं गुलिका, शुक्तिजं मौक्तिकं तथा ॥94॥

हेमन् (न.), अष्टापद (पु.न.), स्वर्ण कनक, अर्जुन, काञ्चन, सुवर्ण, हिरण्य, भर्मन्, जातरूप, हाटक, तपनीय, कालधौत, कार्तस्वर और शिलोद्भव (न.) ये 15 सुवर्ण के नाम हैं।

रजत, रूप्य (न.) और गुलिका (स्त्री.) ये तीन चांदी के नाम हैं शुक्तिज और मौक्तक (न.) ये 2 मोती के नाम हैं।

धन और कुबेर के नाम

वित्तं वस्तु वसु द्रव्यं, स्वार्थ रा द्रविणं धनम्।
कस्वरं तत्पतिं प्राहुः, कुबेरं चैकपिङ्गलम् ॥95॥
वैश्रवणं राजराज - मुत्तराशापतिं तथा।
अलकानिलयं श्रीदं, धनपर्यायदायदम् ॥96॥

वित्त, वस्तु, वसु द्रव्य (न.), स्व (पु.न.), अर्थ, रै, (पु.), द्रविण, धन और कस्वर (न.) ये दश धन के नाम हैं। (तत्पतिं) अर्थात् धन के नामों के अन्त में 'पतिवाचक' शब्द जोड़ देने से कुबेर के नाम बन जाते हैं। जैसे - धनपति और द्रविणवल्लभ (पु.) आदि।

तथा कुबेर, एकपिङ्गल, वैश्रवण, राजराज, उत्तराशापति, अलकानिलय और श्रीद (पु.) ये 7 कुबेर के नाम हैं। तथा (धन पर्याय दायदम्) अर्थात् धन के नामों के अन्त में 'दाय' वा 'द' शब्द जोड़ देने से भी कुबेर के नाम बन जाते हैं। जैसे - धनदाय और धनद (पु.) आदि।

देश और नगरी के नाम

राष्ट्रं जनपदो निर्गो, जनान्तो विषयः स्मृतः।
पूः पुरं पुरी नगरी, पत्तनं पुट-भेदनम् ॥97॥

राष्ट्र (न.), जनपद, निर्ग, जनान्त और विषय (पु.), ये 5 देश के नाम हैं। पुर् (स्त्री.) पुर (न.) पुरी, नगरी (स्त्री.), पत्तन और पुटभेदन (न.) ये 6 नगरी के नाम हैं।

मुख और कान के नाम

वक्त्रं लपनमास्यं च, वदनं मुखमाननम्।

श्रवणं श्रोत्रं श्रवश्चापि, कर्णं चैव श्रुतिं विदुः ॥98॥

वक्त्र ,लपन, आस्य,वदन, मुख और आनन् (न.) ये 6 मुख के नाम हैं। श्रवण , श्रोत्र, श्रवस् (न.), कर्ण (पु.) और श्रुति (स्त्री.) ये 6 कान के नाम (विदुः) जानना चाहिये।

नेत्र और कटाक्ष के नाम

दृगक्षि चक्षुर्नयनं, दृष्टि र्नेत्रं विलोचनम् ।
कटाक्षः केकरापांङ्ग, विभ्रमस्तस्य वैकृतम् ॥99॥

दृश् (स्त्री.), अक्षि, चक्षुष् , नयन (न.) दृष्टि (स्त्री.), नेत्र और विलोचन (न.) ये 7 नेत्र के नाम हैं। कटाक्ष (पु. न.) केकर (पु.), अपाङ्ग (पु. न.) और विभ्रम (पु.) ये 4 नेत्रविकार (आंख चलाने या आंख मारने) के नाम हैं।

बाहु हाथ कन्धा और अँगुलियों के नाम

दो र्दोषा च भुजो बाहुः, पाणि र्हस्त करस्तथा ।
प्राहुर्बाहुशिरोंऽसश्च, हस्तशाखा कराङ्गुलिः ॥100॥

दोष् (पु. न.) , दोषा (स्त्री.) भुज और बाहु (पु. स्त्री.) ये 4 बांह के नाम हैं। पाणि, हस्त और कर (पु.) ये 3 हाथ के नाम हैं। बाहुशिरस् और अंस (न.) ये 2 कन्धे के नाम हैं। हस्त के नामों के अन्त में 'शाखा' शब्द जोड़ देने से अंगुलियों के नाम बन जातें हैं। जैसे - हस्तशाखा और करशाखा (स्त्री.) आदि। तथा कराङ्गुलि (स्त्री.) यह भी अंगुली का नाम हैं।

नाममाला उत्तरार्ध

ओष्ठ और गले के नाम

दन्तवासोऽधरोऽप्योष्ठो , वर्णितो दशनच्छदः ।
शिरोधरो गलो ग्रीवा, कण्ठश्च धमनीधमः ॥101॥

दन्तवासस् , अधर, ओष्ठ और दशनच्छद (पु.) ये 4 ओष्ठ (ओंठ) के नाम हैं। शिरोधर, गल (पु.) , ग्रीवा (स्त्री.) कण्ठ (पु.) धमनी (स्त्री.) और धम (पु.) ये 6 गले के नाम हैं।

नासिका, छाती, कूख, पेट और स्तन के नाम

नासा घ्राणमुरो वक्षः, कुक्षिः स्याज्जठरोदरम् ।
स्तनः पयोधरः कुचो, वक्षोज इति वर्णितः ॥102॥

नासा (स्त्री.), और घ्राण (न.) ये 2 नासिका (नाक .) के नाम हैं। उरस् और वक्षस् (न.) ये दो छाती के नाम हैं। कुक्षि (पु.) यह कूख अर्थात् गर्भस्थली का नाम (स्यात्) हैं।

जठर और उदर (न.पु.) ये 2 पेट के नाम हैं। स्तन, पयोधर, कुच और वक्षोज, (पु.) ये 4 स्तन के नाम (वर्णितः) वर्णित किये गये हैं।

कमर, नितम्ब, घुटने और पैर के नाम

कटिः श्रोणि र्नितम्बश्च, जघनं जानु जहनु च ।
चलनं चरणं पादं, क्रमोऽङ्घ्रिश्च पदं विदुः ॥103॥

कटि, श्रोणि और श्रोणी (स्त्री.) ये 3 कमर के नाम हैं। नितम्ब (पु.) यह कमर के पिछले भाग का नाम हैं। जघन (न.) यह स्त्री की कमर के अगले भाग का नाम हैं।

जानु और जहनु (न.) ये जांघ या घुटने के नाम हैं , चलन (न.), चरण; पाद (पु.न.) , क्रम, अङ्घ्रि (पु.) और पद (न.) ये 6 पग (पैर) के नाम (विदुः) जानना चाहिये।

शिर, प्रेरित वस्तु और वाणी के नाम

शिरो मूर्धोत्तमाङ्गं कं, प्रारभ्यं प्रेरितेरितम् ।
वाग्वचो वचनं वाणी, भारती गीः सरस्वती ॥104॥

शिरस् (न.), मूर्द्धन् (पु.), उत्तमाङ्ग और क (न.) ये शिर के नाम हैं। प्रारभ्य, प्रेरित और ईरित (त्रि.) ये 3 प्रेरित वस्तु के नाम है। जैसे प्रेरित पुरुष, प्रेरिता स्त्री और प्रेरित वचन आदि। वाच् (स्त्री.), वचस्, वचन (न.) वाणी, भारती, गिर् और सरस्वती (स्त्री.) ये 7 वाणी के नाम हैं।

सिंह, हाथी, मेघ, घोड़ा, गाय के बच्चे की आवाज

सिंहद्विपघने गर्जो, हेषाऽश्वे बृंहितं गजे ।
स्फीत्कृतं धेनुकलभे, स्तनितं जलदे तथा ॥105॥

सिंह, हाथी और मेघ की आवाज को गर्ज (पु.) कहते हैं। घोड़े के हींसने को हेषा (स्त्री.), हाथी की बोली को बृंहित (न.) कहते हैं। गाय के बच्चे की बोली को स्फीत्कृत (न.) और मेघ की गर्जना को स्तनित (न.) भी कहते हैं।

रथ, मंत्र, योधा, शूकर, मैथुन आदि की आवाज

स्यन्दने चीत्कृतं मन्त्रे, भटे घृष्टौ च हुङ्कृतं।
सीकृतं मणितं कामे, खन्कृतं शृङ्खलायुधे ॥106॥

रथ के शब्द को चीत्कृत (न.) कहते हैं। मंत्र और योद्धा (मल्ल) सुअर की आवाज को हुङ्कृत (न.) कहते हैं। मैथुन के शब्द को सीत्कृत और मणित (न.) कहते हैं तथा शृङ्खला (शांकल) और आयुध (हथियार) के शब्द को खन्कृत (न.) कहते हैं।

वायु, क्रौंच, हंस की आवाज वा विछुओं के नाम

मञ्जीरकं तुलाकोटि, नूपुरं तत्र संसृतम् ।
झाङ्कृतं चाथ मारुति, क्रेङ्कृतं क्रौञ्चहंसयोः ।107।

मञ्जीरक (न.), तुलाकोटि (पु.) और नूपुर (न.) ये 3 विछुओं के नाम हैं। विछुओं (स्त्री का वह जेवर जो पैरों की अँगुलियों में पहिना जाता है) के शब्द को संसृत (न.) कहते हैं, वायु के शब्द को झाङ्कृत (न.) कहते हैं. और क्रौच पक्षी तथा हंस की बोली को क्रेङ्कृत (न.) कहते हैं।

जानी हुई वस्तु और मृत प्राणी के नाम

प्रतीतं संस्तुतं लब्धं, दृष्टं परिचितं स्मृतम् ।
संस्थितं दशमीस्थं च, परासुं च मृतं विदुः ॥108॥

प्रतीत, संस्तुत, लब्ध, इष्ट, परिचित और स्मृत (त्रि.) ये 6 स्मृत (जानी हुई) वस्तु के नाम हैं। संस्थित, दशमीस्थ, परासु और मृत (त्रि.) ये चार मरे हुए प्राणी के नाम (विदुः) जानना चाहिये।

क्रोध और हर्ष के नाम

खेदो द्वेषोऽप्यमर्षश्च, रुट् कोप-क्रोध-मन्यवः।
हर्षः प्रमोदः प्रमदो, मुत्तोषानन्द उत्सवः ॥109॥

खेद, द्वेष, अमर्ष (पु.), रुष् (स्त्री.), कोप, क्रौंच और मन्यु (पु.) ये 7 क्रोध के नाम हैं। हर्ष, प्रमोद, प्रमद (पु.), मुत् (स्त्री.), तोष, आनन्द और उत्सव (पु.) ये हर्ष के नाम हैं।

दया और बुद्धि के नाम

कृपाऽनुकम्पाऽनुक्रोशो, हन्तोक्तिः करुणा दया।
शेमुषी धिषणा प्रज्ञा, मनीषा धीस्तथाऽशयः ॥110॥

कृपा, अनुकम्पा (स्त्री.), अनुक्रोश(पु.), हन्तोक्ति, करुणा और दया (स्त्री.) ये 6 दया के नाम हैं।

शेमुषी, धिषणा, प्रज्ञा, मनीषा, धी (स्त्री.) और आशय (पु.) ये 6 बुद्धि के नाम हैं।

पण्डित के नाम

प्राज्ञ-मेधाविनौ विद्वा-नभिरूपो विचक्षणः।
पण्डितः सूरिराचार्यो, वाग्मी नैयायिकः स्मृतः ॥111॥

प्राज्ञ, मेधाविन्, विद्वस्, अभिरूप, विचक्षण, पण्डित, सूरि, आचार्य, वाग्मिन् और नैयायिक (पु.) ये 10 पण्डित (बुद्धिमान् या विद्वान्) के नाम (स्मृतः) माने गये हैं।

सभासद, सभा, राजा और राजयज्ञ के नाम

पारिषद्यो बुधः सभ्यः; सदस्यः सत्सभोचितः।
परिषत्सभा-स्थानपती, राजसूयो नृपक्रतुः ॥112॥

पारिषद्य, बुध, सभ्य, सदस्य, सदुचित और सभोचित (पु.) ये 6 सभासद के नाम हैं। परिषत्, सभा (स्त्री.) और आस्थान (न.) ये 3 सभा के नाम हैं।

सभा के नामों के अन्त में पतिवाचक शब्द जोड़ देने से राजा के नाम बन जाते हैं। जैसे - परिषत्पति, सभापति (पु.) आदि। राजसूय और नृपसूय (पु.) ये दो राजयज्ञ के नाम हैं।

.आसन, संसार और जिनेन्द्र के नाम

विष्टरं मल्लिकां पीठ–मासन्दी–मासनं विदुः ।
विष्टपं भुवनं लोको, जगत्तस्य पति र्जिनः ॥113॥

विष्टर (पु.), मल्लिका (स्त्री.), पीठ (न.), आसन्दी (स्त्री.) और आसन (न.) ये 5 आसन के नाम (विदुः) जानना चाहिये। विष्टप भुवन (न.) , लोक (पु.) और जगत् (न.) ये 4 संसार के नाम हैं। (तस्य पतिः) अर्थात् संसार के नामो के अन्त में 'पतिवाचक' शब्द जोड़ देने से (जिनः) जिनेन्द्र भगवान् के नाम बन जाते हैं। जैसे - विष्टपपति (पु.) आदि।

सर्वज्ञो वीतरागोऽर्हन्, केवली धर्मचक्र–भृत् ।
तीर्थङ्कर–स्तीर्थकर – स्तीर्थकृद्दिव्यवाक्पति ॥114॥

जिन, सर्वज्ञ, वीतराग, अर्हत् , केवलिन् धर्मचक्रभृत, तीर्थङ्कर, तीर्थकर, तीर्थकृत और दिव्यवाक्यपति (पु.) ये 10 जिनेन्द्र भगवान् के नाम हैं।

. आदिनाथ के नाम

वर्षीयान्वृषभो ज्यायान् , पुरुराद्यः प्रजापतिः ।
ऐक्ष्वाकुः काश्यपो ब्रह्मा, गौतमो नाभिजोऽग्रजः ॥115॥

वर्षीयस् , वृषभ, ज्यायस् , पुरु , आद्य, प्रजापति, ऐक्ष्वाकु, काश्यप, ब्रह्मन्, गौतम , नाभिज , और अग्रज (पु.) ये 12 आदिनाथ इस अवसर्पिणी के (प्रथम जैन तीर्थङ्कर) के नाम हैं।

महावीर स्वामी के नाम

सन्मति र्महति र्वीरो, महावीरोऽन्त्यकाश्यपः ।
नाथान्वयो वर्धमानो, यत्तीर्थमिह साम्प्रतम् ॥116॥

. सन्मति , महति , वीर, महावीर, अन्त्यकाश्यप, नाथान्वय और वर्धमान (पु.) ये चौवीसवे जैन तीर्थंकर महावीर या वर्धमान स्वामी के नाम हैं। (साम्प्रतम् इह यत् तीर्थम्) इस समय इस भरतक्षेत्र में इन्हीं का बताया धर्म चल रहा है ।

वस्त्र और दिगम्बर मुनि के नाम

चेलं निवसनं वास - श्चीरमम्बर-मंशुकम् ।
वस्त्राद्यन्तो दिगाद्यादिः, संज्ञितो वृषभेश्वरः ॥117॥

चेल, चैल, निवसन, वासस्, चीर, अम्बर और अंशुक (न.) ये 7 वस्त्र के नाम हैं। (दिगाद्यादिः) दिशा के नामों के अन्त में (वस्त्राद्यन्तो) 'चेल' आदि वस्त्र के नामों को जोड़ देने से वृषभेश्वर (पु.) अर्थात् दिगम्बर मुनि के नाम बन जाते हैं। जैसे - दिगम्बर आदि।

केशर, कस्तूरी और कपूर के नाम

कुंकुमं रुधिरं रक्तं , कस्तूरी मृगनाभिजा ।
कर्पूरं घनसारं च, हिमं सेवेत पुण्यवान् ॥118॥

कुङ्कुम, रुधिर अैर रक्त (न.) ये तीन केशर के नाम हैं। कस्तूरी और मृगनाभिजा (स्त्री.) ये २ कस्तूरी के नाम हैं। कर्पूर (पु. न.), घनसार और हिम (पु.) ये ३ कपूर के नाम हैं। इन सब वस्तुओं का (सेवेत्) भोग (पुण्यवान्) पुण्यात्मा करते हैं।

लेपन, गहने और माला के नाम

समालम्भोऽङ्गरागश्च, प्रसाधन-विलेपनम् ।
भूषणाभरणं रुच्यं, माल्यं माला गुणस्रजौ ॥119॥

समालम्भ, अङ्गराग (पु.), प्रसाधन और विलेपन (न.) ये ४ लेपन (लेप) के नाम हैं। भूषण, आभरण और रुच्य (न.) ये 3 गहने (जेवर) के नाम हैं।

माल्य (न.), माला (स्त्री.) , गुण (न.) और स्रज् (स्त्री.) ये चार माला के नाम हैं।

करधौनी (करडोरा) के नाम

मेखला रशना काञ्ची, हेमपर्याय - सूत्रकम् ।
श्रोणिबिम्बे कटीसूत्रं, मानसूत्रमिवाहितम् ॥120॥

मेखला, रशना, रसना, काञ्ची, काञ्चि (स्त्री.) और कटीसूत्र (न.) ये 6 करधौनी के नाम है। तथा (हेम पर्याय) अर्थात् सुवर्ण के नामों के अन्त में (सूत्रकम्) 'सूत्र' शब्द जोड़ देने से भी करधौनी के नाम बन जाते हैं। जैसे -

सुवर्णसूत्र और हेमसूत्र (न.) आदि।

(मान सूत्रम् इव आहितम्) वह करधौनी श्रोणि अर्थात् कमर में ऐसी शोभती है, मानों कमर के नापने का सूत्र (कपड़े का गज या फुट) ही हो।

मदिरा (शराब) के नाम

मदिरां मद्य-मैरयं , शीधुं कादम्बरी-मिराम् ।
प्रसन्नां वारुणीं हालां, मधुवारां सुरां विदुः ॥121॥

मदिरा (स्त्री.), मद्य, मैरेय (न.), शीधु (पु. न.), कादम्बरी, इरा, प्रसन्ना, वारुणी, हाला, मधुवारा और सुरा (स्त्री.) ये 11 मदिरा (शराब) के नाम(विदुः) जानना चाहिये।

मदरा, मद्यपी और जुआरी के नाम

शुण्डाऽऽसवस्तद्विधायी, शौण्डो गद्येत मद्यपः ।
सक्तोऽक्षद्यूतपानेषु, विचित्रा शब्दपद्धतिः ॥122॥

शुण्डा (स्त्री.) यह एक प्रकार के आसव (पु.) अर्थात् मदिरा का नाम है। (तद्विधायी) मदिरा बनाने वाले और पीने वाले को शौण्ड (पु.) (गद्येत्) कहा जाता हैं। तथा जो पांसों से खेलने में , जुवा खेलने में और मद्य पीने में आसक्त होता है उसे मद्यप (पु.) कहते हैं।

यद्यपि मद्य-पीने वाले को ही मद्यप कहना चाहिये, जुआरी को नहीं ; परन्तु 'शब्दानामनेकार्थाः' इस नियम के अनुसार शब्दों के प्रयोग की परिपाटी विचित्र ही है इसलिये जुआरी को भी मद्यप कहते है।

घृत, दूध और छांछ के नाम

सर्पि हैयङ्गवीनाज्यं, दुग्धं क्षीरामृतं पयः ।
उदश्विन्मथितं तक्रं, कालशेयं पिबेद् गुरुः ॥123॥

सर्पिष्, हैयङ्गवीन और आज्य (न.) ये 3 घृत (घी.) के नाम हैं। दुग्ध, क्षीर, अमृत और पयस् (न.) ये 4 दूध के नाम हैं। उद्श्वित् , मथित, तक्र और कालशेय (न.) ये 4 छांछ के नाम हैं इनका (गुरुः पिबेत्) सेवन धनवान् करते हैं।

अवस्था, जवान, जवानी और वृद्ध के नाम

प्रायो वयो दशानेहाः, पूर्णं यौवनकं विदुः ।
तारुण्यं यौवनं चान्त्यो, वार्द्धीनः स्थविरो मतः ॥124॥

प्रायस् , वयस् (न.) दशा (स्त्री.) और अनेहस् (पु.) ये 4 अवस्था के नाम (विदुः) जानना चाहिये। इनके (अन्त्ये) अन्त में 'पूर्ण' शब्द जोड़ देने से (यौवनकम्) यौवन (पु.) अर्थात् युवा पुरुष के नाम बन जाते हैं। जैसे - प्रायःपूर्ण, वयापूर्ण और दशापूर्ण (पु.) इत्यादि। तारूण्य और यौवन (पु.) ये 2 जवानी के नाम हैं। तथा अन्त्य, वार्द्धीन और स्थविर (पु.) ये 3 बुड्ढे (वृद्ध) व्यक्ति के नाम (मतः) माने गये हैं।

कुल (वंश या गोत्र) के नाम

वंशोऽन्वयोऽन्ववायः स्या-दाम्नायः सन्ततिः कुलम् ।
ओघो वर्गश्च सन्तानः, काव्यमेव कवेः स्थितिः ॥125॥

वंश, अन्वय, अन्ववाय, आम्नाय (पु.), सन्तति (स्त्री.), कुल (न.), ओघ, वर्ग और सन्तान (पु.) ये 9 कुल के नाम (स्यात्) हैं। कवि लोगों का कुल काव्य ही है।

हंस, ब्रह्मा, मयूर , हंसिनी और भेड़िया के नाम

हंसो मरालश्चक्राङ्गो, हंसवाहः सनातनः ।
मयूरो बर्हिणः केकी, शिखी प्रावृषिकस्तथा ॥126॥
नीलकण्ठः कलापी च, शिखण्डी तत्पति र्गुहः ।
वरटा वारली हंसी, कोक ईहामृगो वृकः ॥127॥

हंस, मराल और चक्राङ्ग (पु.) ये 3 हंस के नाम है। हंस के नामों के अन्त में 'वाह' शब्द जोड़ देने से सनातन अर्थात् ब्रह्मा के नाम बन जाते हैं। जैसे - हंसवाह (पु.) आदि।

मयूर , बर्हिण, केकिन्, शिखिन् , प्रावृषिक, नीलकण्ठ, कलापिन् और शिखण्डिन् (पु.) ये 8 मयूर के नाम हैं।

(तत्पतिः) अर्थात् मयूर के नामों के अन्त में 'पतिवाचक' शब्द जोड़ देने से गुह अर्थात् कार्तिकेय के नाम बन जाते हैं । जैसे - मयूरपति (पु.) आदि। वरटा, बारली और हंसी (स्त्री.) ये 3 हंसिनी के नाम है। कोक ईहामृग और वृक (पु.) ये भेड़िये के नाम हैं।

हरिण, चन्द्रमा, गरुड़ और सर्प के नाम

हरिणो मृगः पृषत – स्तदङ्कः शर्वरीकरः ।
पन्नगोऽहि र्विषधरो, लेलिहानो भुजङ्गमः ॥128॥
नागोरगौ फणी सर्पस्‌ तद्वैरी विनतात्मजः ।
सुपर्णो गारुड़स्ताक्ष्र्यो, गरुत्मान् शकुनीश्वरः ॥129॥
इन्द्रजिन्मन्त्र पूतात्मा, वैनतेयो विषक्षयः ।

हरिण, मृग और पृषत (पु.) ये 3 हरिण के नाम। (तदङ्कः) अर्थात् हरिण के नामों के अन्त में अंङ्क' शब्द और (शर्वरीकरः) रात्रि के नामों के अन्त में कर शब्द जोड़ देने से चन्द्रमा के नाम बन जाते हैं। जैसे हरिणाङ्क और श्यामाकर (पु.) आदि।

पन्नग, अहि, विषधर, लेलिहान, भुजङ्गम , नाग, उरग, फणिन् और सर्प (पु.) ये 9 सर्प के नाम हैं। (तद्वैरी) अर्थात् सर्प के नामों के अन्त में 'बैरिन्' वाचक शब्द जोड़ देने से विनतात्मज (पु.) अर्थात् गरुड़ के नाम बन जाते हैं। जैसे पन्नगवैरिन् (पु.) आदि तथा सुपर्ण , गरुड, ताक्ष्र्य, गरुत्मत् , शकुनीश्वर , इन्द्रजित् , मन्त्रपूतात्मन्, वैनतेय और विषक्षय (पु.) ये 9 भी गरुड के नाम हैं।

इन्द्रिय के नाम

खमिन्द्रियं हृषीकं च, श्रोतोऽक्षं करणं विदुः ॥130॥

ख, इन्द्रिय, हृषीक , श्रोतस् अक्ष और करण (न.) ये 6 इन्द्रिय (स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण) के नाम (विदुः) जानना चाहिये।

पुण्य पाप और जिनेन्द्र के नाम

पुण्यं भाग्यं च सुकृतं, भागधेयं च सत्कृतम् ।
अघमंहश्च दुरितं, पाप्मा पापं च किल्विषम् ॥131॥
वृजिनं कलिलमेनो, दुष्कृतं तज्जयी जिनः ।

पुण्य, भाग्य, सुकृत, भागधेय और सत्कृत (न.) ये 5 पुण्य के नाम हैं। अघ, अंहस् , दुरित (न.) पाप्मन् (पु.) पाप, किल्विष, वृजिन , कलिल, एनस् और दुष्कृत (न.) ये 10 पाप के नाम हैं। (तज्जयी) अर्थात् पाप के जीतने वाले को (जिनः) जिन कहते हैं।

मकान के नाम

सदनं सद्म भवनं, धिष्ण्यं वेश्माथ मन्दिरम् ॥132॥
गेहं निकेतनागारं निशान्तं निर्वृतं गृहम् ।
वासत्यवसथावासं, स्थानं धामास्पदं पदम् ॥133॥
निकायं निलयं वस्त्यं, शरणं विदुरालयम् ।

सदन , सद्मन् , भवन , धिष्ण्य, वेश्मन् , मन्दिर , गेह् , निकेतन , आगार, निशान्त , निर्वृत (न.), गृह (न. पु.), वसति , अवसथ, आवास (पु.), स्थान् , धामन् , आस्पद , पद (न.) , निकाय, निलय, (पु.) वस्त्य और शरण (न.) ये आलय (मकान) के नाम (विदुः) जानना चाहिये ।

खाई और बधान के नाम

खेयं खातं च परिखा, वप्रं स्याद् धूलिकुट्टिमम् ॥134॥

खेय , खात (न.) और परिखा (स्त्री.) ये ३ खाई के नाम (स्यात्) हैं। वप्र और धूलिकुट्टिम (न.) ये २ खाई के ऊपर रहने वाले मिट्टी के कूट अर्थात् बधान के नाम हैं।

कोट, गोपुर, गली, महल, खूटी और टण्डों के नाम

प्राकारः परिधिः सालः, प्रतोली गोपुराकृतिः ।
प्रासादसौधहर्म्याणि, निर्व्यूहो मत्तवारणम् ॥135॥

प्राकार (पु.) , परिधि (स्त्री.) और साल (पु.) ये 3 कोट या वाड़ के नाम हैं। गोपुर - (नगर के दरवाजे का आकार) जिसमें से लोग आते जाते हैं उसको प्रतोली कहते हैं) प्रतोली गली का भी नाम है। प्रासाद (पु.) , सौध (पु.न.) और हर्म्य (न.) ये 3 बड़े महल के या क्रमशः देवालय, राजभवन और धनिगृह के नाम हैं। निर्व्यूह (पु.) खूँटी का नाम हैं। मत्तवारण (न.) छज्जे के नीचे के टण्डे या छपरी का नाम है।

झरोखे, बराबर और उपमा के नाम

वातायन मनालम्ब मालम्व्यं सुखासनम् ।
समः सवर्णः सजातिः सदृक्षः सदृशः सदृक् ॥136॥
तुल्यः सधर्मः सरूप–स्तुला कक्षोपमाभिधा ।

वातायन, अनालम्ब, आलम्व्य और सुखासन (न.) ये 4 झरोखे के नाम हैं। सम, सवर्ण , सजाति , सदृक्ष, सदृश, सदृक् तुल्य सधर्म और सरूप (त्रि.) ये 9 समान अर्थात् बराबर के नाम है । तुला और कक्षा (स्त्री.) ये 2 उपमा के (अविधा) नाम हैं।

उपमान के नाम

विन्मन्यो विद्यमानश्च, गुरुस्थानोऽम्बुजाननः ॥137॥
सिंहादीति च पर्याय-मुपमानेषु योजयेत् ।

विन्मन्य, विद्यमान, गुरुस्थान, अम्बुजानन तथा सिंह (पु.) इत्यादि शब्द उपमान के द्योतक हैं। अर्थात् ये (पर्यायम्) शब्द उपमानों में (योजयेत्) जोड़ना चाहिये।

छल और उत्प्रेक्षा के नाम

व्यपदेशो निभं व्याजः ; पदं व्यक्तिकरं छलम् ॥138॥
छद्म वृत्तान्तमुत्प्रेक्षा, शब्दमन्यं च निर्णयेत् ।

व्यपदेश, निभ, ब्याज (पु. न.), पद (न.), व्यक्तिकर (पु. न.), छल और छद्म (न.) ये छल के नाम हैं। वृत्तान्त (न.) और उत्प्रेक्षा (स्त्री.) ये 2 वार्ता के नाम हैं। (अन्यं शब्दं निर्णयेत्) इसी तरह और भी शब्दों के विषय में निर्णय करना चाहिये।

समूह (समुदाय) के नाम

व्रातः पूगः समाजश्च, समूहः सन्तति व्रंजः ॥139॥
व्यूहो निकायो निकरो, निकुरम्बं कदम्बकम् ।
ओघः समुदयः सङ्घः, सङ्घातः समितिस्ततिः ॥140॥
निचयः प्रकरः पङ्क्तिः, समजस्तु पशुव्रजः ।

व्रात, पूग, समाज, समूह, सन्तति, व्रज, व्यूह , निकाय, निकर (पु.) निकुरम्ब, कदम्बक (न.) ओघ, समुदय, सङ्घ, सङ्घात, (पु.), समिति, तति (स्त्री.) निचय, प्रकर, (पु.) और पङ्क्ति (स्त्री.) ये 20 समूह के नाम हैं। समज (पु.) यह - पशुओं के समुदाय (समूह) का नाम है।

समीप (पास) के नाम

समीपाभ्याशमासन्न – मभ्यर्णं सन्निधिं विदुः ॥141॥
अविदूरं च निकट मवलग्नमनन्तरम् ।

समीप, अभ्याश, आसन्न, अभ्यर्ण , (न.) सन्निधि, (स्त्री.), अविदूर , निकट, अवलग्न और अनन्तर (न.) ये 9 पास के नाम (विदुः) जानना चाहिये।

हल और बलभद्र के नाम

जित्या हलि र्हलं सीरं, लाङ्गलं तत्करो वलः ॥142॥
रेवती – दयितो नील–वसनः केशवाग्रज : ।

जित्या, हलि (स्त्री.), हल, सीर और लाङ्गल (न.) ये 5 हल के नाम हैं। (तत्करः) अर्थात् हल के नामों के अन्त में हस्तवाचक 'कर' आदि शब्द जोड़ देने से बलभद्र के नाम बन जाते हैं। जैसे - जित्याकर और सीरपाणि (पु.) आदि। तथा बल, रेवतीदयित, नीलवसन और केशवाग्रज (पु.) ये 4 भी वलभद्र के नाम हैं। नोट : नीलशब्द के अन्त में वस्त्र के नामों को जोड़ने से भी नीलवसन आदि बलभद्र के नाम होतें हैं।

अर्जुन और भीम के नाम

अर्जुनः फल्गुनो जिष्णुः, श्वेतवाजी कपिध्वजः ॥143॥
गाण्डीवी कार्मुकी सव्य–साची मध्यमपाण्डवः ।
वृषसेनः सुनिर्मोको, दैत्यारिः शक्रनन्दनः ॥144॥
कर्णशूली किरीटी च, शब्दभेदी धनञ्जयः ।
कुरुकीचकयोः शत्रु – र्वायुपुत्रो वृकोदरः ॥145॥

अर्जुन, फल्गुन, जिष्णु, श्वेतवाजिन्, कपिध्वज, गाण्डीविन् , कार्मुकिन्, सव्यसाचिन् , मध्यमपाण्डव , वृषसेन, सुनिर्मोक,दैत्यारि, शक्रनन्दन, कर्णशूलिन् किरीटिन् शब्दभेदिन् और धनञ्जय (पु.) ये 10 अर्जुन के नाम है।

कुरुशत्रु, कीचकशत्रु, वायुपुत्र और वृकोदर (पु.) ये 4 भीम (द्वितीय-पाण्डव) के नाम है।

काल (मौत) के नाम

समवर्ती यमः कालः, कृतान्तो मृत्युरन्तकः ।

धर्मराजः पितृपतिः, सूरसूनुः परेतराट् ॥146॥

यमुनो यमुनाभ्राता, श्राद्धदेवश्च दण्डभृत् ।

समवर्तिन् , यम, काल, कृतान्त, मृत्यु, अन्तक, धर्मराज, पितृपति, सूरसूनु , परेतराज् , यमुन , यमुनाभ्रातृ, श्राद्धदेव और दण्डभृत् (पु.) ये 14 काल (मौत) के नाम हैं।

युधिष्ठिर (प्रथम पाण्डव) के नाम

तदात्मजोऽजातरिपुः, कौन्तेयो भरतान्वयः ॥147॥

कौरव्यो राजलक्ष्मा च , सोमवंश्यो युधिष्ठिरः ।

यमात्मज, अजातरिपु, कौन्तेय, भरतान्वय, कौरव्य, राज-लक्ष्मन् , सौमवंश्य और युधिष्ठिर (पु.) ये 8 युधिष्ठिर अर्थात् प्रथम पाण्डव के नाम है।

काले रंग के नाम

कृष्णं नीलासितं कालं, धूमं धूम्रमलिप्रभम् ॥148॥

कृष्ण, नील, असित और काल (त्रि.) ये 4 काले रंग के नाम हैं। धूम , धूम्र और अलिप्रभ (त्रि.)ये 3 विशेष काले रङ्ग के नाम हैं।

अन्धकार और लाल रंग के नाम

तमोऽन्धकारं तिमिरं , ध्वान्तं सन्तमसं तमम् ।

लोहितं रक्तमाताम्रं, पाटलं विशदारुणम् ॥149॥

तमस्; अन्धकार, तिमिर, ध्वान्त, सन्तमस् तमस् और तम (न.) ये 6 अन्धकार के नाम हैं। लोहित , रक्त और आताम्र (त्रि.) ये 3 लाल रंग के नाम हैं। श्वेत मिश्रित लाल रंग को पाटल (त्रि.) कहते हैं।

सफेद रंग के नाम

श्वेतोऽर्जुनः शुचिः श्येतो, वलक्षं सितपाण्डुरम् ।

शुक्लावदातं धवलं , पाण्डुं शुभ्रं शशिप्रभम् ॥150॥

श्वेत , अर्जुन, शुचि, श्येत, वलक्ष , सित, पाण्डुर, शुक्ल, अवदात, धवल, पाण्डु, शुभ्र और शशिप्रभ (त्रि.) ये 14 सफेद रंग के नाम है।

नीले, हरे, रक्तवर्ण वा पंचवर्ण के नाम

पीतं गौरं हरिद्राभं, पालाशं हरितं हरित् ।

हरिणी लोहिनी शोणी, गौरी श्येनी पिशङ्ग्यपि ॥151॥

सारङ्गी शबली काली, कल्माषी नीलपिङ्गली ।

पीत, गौर और हरिद्राभ (त्रि.) ये 3 पीले के नाम हैं। पालाश, हरित और हरित् (त्रि.) ये 3 हरे के नाम हैं। हरिणी, लोहिनी, शोणी, गौरी, श्येनी और पिशङ्गी (स्त्री.) ये 6 रक्तवर्ण के नाम हैं। सारङ्गी, शवली, काली, कल्माषी और नीलपिङ्गली (स्त्री.) ये 5 पञ्चवर्ण के नाम हैं।

पराग और धूलि के नाम

परागं मधु किञ्जल्कं, मकरन्दं च कौसुमम् ॥152॥

उपचाराद्रजः पांशुं , रेणुं धूलिं च योजयेत् ।

पराग, मधु (न.) , किञ्जल्क, मकरन्द (पु.) और कौसुम (न.) ये 5 पराग के नाम हैं। रजस् (न.), पांशु, रेणु (पु.), धूलि और धूली (स्त्री.) ये 5 धूलि के नाम हैं। लोकाचार से पुष्प के नामों के अन्त में इन धूलि के नामों को (योजयेत्) जोड़ देने से भी पराग के नाम बन जाते हैं। जैसे - पुष्परजस् (न.) और प्रसूनरेणु (पु.) इत्यादि।

कलङ्क के नाम

कलङ्कावद्यमलिनं , किञ्जल्कं लक्ष्म लाञ्छनम् ॥153॥

निर्वाधमधमं पङ्क मलीमसमपि त्यजेत् ।

कलङ्क(पु.), अवद्य, मलिन (न.) किञ्जल्क (पु.) , लक्ष्मन् , लाञ्छन (न.), निर्बाध, अधम, पङ्क और मलीमस (पु. न.) ये 10 कलङ्क के नाम हैं (त्यजेत्) इसे छोड़ देना चाहिये।

कीर्ति (यश) और साहस के नाम

जनोदाहरणं कीर्ति, साधुवादं यशो विदुः ॥154॥

वर्णं गुणावलिं ख्याति-मवधानं तु साहसम् ।

जनोदाहरण (न.), कीर्ति (स्त्री.) साधुवाद (पु.), यशस् , वर्ण (न.), गुणावलि और ख्याति (स्त्री.) ये 7 कीर्ति के नाम (विदुः) जानना चाहिये। अवधान और साहस (न.) ये दो साहस के नाम हैं।

आज्ञा , बात और कठोर के नाम

प्रेष्यादेशनिदेशाऽऽज्ञा–नियोगाः शासनं तथा ॥155॥

सन्देशः प्रिययो वार्ता, प्रवृत्तिः किम्वदन्त्यपि ।

कठोरं कठिनं स्तब्धं, कर्कशं परुषं दृढम् ॥156॥

प्रेष्य, आदेश , निदेश, (पु.) आज्ञा (स्त्री.), नियोग (पु.) और शासन (न.) ये 6 आज्ञा के नाम हैं। प्यारों के मौखिक समाचार को सन्देश (पु.) कहते हैं। वार्ता , प्रवृत्ति और किम्वदन्ती (स्त्री.) ये 3 नवीन बात के नाम हैं। कठोर, कठिन, स्तब्ध, कर्कश, परुष और दृढ़ (त्रि.) ये 6 कठोर (कड़े) के नाम हैं।

व्यर्थ, कोमल और नवीन के नाम

अश्लीलं काहलं फल्गु, कोमलं मृदु पेशलम् ।

प्रत्यग्रं साम्प्रतं नव्यं नवं नूतनमग्रिमम् ॥157॥

अश्लील, काहल और फल्गु (न.) ये 3 व्यर्थ के नाम हैं। कोमल, मृदु और पेशल (त्रि.) ये तीन कोमल के नाम हैं। प्रत्यग्र, साम्प्रत, नव्य नव , नूतन और अग्रिम (त्रि.) ये 6 नवीन अर्थात् नई वस्तु के नाम हैं।

पुराने , आमंत्रण और संशय के नाम

पुराणं जरठं जीर्णं, प्राक्तनं सुचिरन्तनम् ।

भो रे हंहो हे चामन्त्रे, किञ्चत्किञ्चन संशये ॥158॥

पुराण, जरठ, जीर्ण, प्राक्तन और सुचिरन्तन (त्रि.) ये 5 पुराने के नाम हैं। भो , रे , अरे , हंहो और हे (अ.) ये 5 आमंत्रण (सम्बोधन) वाचक है। किञ्चित् और किञ्चन (अ.) ये दो संशय के नाम है।

तत्काल, निषेध और ऊँचे के नाम

द्राक्क्षणेऽह्नाय सपदि, निषेधे मा न खल्वलम् ।

उच्चैरुच्चावचं तुङ्ग मुच्चमुन्नतमुच्छ्रितम् ॥159॥

द्राक्क्षण, अह्नाय और सपदि (अ.) ये 3 तत्काल के नाम हैं। मा, न, खलु और अलम् (अ.) ये 4 निषेध करने में आते हैं। उच्चैस् (अ.) उच्चावच, तुङ्ग, उच्च, उन्नत और उच्छ्रित (त्रि.) ये 6 ऊँचे के नाम हैं।

नीचे और साथ के नाम

नीचं न्यागानतं कुब्जं , नीचै र्ह्स्वं नयेत्परम् ।
अमा सह समं साकं , सार्द्धं सत्रा सजूः समाः ॥160॥

नीच, न्यच् , आनत , कुब्ज , (त्रि.), नीचैस् (अ.) और ह्रस्व (त्रि.)ये 6 नीचे के नाम (नयेत्) जानना चाहिये । अमा, सह, सम, साक, सार्द्ध, सत्रा (अ.) सजुष् (स्त्री.) और समा (स्त्री.अ.) ये 7 'साथ' के नाम हैं।

हमेशा और विरह के नाम

सर्वदा सततं नित्यं , शश्वदात्यन्तिकं सदा ।
वियोगं मदनावस्थां, विरहं मल्लकं विदुः ॥161॥

सर्वदा, सततम् , नित्यम्, शश्वत् , आत्यन्तिकम् और सदा (अ.) ये 6 हमेशा के नाम हैं। वियोग , (पु.) मदनावस्था (स्त्री.) विरह और मल्लक (पु.) ये 4 काम के विरह के नाम (विदुः) जानना चाहिये ।

राग और सहित के नाम

प्रेमाभिलाषमालभ्यं, रागं स्नेहमतः परम् ।
संहितं सहितं युक्तं, सम्पृक्तं सम्भृतं युतम् ॥162॥
संस्कृतं समवेतं च, प्राहुरन्वीतमन्वितम् ।

प्रेमन् अभिलाष (पु.), आलभ्य (न.), राग और स्नेह (पु.) ये 5 राग के नाम हैं। सहित, संहित, युक्त, सम्पृक्त, सम्भृत, युत, संस्कृत, सम्वेत, अन्वीत और अन्वित (त्रि.) ये 10 सहित (युक्त) के नाम (प्राहुः) कहे गये हैं।

मार्ग, गंगा और गायों के घेरा के नाम

वर्त्माध्वा सरणिः पन्थाः , मार्गः प्रचरसञ्चरौ ।163।
त्रिमार्गनामगा गङ्गा, घोषो गोमण्डलं ब्रजः ।

वर्त्मन् (न.), अध्वन् (पु.), सरणि , शरणि (स्त्री.) पथिन्, मार्ग, प्रचर और सञ्चर (पु.) ये 7 मार्ग के नाम हैं। मार्ग के नामों के आदि में 'त्रि' शब्द और अन्त में 'गा' शब्द जोड़ देने से गङ्गा के नाम बन जाते हैं। जैसे - त्रिमार्गगा और त्रिपथगा (स्त्री.) इत्यादि। घोष (पु.), गोमण्डल (न.) और ब्रज (पु.) ये 3 गायों के घेरे के नाम हैं।

धान, सींग वाले पशु और बछड़े के नाम

षाष्ठिकः कलमः शालिः, ब्रीहीः स्तम्बकरिस्तथा ॥164॥
शृङ्गी दृतिहरि र्नाथ, हरिस्तिर्यक्च शृङ्गिणः ।
वत्सः शकृत्करि र्जातः, षोडः षड्दशनः स्मृतः ॥165॥
गौश्चतुष्पात् पशुस्तत्र, महिषी नाम देहिका ।

षाष्ठिक, कलम, शालि, सालि, ब्रीहि और स्तम्बकरि (पु.) ये 6 धान के नाम हैं। शृङ्गिन् , दृतिहरि, नाथहरि और तिर्यच् (पु.) ये तीन सींग वाले पशु के नाम है।

वत्स, शकृत्करि और जात (पु.) ये 3 बछड़े के नाम है। षोड और षड्दशन (पु.) ये 2 छह दांत वाले बछड़े के नाम है। गो, चतुष्पात् , पशु और तिर्यञ्च ये 4 पशु के नाम है। महिषी और देहिका (स्त्री.) ये दो भैंस के नाम हैं।

चतुर और धूर्त के नाम

कृती नदीष्णो निष्णातः, कुशलो निपुणः पटुः ॥166॥
क्षुण्णः प्रवीणः प्रगल्भः, कोविदश्च विशारदः ।
विदग्धश्चतुरो धूर्तश्चाटुकृत्कितवः शठः ॥167॥

कृतिन् , नदीष्ण, निष्णात, कुशल, निपुण, पटु, क्षुण्ण, प्रवीण, प्रगल्भ, कोविद, विशारद, विदग्ध और चतुर (त्रि.) ये 13 चतुर या कुशल के नाम हैं। धूर्त, चाटुकृत् , कितव और शठ (पु.) ये 4 धूर्त के नाम है।

धूर्त के नाम और मूर्ख के नाम

क्वापि नागरिको ज्ञेयो, गोत्रं संज्ञाङ्क नाम तत् ।
मुग्धो मूढो जडो नेडो , मूको मूर्खश्च कद्वदः ॥168॥
स देवानांप्रियोऽप्राज्ञो, मन्दोधीनाम वर्जितः ।

कहीं-कहीं पर नागरिक (पु.) को भी धूर्त कहते हैं। गोत्र (न.), संज्ञा (स्त्रीं), अङ्क और नाम (न.) ये 4 नाम के नाम है। तथा मुग्ध, मूढ़ , जड़, नेड़, मूक , मूर्ख , कद्वद, देवानांप्रिय, अप्राज्ञ और मन्द (पु.) ये 10 मूर्ख के नाम हैं। तथा बुद्धि के नामो के अन्त में (वर्जित) रहित वाचक शब्द जोड़ देने से भी मूर्ख के नाम वन जाते हैं। जैसे - धीवर्जित, बुद्धिविहीन (पु.) आदि।

अहंकारी और नीच के नाम

शौण्डीरो गर्वितः स्तब्धो, मानी चाहंयुरुद्धतः ॥169॥

उद्ग्रीव उद्धरो दृप्तो, नीचश्च पिशुनोऽधमः ।

शौण्डीर, गर्वित, स्तब्ध मानिन् , अहंयु , उद्धत, उद्ग्रीव, उद्धर और दृप्त (त्रि.) ये 9 अहंकारी (घमण्डी) के नाम हैं। नीच, पिशुन और अधम (त्रि.) ये 3 नीच के नाम है।

चोर के नाम

चौरैकागारिकस्तेनास् तस्करः प्रतिरोधकः ॥170॥

निशाचरो गूढचरो, हेरिकः पारिपान्थिकः ।

चौर, एकागारिक, स्तेन, तस्कर, प्रतिरोधक, निशाचर, गूढ़चर, हेरिक और पारिपान्थिक (पु.) ये 9 चौर के नाम हैं।

पत्थर, लोहा और सुवर्ण के नाम

प्रस्तरोपल–पाषाण–दृषद्धातुः शिला घनः ॥171॥

तत्र जातमयो लोहं, शतकुम्भं नयेत्परम् ।

प्रस्तर, उपल, पाषाण (पु.), दृपत् (स्त्री.), धातु (पु.), शिला, शिली (स्त्री.) और घन (पु.) ये 7 पत्थर के नाम है। पत्थर के नामों के अन्त में 'जातिवाचक' शब्द (नयेत्) जोड़ने से लोहे के नाम बन जाते हैं। जैसे - उपलजात (पु.) आदि। तथा अयस् (न.) और लोह (पु. न.) ये भी लोहे नाम हैं। उपल आदि पत्थर के नामों के अन्त में 'जातिवाचक' शब्द (नयेत्) जोड़ देने से सुवर्ण और शिलाजीत के नाम बन जाते हैं। जैसे - उपलजात आदि।

बहुत, स्पष्ट और आश्चर्य के नाम

साधीयोऽत्यर्थमत्यन्तं, नितान्तं सुष्ठु वै भृशम् ॥172॥

स्फुटं साधु खलु स्पष्टं, विशदं पुष्कलामलम् ।

चित्राश्चर्याद्भुतं चोद्यं, विस्मयः कौतुकोऽप्यहो ॥173॥

साधीयस् (न.), अत्यर्थम् , अत्यन्तम् , नितान्तम् , सुष्ठु और भृशम् (अ.) ये 6 बहुत के नाम हैं। स्फुट,साधु , (न.), खलु (अ.), स्पष्ट, विशद पुष्कल और अमल (न.) ये 7 स्पष्ट के नाम हैं। चित्रम् आश्चर्यम् , अद्भुतम् ,

चोद्यम् (न.), विस्मय (पु.), कौतुक, कुतुक (पु. न.), अहो (अ.) ये आश्चर्य के नाम हैं।

उत्साह, दुर्बल, धैर्य, पुराने और एकान्त के नाम

अभियोगोद्यमोद्योगा, उत्साहो विक्रमो मतः ।
क्षामं क्षान्तं कृशं क्षीणं, हीनं जीर्णं पुरातनम् ॥174॥
शीर्णावसानं दूनं च, धैर्यं शौर्यं च पौरुषम् ।
रहोऽनुरहसोपांशु, रहस्यं च भिनत्ति कः ॥175॥

अभियोग, उद्यम, उद्योग, उत्साह और विक्रम (पु.) ये 5 उत्साह के नाम (मतः) माने गये है। क्षाम , क्षान्त, कृश, क्षीण, हीन, जीर्ण, पुरातन, शीर्ण, अवसान और दून (त्रि.) ये 10 दुर्बल और पुराने के नाम हैं।

धैर्य , शौर्य और पौरुष (न.) ये 3 धैर्य (धीरज) के नाम है। रहस् (अ. न.), अनुरहस् (न.), उपांशु (अ.) और रहस्य (त्रि.) ये 4 एकान्त या गुप्त के नाम हैं। (रहस्यं कः भिनत्ति) किसी की गुप्त बात का प्रकट करना ठीक नहीं।

कंजूस के नाम

कीनाशः कृपणो लुब्धो, गृध्नु दीनोऽभिलाषुकः ।

कीनाश, कृपण, लुब्ध, गृध्नु, दीन और अभिलाषुक ये ६ (पु.) कंजूस के नाम हैं।

शीघ्र के नाम

क्षिप्राशुमङ्क्ष्वरं शीघ्रं, सहसा झटिति द्रुतम् ॥176॥
तूर्णं जवः स्पदो रंहो, रयो वेगस्तरो लघु ।

क्षिप्र (म.), आशु, मङ्क्षु, अर, शीघ्र (न.) , सहसा, झटिति (अ.), द्रुत, तूर्ण (न.), जव, स्पद (पु.), रंहस् (न.), रय, वेग (पु.), तरस् , लघु (न.) ये शीघ्र के नाम हैं।

पाशबद्धशत्रु के नाम

पाशनीतः सितो बद्धः, सन्धानीतो नियन्त्रितः ॥177॥
नियमितः शृङ्खलितः, पिनद्धः, पाशितो रिपुः ।

पाशनीत, सित, बद्ध, सन्धानीत, नियन्त्रित, नियमित, शृङ्खलित, पिनद्ध और पाशित (पु.) ये पाशबद्ध शत्रु के नाम है।

सुन्दर के नाम

कान्तं कमनं कम्रं च, कमनीयं मनोहरम् ।।178।।
अभिरामं रमणीयं, रम्यं सौम्यं च सुन्दरम् ।
चारु श्लक्ष्णं च रुचिरं, प्रशस्तं हृद्य–बन्धुरम् ।।179।।
दर्शनीयं मनोज्ञं च, चित्तपर्याय – हारि च ।

कान्त, कमन, कम्र, कमनीय, मनोहर, अभिराम, रमणीय, रम्य, सौम्य, सुन्दर, चारु, श्लक्ष्ण, रुचिर, प्रशस्त, हृद्य, बन्धुर, दर्शनीय और मनोज्ञ, (त्रि.) ये 18 सुन्दर के नाम हैं।

(चित्त पर्याय हारि) अर्थात् चित्त (मन) के नामों के अन्त में 'हारिन्' शब्द जोड़ देने से सुन्दर के नाम हो जाते हैं। जैसे चित्तहारिन् (त्रि.) आदि।

बर्फ और चन्द्रमा के नाम

अवश्यायं तुषारं च, प्रालेयं तुहिनं हिमम् ।।180।।
नीहारं तत्करं विद्धि, मृगाङ्कं रोहिणीपतिम् ।

अवश्याय, तुषार (पु.), प्रालेय तुहिन, हिम (न.) और नीहार (पु.) ये 6 बर्फ के नाम हैं। (तत्करं) अर्थात् बर्फ के नामों के अन्त मैं 'कर' शब्द जोड़ देने से (राहिणीपति) अर्थात् चन्द्रमा के नाम (विद्धि) जानना।
जैसे - अवश्यायकर (पु.) आदि। तथा मृगाङ्क और रोहिणीपति (पु.) ये 2 भी चन्द्रमा के नाम हैं।

गुप्तचर, इन्द्र और सत्य के नाम

चारोऽपसर्पः प्रणिधि र्निगूढपुरुषश्चरः ।।181।।
तद्वानुक्तः सहस्राक्षः, सत्यार्थे ऋतसूनृते ।

चार, अपसर्प, प्रणिधि, निगूढ़पुरुष और चर (पु.) ये 5 गुप्तचर के नाम हैं। गुप्तचर के नामों के अन्त में 'मतुप्' प्रत्यय जोड़ देने से सहस्राक्ष (पु.)। आदि इन्द्र के नाम बन जाते हैं। जैसे - चारवत् (पु.) आदि। ऋत और सूनृत (न.) ये 2 सत्य के नाम हैं।

रम्भा, कदली और मोचा आदि शब्दों के अर्थ

अत्यन्ताय चिरायेति, प्राह्णेऽकस्माद् बलादिति ।।182।।
प्रायेणेति कृते चेति, विभक्ति प्रतिरूपकम् ।

रम्भास्त्री कदली चिह्नं, मोचा सारतरुश्च सा ।।183।।

अत्यन्ताय (अ.) यह बहुत का नाम है। चिराय (अ.) यह बहुतकाल का नाम है। प्राह्णे(अ.) यह प्रातःकाल का नाम है। अकस्मात् (अ.) यह अचानक का नाम है। बलाद् (अ.) यह जबर्दस्ती का नाम है।

प्रायेण - यह बहुधा अर्थात् प्रायः का नाम है। कृते यह के लिये का नाम है। ये सातों विभक्तिप्रतिरूपक (विभक्ति के समान मालूम होने वाले) अव्यय हैं।

रम्भा (स्त्री) - यह स्त्री और कदली अर्थात् केले के वृक्ष का नाम है। कदली (स्त्री.) - यह चिह्न अर्थात् ध्वजा और मोचा अर्थात् सेमर और केले के वृक्ष का नाम है तथा मोचा (स्त्री.) - यह सारतरु अर्थात् सेमर के वृक्ष और कदली केले के वृक्ष का नाम है।

भावार्थ - रम्भा, कदली और मोचा ये 3 केले के वृक्ष के नाम हैं। रम्भा - यह स्त्री, वेश्या और देवाङ्गना का भी नाम है। कदली - यह ध्वजा और सेमर के वृक्ष का भी नाम है। चिह्न - यह ध्वजा का नाम है। मोचा - यह सेमर के वृक्ष का भी नाम है। सारतरु - यह भी सेमर के वृक्ष का नाम है।

बजने वाले बांस, गायन के शब्द आदि के नाम

कीचको ध्वनिमद्वेणुस्-तालो गेयक्रमोद्भवः ।
पुष्करं मुरजं पद्मं , हस्तिहस्ताग्रनामकम् ।।184।।

बजने वाले बांस को कीचक (पु.) कहते हैं। गाने की आवाज के क्रम (चढ़ा उतार) से जो शब्द निकलता है उसे ताल (पु.) कहते हैं। पुष्कर (न.) शब्द - मृदङ्ग , कमल और हाथी की सूँड़ के अग्रभाग का नाम है।

गोल, ऊँच-नीच, लम्बे औ मोटे के नाम

निस्तलं वर्तुलं वृत्तं, स्थपुटं विषमोन्नतम् ।
दीर्घं प्रांशु विशालं च, बहुलं पृथुलं पृथुः ।।185।।

निस्तल, वर्तुल और वृत्त (त्रि.) ये 3 गोल के नाम हैं। 'ऊँचे - नीचे' विषम-स्थल को स्थपुट (त्रि.) कहते हैं। दीर्घ , प्रांशु और विशाल (त्रि.) ये तीन लम्बे य बड़े के नाम हैं। बहुल, पृथुल और पृथु (त्रि.) ये तीन मोटे, अधिक या बहुत के नाम है।

घोर और देर के नाम

उल्वणं दारुणं तिग्मं, घोरं तीव्रोग्रमुत्कटम् ।
शीतलं तिमिरं याप्यं , मन्दं विद्धि विलम्बितम् ॥186॥

उल्वण, दारुण, तिग्म, घोर , तीव्र, उग्र और उत्कट (त्रि.) ये 7 घोर के नाम हैं। शीतल, तिमिर, याप्य, मन्द और विलम्वित (न.) ये देर के नाम (विद्धि) जानो ।

मित्रता के नाम

सौहार्दं सौहृदं हार्दं , सौहृद्यं सख्य-सौरभम् ।
मैत्री मैत्रेयिकाजर्यं, साहाय्यं सङ्गतं मतम् ॥187॥

सौहार्द, सौहृद, हार्द , सौहृद्य, सख्य, सौरभ (न.) , मैत्री (स्त्री.), मैत्रेयिक, अजर्य, सहाय्य और सङ्गत (न.) ये 11 मित्रता के नाम (मतम्) माने गये हैं।

स्वभाव, अभ्यास और बारम्बार के नाम

स्वभावः प्रकृतिः शीलं, निसर्गो विस्रसा निजः ।
योग्या गुणनिकाऽभ्यासः, स्यादभीक्ष्णं मुहुर्मुहुः ॥188॥

स्वभाव (पु.), प्रकृति (स्त्री.), शील (न.) , निसर्ग (पु.), विस्रसा (अ.) निज (पु.) ये 6 स्वभाव के नाम हैं। योग्या, गुणनिका (स्त्री.) और अभ्यास (पु.) ये 3 अभ्यास के नाम हैं। अभीक्ष्णम् और मुहुर्मुहुः (अ.) ये 2 बारम्बार (पुनः पुनः) के नाम (स्यात्) है।

व्यर्थ और कष्ट के नाम

मृषालीकं मुधा मोघं, विफलं वितथं वृथा ।
विधुरं व्यसनं कष्टं, कृच्छ्रं गहनमुद्धरेत् ॥189॥

मृषा (अ.), अलीक (न.), मुधा (अ.), मोघ, विफल, वितथ, (न.), और वृथा (अ.) ये 7 व्यर्थ के नाम हैं : विधुर, व्यसन, कष्ट, कृच्छ्र और गहन (न.) ये 5 कष्ट के नाम हैं। (गहनं उद्धरेत्) अपना और अन्य का दुःख दूर करना चाहिये।

सम्पूर्ण और टुकड़े के नाम

समस्तं सकलं सर्वं , कृत्स्नं विश्वं तथाखिलम् ।
शकलं विकलं खण्डं , शल्कं लेशं लवं विदुः ॥190॥

समस्त, सकल, सर्व, कृत्स्न, विश्व और अखिल (त्रि.) ये 6 सम्पूर्ण के नाम है। शकल, विकल (न.), खण्ड (पु.), शक्ल (न.), लेश और लव (पु.) ये 6 टुकड़े के नाम (विदुः) जानना चाहिये ।

लड़ाई, निन्दा, कपट और खून के नाम

मर्मकोशं च कलहं, परिवादं छलं नयेत् ।
शोणितं लोहितं रक्तं , रुधिरं क्षतजास्रजम् ॥191॥

मर्मकोश और कलह (पु.) ये दो लड़ाई के नाम हैं। परिवाद, परीवाद (पु.) ये दो नाम निन्दा के हैं और छल (न.) यह एक नाम कपट का नाम (नयेत्) जानना चाहिये । शोणित, लोहित, रक्त, रुधिर, क्षतज और असृज् (न.) ये 6 खून (लोहु) के नाम हैं।

हमेशा वर और विवाह के नाम

सततानारताजस्रा न्वहं कन्यापति र्वरः ।
उद्वाहः परिणयनं, विवाहश्च निवेशनम् ॥192॥

सततम् , अनारतम् , अजस्रम् और अन्वहम् (अव्यय) ये चार हमेशा के नाम हैं। वर (पु.) यह कन्या के पति (दामाद) का नाम है। उद्वाह (पु.), परिणयन (न.) , परिणय, विवाह (पु.) और निवेशन (न.) ये 5 विवाह के नाम हैं।

छिद्र, गड्ढे और नरक के नाम

शुषिरं विवरं रन्ध्रं , छिद्रं गर्त च गह्वरम् ।
श्वभ्रं रस्यं च पातालं, नरकं यान्त्यमेधसः ॥193॥

शुषिर, सुषिर, विवर, रन्ध्र और छिद्र ये 5 छिद्र के नाम हैं। गर्त और गह्वर (न.) ये गड्ढे के नाम हैं। श्वभ्र, रस्य, पाताल और नरक (न.) ये 4 नरक के नाम हैं। (अमेधसः नरकंयान्ति) अज्ञानी जीव नरकों में जाते हैं।

बहुत के नाम

अदभ्रं भूरि भूयिष्ठं, बंहिष्ठं बहुलं बहु ।
प्रचुरं नैकमत्यन्तं प्रभूतं प्राज्यपुष्कले ॥194॥

अदभ्र, भूरि, भूयिष्ठ, बंहिष्ठ, बहुल , बहु , प्रचुर, नैक , अत्यन्त, प्रभूत, प्राज्य और पुष्कल (न.) ये 12 बहुत के नाम हैं।

संसार के नाम

भावो भवश्च संसारः , संसरणं च संसृतिः ।
तत्त्वज्ञश्चतुरो धीरस्त्यजेज्जन्माजवञ्जवम् ॥195॥

भाव, भव, संसार (पु.), संसरण (न.), संसृति (स्त्री.), जन्मन् , आजव, जव और आजवञ्जव (न.) ये 9 संसार के नाम हैं। जो (तत्वज्ञः) तत्त्वज्ञ, चतुर तथा धीर हैं , वे इस संसार को असार या दुःखदायक जान कर शीघ्र ही (त्यजेत्) छोड़ देते हैं।

प्रतापी और शूरवीर के नाम

ओजस्व्यूर्जस्वी तेजस्वी, तरस्वी च मनस्व्यपि ।
भास्वरो भासुरः शूरः, प्रवीरः सुभटो मतः ॥196॥

ओजस्विन् , ऊर्जस्विन् , तेजस्विन् , तरस्विन् और मनस्विन् , (पु.) ये 5 प्रतापी पुरुष के नाम हैं। भास्वर, भासुर, शूर, प्रवीर और सुभट (पु.) ये 5 शूरवीर के नाम (मतः) माने गये है।

बखतर , अँगरखा और छत्र के नाम

तनुत्रं वर्म कवच - मावृति र्बाणवारणम् ।
कूर्पासं कञ्चुकं छत्र - मातपत्रोष्णवारणम् ॥198॥

तनुत्र, वर्मन् , कवच (न.), आवृत्ति (स्त्री.) और बाणवारण (न.) ये 5 बखतर (कवच) के नाम हैं। कूर्पास और कञ्चुक (न.) ये 2 अँगरखे (कुरते) के नाम हैं। छत्र , आतपत्र और उष्णावारण (न.) ये 3 छत्र के नाम हैं।

बाल और चोटी के नाम

केशं शिरोरुहं बालं , कचं चिकुरमीहयेत् ।
चूडापाशं च धम्मिल्लं , कबरीं केशबन्धनम् ॥199॥

केश, शिरोरुह, वाल, कच और चिकुर (पु.) ये 5 बालों के नाम (इहयेत्) मानना चाहिये। चूड़ापाश, धम्मिल्ल (पु.) कबरी (स्त्री) और केशबन्धन (न.) ये चार चोटी के नाम हैं।

कल्याण (मङ्गल) के नाम

क्षेमं कल्याणमभयं , श्रेयो भद्रं च मङ्गलम् ।
भावुकं, भविकं भव्यं , कुशलं च शिवं विदुः ।।200।।

क्षेम, कल्याण, अभय, श्रेयस् , भद्र, मङ्गल, भावुक , भविक , भव्य, कुशल और शिव (न.) ये 11 कल्याण के (विदुः) जानना चाहिये।

ग्रन्थकार का स्वकीय लाघवप्रकाशन

वक्ता वाचस्पति र्यत्र , श्रोता शक्रस्तथापि तौ ।
शब्दपारायणस्यान्तं , न गतौ तत्र के वयम् ।।201।।

जैसे समुद्र अथाह होता है, उसी प्रकार शब्दों का समूह भी आगम है, ऐसी दशा में जब कि वक्ता बृहस्पति और श्रोता इन्द्र भी उसका पार नहीं पा सके, तब हमारी तो गणना ही क्या है।

तथापि किञ्चित् कस्मैचित् , प्रतिबोधाय सूचितम् ।
बोधयेत्कियदुक्तिज्ञो , मार्गज्ञः सह याति किम् ।।202।।

अर्थ - जैसे रास्ता बताने वाला मनुष्य स्वयं पथिक के साथ नहीं जाता, केवल सुगम मार्ग बतला देता है, उसी प्रकार वचन के जानकार चतुर जनों को इशारा मात्र पर्याप्त होता है। इसलिये ऐसे लोगों को समझाने के लिये कतिपय शब्दों के कुछ-कुछ नामों का ही यहां निरूपण किया है। तो भी वे थोड़े से बहुत जान लेवेंगे ।।202।।

शास्त्रीय अपूर्व तीन रत्न

प्रमाणमकलङ्कस्य, पूज्यपादस्य लक्षणम् ।
द्विसन्धानकवेः काव्यं , रत्नत्रयमश्चिमम् ।।203।।

अकलङ्कस्वामी का प्रमाण (न्याय) शास्त्र, पूज्यपाद (गुणनन्दी) स्वामी का लक्षण (व्याकरण) शास्त्र और द्विसन्धान - काव्य के कर्त्ता धनञ्जय कवि का काव्यशास्त्र (द्विसन्धान) ये तीनों अपूर्व ही रत्न हैं ।।203।।

ग्रन्थकार का नाम और श्लोकों का प्रमाण

कवे धनञ्जयस्येयं, सत्कवीनां शिरोमणेः ।
प्रमाणं नाम-मालेति, श्लोकानाञ्च शतद्वयम् ।204।

यह नाममाला ; उद्भट कवियों में शिरोमणि कविवर धनञ्जय की बनाई हुई हैं , यह सर्वाभिमत बात है। और इस ग्रन्थ के नामाभिधायक (नामों के बताने वाले) श्लोक 200, दो सौ हैं।

ब्रह्माणं समुपेत्य वेद - निनद-व्याजात्तुषाराचल -
स्थान - स्थावरमीश्वरं सुरनदी-व्याजांत्तथा केशवम् ।
अप्यम्भोनिधि-शायिनं जलनिधि - ध्यानापदेशादहो,
फूत्कुर्वन्ति धनञ्जयस्य च भिया, शब्दाः समुत्पीडिताः ।205।

यह आश्चर्य की बात है कि धनञ्जय कवि के भय से पीडित होकर शब्द; वेदध्वनि के बहाने से ब्रह्मा के पास, गङ्गा के बहाने से हिमगिरि (हिमालय) पर रहने वाले महादेव के पास तथा समुद्र के शब्दों के बहाने से विष्णु के पास जाकर अपना अपार दुःख प्रगट करते हैं।

नाममाला समाप्ता

श्रीमद्धनञ्जय – कवि – विरचिता

अनेकार्थ – नाममाला

गम्भीरं रुचिरं चित्रं , विस्तीर्णार्थप्रकाशकम् ।

शाब्दं मनाक् प्रवक्ष्यामि, कवीनां हितकाम्यया ॥1॥

मैं धनञ्जय कवि (कवीनां हितकाम्यया) अन्य कवियों के हित की चाह से एक-एक शब्द के (विस्तीर्थ अर्थ - प्रकाशम्) अनेक-अनेक अर्थों को बतलाने वाले, गम्भीर, मनोहर और विचित्र शब्दसमूह को (प्रवक्ष्यामि) कहता हूँ ॥1॥

अर्हत्पिनाकिनौ शम्भू , जिनावर्हत्तथागतौ ।

वेदसूर्यौ विवस्वन्तौ, विष्णुरुद्रौ वृषाकपी ॥2॥

'शम्भु' (पु.) शब्द - अर्हत् (जिनेन्द्र) और पिनाकिन् (महादेव) का वाचक है। 'जिन' (पु.) शब्द-अर्हत् और तथागत (बुद्ध) का वाचक है। 'विवस्वत्, (पु.) शब्द - वेद और सूर्य का वाचक है। तथा 'वृषाकपि' (पु.) शब्द विष्णु और रुद्र का वाचक है ॥2॥

वैकुण्ठाविन्द्रगोविन्दा–वनन्तौ शेषशार्ङ्गिणौ ।

जीमूतौ करिकुत्कीलौ, पर्जन्यौ शक्रवारिदौ ॥3॥

वैकुण्ठ शब्द इन्द्र और विष्णु का, अनन्त शब्द शेषनाग और विष्णु का, जीमूत शब्द करिकुन् (मेघ) और कील (कीली) का अथवा करी अर्थात् हाथी और कुत्कील (पर्वत) का तथा पर्जन्य शब्द इन्द्र और वारिद अर्थात् मेघ का वाचक है। ये सभी शब्द पुँलिङ्ग हैं ॥3॥

वनमम्भसि कान्तारे, भुवनं विष्टपेऽर्णसि ।

घृतं सर्पिषि पानीये, विषं हालाहले जले ॥4॥

(1) वनशब्द जल और जंगल का। (2) भुवनशब्द संसार और जल का। (3) घृतशब्द -घी और जल का तथा (4) विषशब्द हालाहल और जल का नाम हैं। ये सभी शब्द (नपुंसक लिङ्ग) हैं ॥4॥

तल्पं दारेषु शय्यायां, ज्योतिश्चक्षुषि तारके ।
धवले सुन्दरे रामो, वामो वक्रे मनोहरे ॥5॥

तल्प (न.) शब्द स्त्री और शय्या का , ज्योतिष् (न.) शब्द नेत्र और आँख की पुतली का, राम (पु.) शब्द उज्ज्वल और सुन्दर का, वाम (पु.) शब्द टेढ़े और मनोहर का नाम है ।

नक्षत्रे मन्दिरे धिष्ण्यं, वसने गगनेऽम्बरम् ।
परिधौ पादपे सालः , सिन्धुः स्रोतसि योषिति ॥6॥

धिष्ण्य (न.) शब्द नक्षत्र और मकान का, अम्बर शब्द वसन = वस्त्र और आकाश का, साल (पु. न.) शब्द काठ और वृक्ष का, सिन्धु शब्द स्रोतस् = नदी और स्त्री का नाम है ।

सारसः शकुनौ धूर्ते , केतनं दीधितौ ध्वजे ।
मयूखः कीलके दीप्तौ , पतङ्गःशलभे रवौ ॥7॥

सारस (पु.) शब्द पक्षी और धूर्त का नाम है । केतन (न.) शब्द किरण और ध्वजा का वाचक है । मयूख (पु.) शब्द कीलक (खूंटी) और दीप्ति = किरण का नाम है । पतङ्ग (पु.) शब्द शलभ= पतङ्ग और सूर्य का वाचक हैं ।

अञ्जनः कज्जले नागे, सारङ्गः पृषते गजे ।
सरलः प्रगुणे वृक्षे , पुन्नागः सन्नरे तरौ ॥8॥

अञ्जन (पु. न.) शब्द कज्जल और हाथी का वाचक है । सारङ्ग (पु.) शब्द पृषत = हरिण और हाथी का नाम है । सरल (पु.) शब्द प्रगुण = सीधे और वृक्ष का वाचक है । पुन्नाग (पु.) शब्द सन्नर = सज्जन और वृक्ष का नाम है ।

पाञ्चजन्योऽनले शङ्खे , कम्बुः शङ्खे मतङ्गजे ।
कस्वरो द्युभवे द्युम्ने , स्यन्दनं शकटेऽम्बुनि ॥9॥

पाञ्चजन्य (पु. न.) शब्द अग्नि और शङ्ख का वाचक हैं । कम्बु (पु.) - शंख और हाथी का नाम है । कस्वर (पु.) शब्द - द्युभव= देव और द्युम्न = धन का वाचक है । स्यन्दन (न.) शब्द - गाड़ी = रथ और जल का नाम है ।

अद्रि र्गिरिवनस्पत्योः , शिखरी तरुभूध्रयोः ।
राजा चन्द्रमहीपत्योः, द्विजो दशनविप्रयोः ॥10॥

अद्रि (पु.) शब्द - पर्वत और वृक्ष का वाचक है। शिखरिन् (पु.) शब्द - वृक्ष और पहाड़ का नाम हैं। राजन् (पु.) शब्द चन्द्र और राजा का वाचक है। द्विज शब्द (पु.) दशन = दाँत और विप्र = ब्राह्मण का नाम है।

मोचामरस्त्रियोः रम्भा, कदली ध्वजमोचयोः ।
अशोकः सुमनस्तर्वोः , सुमनाः सुरपुष्पयोः ॥11॥

रम्भा (स्त्री.) शब्द - मोचा = केले और अमरस्त्री = देवाङ्गना का नाम है। कदली (स्त्री.) शब्द - ध्वजा और मोचा का वाचक है। अशोक (पु.) शब्द - सुमनस् = पुष्प और अशोक वृक्ष का नाम है। सुमनस् (पु.) शब्द - सुर = देव और पुष्प का नाम है।

मुक्तारजतयोस्तारो , भूरि भूयः - सुवर्णयोः ।
पानीयदुग्धयोः क्षीरं , पयः सलिलदुग्धयोः ॥12॥

तार (पु.) शब्द - मुक्ता (मोती) और रजत (चाँदी) का , भूरि (न.) शब्द - भूयस् (बाहुल्य) और सुवर्ण का नाम है। क्षीर (न.) शब्द - पानी और दुग्ध का वाचक है। पयस् (न.) शब्द - सलिल (जल) और दुग्ध का नाम है।

कालप्रकर्षयोः काष्ठा, कोटिः संख्याप्रकर्षयोः ।
रन्ध्रसंश्लेषयोः सन्धिः , सिन्धुर्नदसमुद्रयोः ॥13॥

काष्ठा (स्त्री.) शब्द - काल और प्रकर्ष (बड़प्पन) का वाचक है। कोटि (स्त्री.) शब्द - सँख्या और प्रकर्ष का नाम है। सन्धि (पु.) शब्द रन्ध्र (छिद्र) और मिलाप का वाचक है। सिन्धु (स्त्री.) शब्द नदी और समुद्र का नाम है।

निषेधदुःखयो र्बाधा, व्यामोहो मूर्खमौढ्ययोः ।
कौपीनाकार्ययो र्गुह्यं , कीलालं रुधिराम्भसोः ॥14॥

बाधा(स्त्री.) शब्द - निषेध और दुःख का नाम है। व्यामोह (पु.) शब्द मूर्ख और मूर्खता का वाचक है। गुह्य (न.) शब्द - कौपीन (लँगोटी) और अकार्य (पाप) का नाम है। कीलाल (न.) शब्द रुधिर और जल का नाम है ॥14॥

मूल्यसत्कारयोरर्घो, जात्यः श्रेष्ठ - कुलीनयोः ।
मेघवत्सरयोरब्द - स्ताक्ष्यौ हयगरुन्मतोः ॥15॥

अर्थ - (पु.) अर्घ शब्द - मूल्य और सत्कार का वाचक है। जात्य (पु.) शब्द - श्रेष्ठ और कुलीन का नाम है। अब्द (पु.) शब्द - मेघ और वत्सर (वर्ष) का वाचक है। तार्क्ष्य (पु.) शब्द - हय (घोड़ा) और गरुत्मत् (गरुड़) का नाम है।

स्तब्धतास्थूणयोः स्तम्भश्चर्चा चिन्ता–वितर्कयोः।
हरकीलकयोः स्थाणुः स्वैरः स्वच्छन्दमन्दयोः ।16।

स्तम्भ (पु.) शब्द - स्तब्धता (धीरज) और स्थूण (थम्भा) का वाचक है। चर्चा (स्त्री.) शब्द चिन्ता और वितर्क (विचार) का नाम है। स्थाणु (पु.) शब्द - हर (महादेव) और कीलक (कील) का वाचक है। स्वैर (पु.) शब्द - स्वच्छन्द = स्वतन्त्र और मन्द = धीर या सुस्त का नाम है।।16।।

शङ्कुः संकीर्णविवरे, पलालाग्नौ च कीलके ।
संख्यायां काननोद्भूते , वह्नौ दावो दवोऽपि च ।।17।।

शंकु (पु.) शब्द - संकीर्णविवर = छोटा छिद्र, पलालाग्नि = भूसे की आग ; कीलक और संख्या का वाचक है। दाव और दव (पु.) ये दो शब्द - जंगल में लगी हुई अग्नि अर्थात् दमार के नाम है।।17।।

कीनाशः कृपणे भृत्ये , कृतान्ते पिशिताशिनि ।
तथा पुण्यजनान् प्राहुः , सज्जनान् राक्षसानपि ।।18।।

कीनाश (पु.) शब्द - कृपण = कंजूस , भृत्य = नौकर , कृतान्त = यम; पिशिताशिन् = मांसभक्षी ; पुण्यजन = पुण्यात्मा पुरुष , सज्जन और राक्षस इन 7 अर्थों मे कीनाश शब्द (प्राहुः) कहा गया है।।18।।

विरोचनो रवौ चन्द्रे , दनुसूनौ हुताशने ।
हंसो नारायणे व्रध्ने, यतावश्वे सितच्छदे ।।19।।

विरोचन (पु.) शब्द - रवि , चन्द्र , दनुसून = प्रद्युम्न और हुताशन = अग्नि इन चार का नाम है। हंस (पु.) शब्द नारायण ; व्रध्न = सूर्य ; यति = साधु , अश्व = घोड़ा और सितच्छद = हंसपक्षी ये 5 नाम हंस शब्द के जानना चाहिये है।।19।।

सोमश्चन्द्रोऽमृतं सोमः , सोमो राजा युगादिभूः ।
सोमः प्रतानिनीभेदः, सोमपोऽगस्त्य-दिक्पतिः ॥20॥

सोम (पु.) शब्द के - चन्द्रमा , अमृत , राजा , युगादिभू = ब्रह्मा , लता विशेष तथा अगस्त्यदिक्पति = वरुण ये 6 अर्थ हैं ।

अजो विधिरजो विष्णु-रजः शम्भुरजस्तमः ।
अजस्त्रैवार्षिको ब्रीहि - रजो रामपितामहः ॥21॥

अज (पु.) शब्द - विधि = ब्रह्मा , विष्णु , शम्भु = महादेव, अन्धकार, और तीन वर्ष की पुरानी धान तथा रामचन्द्र के पितामह अर्थात् बाबा (पिता के पिता) का नाम है ।

शुद्धेऽनुपहते, वह्नौ, ब्राह्मणे सचिवोत्तमे ।
आषाढ़ेऽध्यात्मसंवित्तौ , ब्रह्मचर्ये शुचि र्मतः ॥22॥

शुचि (पु.) शब्द के शुद्ध , अनुपहत , वह्नि , ब्राह्मण, उत्तम मंत्री, आषाढ़ मास, अध्यात्मज्ञान और ब्रह्मचर्य ये आठ अर्थ हैं ।

अर्थोऽभिधेयरै - वस्तु प्रयोजन - निवृत्तिषु ।
भावः पदार्थचेष्टात्म - सत्ताभिप्रायजन्मसु ॥23॥

अर्थ (पु.) शब्द के - पांच अर्थ है । अभिधेय = वाच्य , रै = धन , वस्तु प्रयोजन और निवृत्ति । भाव (पु.) शब्द के पदार्थ , चेष्टा, आत्मा , सत्ता , अभिप्राय और जन्म ये 6 अर्थ हैं ।

प्रायो भूमोपमाऽतर्क्यं - प्रभृत्यन्न - निवृत्तिषु ।
अन्तः पदार्थसामीप्य - धर्मसत्त्वव्यतीतिषु ॥24॥

प्रायः और प्रायस् (अ.) शब्द के - भूमन् = बाहुल्य, उपमा = तुल्य, अतर्क्य , प्रभृति = आदि और अन्ननिवृत्ति (अन्नत्याग) ये 5 अर्थ हैं। अन्त (पु.) शब्द के पदार्थ , सामीप्य, धर्म , सत्त्व = बल और व्यतीति = बीतना ये 5 अर्थ हैं ॥24॥

अक्षो द्यूते वरूथाङ्गे , नयनादौ विभीतके ।
सारः श्रेण्ठे बले वित्ते, केशे जलचरे स्थिरे ॥25॥

अक्ष (पु.) शब्द के जुआ , वरुथांग = रथ के चक्र का अवयव, नेत्र, विभीतक = भयानक और आदि पद से गाड़ी का धुरा और व्यवहार ये 6 अर्थ हैं। सार (त्रि.) शब्द के - श्रेष्ठ, बल, वित्त = धन , केश , जलचर और स्थिर ये छह अर्थ हैं ।।25।।

वाचि वारि पशौ भूमौ , दिशि लोम्नि पवौ दिवि ।
विशिखे दीधितौ दृष्टा – वेकादशसु गौ र्मतः ।।26।।

गो (पु. स्त्री.) शब्द के - वाच् = बोली, वार् = पानी , पशु , भूमि , दिशा, लोमन् = रोम , पवि = वज्र , दिव् = आकाश , विशिख = बाण , किरण और दृष्टि ये 11 अर्थ (मतंः) माने गये हैं।

चन्द्रे सूर्ये यमे विष्णौ, वासवे दर्दुरे हये ।
मृगेन्द्रे वानरे वायौ , दशस्वपि हरिः स्मृतः ।।27।।

हरि (पु.) शब्द के - चन्द्र , सूर्य , यम , विष्णु, इन्द्र, दर्दुर - मेंढक, घोड़ा, सिंह, बन्दर और वायु ये 10 अर्थ (स्मृतः) स्मरण किये गये हैं।

पद्मे करिकर–प्रान्ते, व्योम्नि खड्गफले गदे।
वाद्यभाण्डमुखे तीर्थे, जले पुष्करमष्टसु ।।28।।

पुष्कर (न.) शब्द के कमल, हाथी की सूंड का अग्रभाग, व्योमन् = आकाश , तलवार की मूंठ , गदा , वाद्यभाण्डमुख = बाजे का मुख , तीर्थ - विशेष और जल ये 8 अर्थ हैं।

शृङ्गारादौ कषायादौ, घृतादौ च विषे जले ।
निर्यासे पारदे रागे , वीर्येऽपि रस इष्यते ।।29।।

शृंगार शब्द हास्य , करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शान्त इन काव्यगत रसों में कषाय, तिक्त, कटुक, आम्ल और मिष्ट इन 5 पुद्गल के गुणों में घी, नमक, दूध, दही, तेल और मिठाई इन 6 भोजन के स्वादों में तथा विष, जल, निर्यास = काढ़ा या गोंद , पारद = पारा , राग और वीर्य अर्थ में रस (पु.) शब्द (इष्येत) माना जाना।

तीर्थे प्रवचने पात्रे , लब्धाम्नाये विदाम्बरे ।
पुण्यारण्ये जलोत्तारे , महासत्त्वे महामुनौ ।।30।।

तीर्थ (पु. न.) शब्द के - प्रवचन = शास्त्र , पात्र = वर्तन , लब्धाम्नाय = धर्मतीर्थ प्रवर्तक , विदाम्वर = पण्डित, पुण्यारण्य = तीर्थस्थान , जलोत्तार = सीढ़ी , महासत्त्व और महामुनि ये 7 अर्थ हैं ।।30।।

धातुः पञ्चसु लोहेषु , शरीरस्य रसादिषु ।
पृथिव्यादि – चतुष्के च, स्वभावे प्रकृतावपि ।।31।।

धातु (पु.) शब्द के - 1 धातु - चांदी ; सोना , लोहा वगैरह , 2 शरीर के रस - रक्त, माँस , मज्जा, हड्डी और वीर्य आदि , 3. भूतचतुष्टय - पृथ्वी, जल अग्नि, वायु 4. स्वाभाव , 5. प्रकृति ये 5 अर्थ है ।।31।।

प्रधानं शृङ्गलांगूल – भूषा – पुण्ड्र – प्रभावना ।
ध्वजालक्ष्मतुरङ्गेषु , ललामो नवसु स्मृतः ।।32।।

ललाम (पु.) शब्द के 1. प्रधान, शृङ्ग = सींग , 2. लांगूल = पूँछ , 4. भूषा = भूषण , 4. पुण्ड्र = इक्षु , 5. प्रभावना (महिमा) , 6. ध्वजा , 7. चिह्न, 8. तुरङ्ग = घोड़ा ये 8 अर्थ (स्मृतः) स्मरण किये गये हैं ।।32।।

आकृतावक्षरे रूपे , ब्राह्मणादिषु जातिषु ।
माल्यानुलेपने चैव , वर्णः षट्सु निगद्यते ।।33।।

वर्ण शब्द के 1 आकृति , 2. अक्षर - (अ , आ आदि.) 3. रूप , 4. जाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) , 5 माल्य = माला और 6 अनुलेपन = उवटन ये छह अर्थ (निगद्यते) कहे गये है ।

अकारादावुदात्तादौ, षड् जादौ निस्वने स्वरः ।
संकेताचारसिद्धान्त – कालेषु समयः स्मृतः ।।34।।

स्वर (पु.) शब्द के 1. अकारादि - अ, आ, आदि , 2. उदात्तादि - उदात्त , अनुदात्त और स्वरित , 3. षढजादि = निषाद ; ऋषभ, गान्धार, षड्ज, मध्यम, धैवत और पश्चिम तथा , 4. निस्वन = आवाज ये 4 अर्थ हैं । समय (पु.) शब्द के 1 संकेत , आचार , सिद्धान्त और काल ये 4 अर्थ (स्मृतः) स्मरण किये गये हैं ।

तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते, सैन्ये तन्तौ परिच्छदे ।
सत्त्वमोजसि सत्ताया – मुत्साहे स्थेम्नि जन्तुषु ।35।

तन्त्र (न.) शब्द के - 1. प्रधान, 2. सिद्धान्त , 3. सेना , 4. तन्तु = धागा 5. परिच्छेद = परिग्रह, ये 5 अर्थ हैं। सत्त्व (न.) शब्द के - 1. ओजस् = तेज , 2. सत्ता = अस्तित्व , 3. उत्साह, 4. स्थेमन् = स्थिरता , 5. जन्तु ये पाँच अर्थ हैं।

रूपादौ तन्तुषु ज्यायाम - प्रधाने नये गुणः ।
ज्ञानचारित्रमोक्षात्म - श्रुतिषु ब्रह्मवाग्वरा ॥36॥

गुण शब्द का 1. रूपादि = रूप , रस , गन्ध और स्पर्श , 2. तन्तु = धागा , 3. ज्या = धनुष की डोरी , 4. अप्रधान = (गौण) और 5 नय इन 5 अर्थों में गुण शब्द का प्रयोग होता है। तथा ब्रह्मवाच् (स्त्री.) शब्द का 1. ज्ञान, 2. चारित्र, 3. मोक्ष, 4. आत्मा और 5. श्रुति = वेद इन पाँच अर्थों में प्रयोग होता है।

अवकाशे क्षणे वस्त्रे , बहिर्योगे व्यतिक्रमे ।
मध्येऽन्तःकरणे रन्ध्रे, विशेषे विरहेऽन्तरम् ॥37॥

अन्तर (न.) शब्द का प्रयोग - 1. अवकाश = छुट्टी, 2. क्षण , 3. वस्त्र, 4. बहिर्योग , 5. व्यतिक्रम = उल्लंघन , 6. मध्य , 7. अन्तःकरण = मन, 8. छिद्र , 9. विशेष और , 10. विरह, इन 10 अर्थों में होता है ॥37॥

हेतौ निदर्शने प्रश्ने , श्रुतौ कर्म समीकृतौ ।
आनन्तर्येऽधिकारार्थे , मङ्गले चाथ इष्यते ॥38॥

अथ (अव्यय) शब्द का - हेतु - निदर्शन = दृष्टान्त, प्रश्न श्रुति, किसी पुस्तक का प्रारम्भ , आनन्तर्य = अव्यवधान , अधिकार और मङ्गल इन आठ अर्थों में प्रयोग (इष्यते) माना जाता है।

हेतावेवं - प्रकारादौ, व्यवच्छेदे विपर्यये ।
प्रादुर्भावे समाप्तौ च, इतिशब्दः प्रकीर्तितः ॥39॥

इति (अव्यय) शब्द का 1 हेतु = कारण , 2. एवं प्रकार = इस प्रकार, 3. व्यवच्छेद = व्यवधान , 4. विपर्यय = उलटा , 5. प्रादुर्भाव =उत्पत्ति और 6 समाप्ति इन 6 अर्थों में (प्रकीर्तितः) कहा गया है।

धर्मो धनुष्यहिंसादा - वुत्पादादावये नये ।
द्रव्यं क्रियाश्रये वित्ते , जीवादौ दारुवैकृते ॥40॥

धर्म शब्द का प्रयोग - 1. धनुष , 2. अहिंसादि = पाँचों व्रत, 3. उत्पादादि = उत्पाद, व्यय , ध्रौव्य , 4. अय = भाग्य और 5 नय इन पाँच अर्थों में होता है । 1. क्रियाश्रय = जिसमें कोई क्रिया की जाती है , 2. वित्त = धन, जीवादि = छह द्रव्य और , 4. काठ से बनाये हुए मंगल द्रव्य आदि इन 4 अर्थों में द्रव्य (न.) शब्द का प्रयोग होता है ।

मूर्तिमत्सु पदार्थेषु, संसारिण्यपि पुद्गलः ।
अकर्म-कर्म-नोकर्म , जातिभेदेषु वर्गणा ॥41॥

पुद्गल (पु.) शब्द का प्रयोग - मूर्तिक पदार्थों और संसारी प्राणियों में होता हैं। वर्गणा (स्त्री.) शब्द का प्रयोग - 1. अकर्म = कर्म से भिन्न पुद्गलस्कन्ध, 2. कर्म=ज्ञानावरणादि आठ कर्म, 3. नोकर्म = औदारिकादि तीन शरीर और छह पर्याप्ति तथा 4जाति भेद इन चार अर्थों में होता है ॥ 41 ॥

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य, वीर्यस्य यशसः श्रियः ।
वैराग्यस्यावबोधस्य, षण्णां भग इति स्मृतः॥42॥

भग (पु.)शब्द के-ऐश्वर्य, सम्पूर्ण,वीर्य,यश,श्री,वैराग्य और अवबोध =ज्ञान ये 7 अर्थ (स्मृतः) स्मरण किये गये हैं ॥ 42॥

प्राहुः कैवल्यमार्हन्त्ये, विविक्ते निर्वृतावपि ।
लब्धिः केवलबोधदा-विष्टाप्तौ नियतौश्रियाम् । 43 ।

कैवल्य (न०) शब्द-1. आर्हन्त्य = अरिहन्त भगवान् की अन्तरङ्ग लक्ष्मी, 2. विविक्त = एकान्त स्थान और , 3. निर्वृत्ति = मोक्ष इन तीन का वाचक है। लब्धि (स्त्री.) शब्द का प्रयोग - 1. केवलज्ञानादि = अनन्त चतुष्टय , 2. इष्टाप्ति = इष्ट वस्तु की प्राप्ति , 3. नियति = कर्म और 4. श्री = लक्ष्मी या शोभा इन , 4. अर्थों में (प्राहुः) कहते है ।

अनेकान्ते च विद्यादौ, स्यान्निपातः शुभे क्वचित् ।
दर्शनादौ मणौ रत्नं , भव्यः शस्ते प्रसेत्स्यति ॥44॥

स्यात् (अ.) शब्द का प्रयोग - अनेकान्त = अनेक धर्मात्मक स्याद्वाद, विद्या और शुभ इन तीन में (स्यात्) होता है। रत्न (न.) शब्द का प्रयोग - सम्यग्दर्शनादि = रत्नत्रय और 2 मणि इन अर्थों में होता है। भव्य (पु.) शब्द का प्रयोग - 1. शस्त = प्रशंसायोग्य वस्तु और 2. प्रसेत्स्यत् सम्यग्दृष्टि या कभी भी सम्यग्दर्शन पाने की योग्यता रखने वाला इन दो अर्थों में होता है।

परमात्मा जिने सिद्धे, पर - मेष्ठ्यर्हदादिषु ।
सिद्धः सिद्धनिषद्यायां - मर्हत्सिद्ध - श्रियामपि ।।45।।

परमात्मन् (पु.) शब्द का प्रयोग - जिन = अर्हत्परमेष्ठी और सिद्धपरमेष्ठी इन दो अर्थों में होता है। परमेष्ठी शब्द का प्रयोग - अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु में होता हैं। सिद्ध शब्द का प्रयोग - सिद्धशिला में और अरिहन्त तथा सिद्धों की अन्तरङ्ग लक्ष्मी इन तीन अर्थों में होता है ।।45।।

अर्हत्सिद्धाविति द्वावप्यर्हत्सिद्धाभिधायिनौ ।
अर्हदादीनपि प्राहुः , शरणोत्तममङ्गलान् ।।46।।

अर्हत् और सिद्ध शब्द अरिहन्त तथा सिद्ध के वाचक हैं। अरिहन्त, सिद्ध, साधु और केवलिप्रणीत धर्म ये 4 लोक में शरण, उत्तम और मङ्गल (प्राहुः) कहे गये हैं ।।46।।

। इत्यनेकार्थनाममाला समाप्ता ।

अनेकार्थ - निघण्टु

''अनुष्टुप् छन्द''

मंगलाचरण

गम्भीरान् रूचिराँश्चित्रान् , विस्तीर्णार्थ प्रसाधनान् ।
कष्टशब्दान् प्रवक्ष्यामि , कवीनांहितकाम्यया ॥1॥

अर्थ - मै धनञ्जय कवि अन्य (कवीनांहितकाम्यया) कवियों के हित की इच्छा से एक शब्द के अनेक अर्थों को बतलाने वाले , गम्भीर , मनोहर , विचित्र और शोभा से सहित, कठिन शब्दों को (प्रवक्ष्यामि) कहता हूँ ।

गो शब्द के नाम

वाग्दिग्भूरश्मिवज्रेषु , पश्वक्षिस्वर्गवारिषु ।
नवस्वर्थेषु मेधावी , गो शब्दमुपलक्षयेत् ॥2॥

अर्थ - गो शब्द = वचन, दिशा, भूमि , किरण , वज्र , पशु , अक्षि, (नेत्र) स्वर्ग , पानी (त्रि.लि.) इन नव अर्थों में विद्वानों ने (उपलक्ष्येत्) माना हैं।

'क' शब्द के नाम

कः प्रजापतिरूद्दिष्टो को वायुरभिधीयते ।
कः शब्दस्वर्गमाख्याति क इत्यात्मा मतः क्वचित् ॥3॥

अर्थ - कः = (पु.) ब्रह्मा , वायु , स्वर्ग और आत्मा ये 4 अर्थ 'क' शब्द के होते हैं।

'कं' और अनिमिष शब्द के नाम

सलिलं कमिति ज्ञेयं, शिरः कमिति चोच्यते ।
देवाननिमिषानाहु र्मत्स्याननिमिषांस्तथा ॥4॥

अर्थ - कम् = (न.) पानी और शिर 'कम्' शब्द के ये 2 अर्थ होतें हैं। अनिमिष = (पु.) देव और मछली अनिमिष शब्द के ये दो अर्थ होते हैं।

शिखिन् शब्द के नाम

अग्निश्च वर्हिणश्चैव वृक्षः कुक्कुट एव च ।
शिखिनोऽभिहिताः शस्त्रः पृथुकश्च मतः शिखी ॥5॥

अर्थ - शिखी = (पु.) अग्नि, मोर, वृक्ष, मुर्गा , वाण, शस्त्र , पृथुक शिखिन् शब्द के ये 7 अर्थ होतें है।

हंस शब्द के नाम

हंसो नारायणः प्रोक्तः , क्वचिद्धंसो दिवाकरः।
अश्वश्चापि स्मृतो हंसो, हंसश्चापि विहंगमः ॥6॥

अर्थ - हंसः (पु.) - नारायण , सूर्य , अश्व और हंस पक्षी, हंस, शब्द के ये 4 अर्थ होतें हैं।

सारस और राजा शब्द के नाम

सारसस्सरसिजेन्दोः पतत्र्यपि च सारसः ।
राजाऽपि नृपतिर्ज्ञेयो राजा चोक्तो निशाकरः ॥7॥

अर्थ - सारसः = (पु.) कमल , इन्दु (चन्द्रमा) और सारस पक्षी ,सारस शब्द के ये 3 अर्थ होतें हैं। राजा = (पु.) राजा (प्रजापति), और चन्द्रमा, राजा शब्द के ये 2 अर्थ होतें हैं।

विभावसु और हिमाराति शब्द के नाम

विभावसुर्हुताशः स्याच्छ्वेतच्छत्रं क्वचिद् भवेत् ।
हिमारातिः स्मृतो वह्निः हिमारातिश्च भास्करः ॥8॥

अर्थ - विभावसु : - (पु.) हुताशः = अग्नि और श्वेतच्छत्र 'विभावसु' शब्द के ये दो अर्थ होते हैं।

हिमारातिः - (पु.) अग्नि और सूर्य, हिमाराति शब्दके ये दो नाम हैं।

धनञ्जय और वीभत्स शब्द के नाम

धनञ्जयोग्नि र्व्याख्यातः पार्थश्चापि धनञ्जयः ।
बीभत्सश्च मतः पार्थो, विभत्सो विकृतः स्मृतः ॥9॥

अर्थ - धनञ्जय : = (पु.) अग्नि और अर्जुन , धनञ्जय शब्द को इन दो अर्थों में प्रयोग किया जाता है।

बीभत्स = (पु.) पार्थः = अर्जुन का नामान्तर बीभत्स है। बीभत्स = घृणोत्पादक वस्तु भी बीभत्स कहलाती है।

विरोचन शब्द के नाम

अग्निर्विरोचनः प्रोक्तो भास्करस्तु विरोचनः ।
विरोचनश्च चन्द्रः स्यात्, क्वचित् दैत्यो विरोचनः ॥10॥

अर्थ - विरोचनः = (पु.) अग्नि , सूर्य , चन्द्रमा और दैत्य इन 4 अर्थों में विरोचन शब्द का प्रयोग होता है।

पाञ्जजन्य और कम्बु शब्द के नाम

पाञ्चजन्यः क्वचिद्वह्निः, क्वचिच्छंखो निगद्यते ।
कम्बुश्च गदितः शंखः कम्बुरिष्टश्च कुञ्जरः ॥11॥

अर्थ - पाञ्चजन्यः = (पु.) पाञ्चजन्य शब्द का कहीं अग्नि अर्थ में और कहीं शंख अर्थ में प्रयोग होता है। कम्बुः = (स्त्री.) - शंख और हाथी 'कम्बु' शब्द इन अर्थों में आता है।

भास्कर और पतंग शब्द के नाम

भास्करोऽग्निः समुद्दिष्टः सहस्रांशुरपि क्वचित् ।
पतङ्गो दिनकृद् ज्ञेयः, पतङ्गः शलभः स्मृतः ॥12॥

अर्थ - भास्करः = (पु.) भास्कर = अग्नि और सूर्य , इन 2 अर्थों में प्रयोग होता हैं। पतङ्गः = (पु.) सूर्य , टिड्डा (पङ्खि) इन दो अर्थों में 'पतङ्ग' शब्द का प्रयोग होता है।

कौशिक और शम्भु शब्द के नाम

कौशिको देवराजः स्यादुलूकश्चापि कौशिकः ।
शम्भुर्ब्रह्मा च विष्णुश्च शम्भुश्चैव महेश्वरः ॥13॥

अर्थ - कौशिकः = (पु.) देवराज, इन्द्र और उल्लु, इन दो अर्थों में (कौशिक शब्द का) प्रयोग होता हैं।

शम्भुः = (पु.) ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर इन 3 अर्थों में 'शम्भु' शब्द का प्रयोग होता है।

शंकु और जम्बुक शब्द के नाम

वृषकेतु मतः शङ्कुः शुङ्कुः कील इहोच्यते ।
जम्बु को वरूणो ज्ञेयः , शृंगालश्चापि जम्बुकः ॥14॥

अर्थ - शङ्कुः = (पु.) वृषकेतु और कील इन दो अर्थों में शङ्कुः शब्द का प्रयोग होता है।

जम्बुकः = (पु.) वरुण और शृगाल ये दो अर्थ 'जम्बुक' शब्द के होतें हैं।

अर्क और मन्थी शब्द के नाम

अर्क इष्टस्तु मघवान् घर्मांशुरर्क उच्यते ।
मन्थी राहुश्च चन्द्रश्च, ग्रहो मन्थी निरूच्यते ॥15॥

अर्थ - अर्क = (पु.) मघवान् = इन्द्र और घर्मांशु = सूर्य , ये 2 अर्थ 'अर्क' शब्द के होतें हैं।

मन्थी = (पु.) मन्थिन् = राहु , चन्द्रमा और ग्रह, इन तीन अर्थों में 'मन्थिन् ' शब्द का प्रयोग होता है।

केतु और तमोनुद शब्द के नाम

केतवो रश्मयो ज्ञेयाः केतवश्च महाध्वजाः ।
तमोनुदः सहस्रांशुरग्निश्चापि प्रकीर्त्यते ॥16॥

अर्थ - केतु : (पु.) केतु = किरण महाध्वजा = झंडा

तमोनुदः = (पु.) सूर्य और अग्नि, इन ४ अर्थों में केतु शब्द का प्रयोग होता है।

मयूख और सप्तर्षि के नाम

मयूखाः किरणा ज्ञेया, मयूखाश्चापि कीलकाः ।
सप्तर्षिरुत्सवः प्रोक्तः, सप्तान्ये ऋषयः क्वचित् ॥17॥

अर्थ - मयूखः = (पु.) मयूखा = किरण और कील = खूटी या स्तम्भ, मयूख शब्द के ये दो अर्थ हैं। सप्तर्षिः = (पु.) उत्सव, सातऋषि = जिनके नाम इस प्रकार है। श्रीमनु, सुरमनु, श्रीनिचय, सर्वसुन्दर , जयवान् , विनय लालस और जयमित्र , ये सप्तर्षि लोक में प्रसिद्ध हैं।

वस्तु और धिष्ण शब्द के नाम

वसवः शंवरा उक्ता, देवाश्च वसवो मताः ।
नक्षत्रं धिष्ण्यमित्युक्तं , गेहं धिष्ण्यं मतं क्वचित् ॥18॥

अर्थ - वसु = (नपुं) वसु = शंवर और देव ये दो अर्थ 'वसु' शब्द के है।

धिष्ण्यं = (नपुं) नक्षत्र और घर ये दो अर्थ 'धिष्ण्य' शब्द के जानना चाहिए।

अम्बर और पयः शब्द के नाम

वासोम्बरमिति ख्यातमम्बरं च नभः स्थलम् ।
पयः सलिलमुद्दिष्टं पयः क्षीरं मतं क्वचित् ॥19॥

अर्थ - अम्बर = (नपुं) अम्बर = वस्त्र और आकाश ये दो अर्थ 'अम्बर' शब्द के हैं।

पयः = (नपुं) पयस् = पानी और दूध 'पय' शब्द के ये दो अर्थ हैं।

शिव शब्द के नाम

शिवं पानीयमुद्दिष्टं शिवं श्रेयः शिवं सुखम् ।
शिवं व्योमपतिं प्राहुः शिवं श्रेष्ठं प्रचक्षते ॥20॥

अर्थ - शिवम् = (नपुं) शिवं = पानी , कल्याण, सुख , सूर्य और श्रेष्ठ 'शिव' शब्द के ये 5 अर्थ होते हैं।

क्षर और स्यन्दन शब्द के नाम

क्षरं जलं विजानीयात् , क्वचिन्मेधं विदुः क्षरम् ।
स्यन्दनं चाम्बु निर्दिष्टं, स्यन्दनश्च महारथः ॥21॥

अर्थ - क्षरम् = शब्द (नपुं) - जल और यज्ञ इन दो अर्थों में आता है। स्यन्दन = (नपुं) अम्बु = पानी और स्यन्दन = महारथ - (बड़े रथ को स्यन्दन कहते हैं) स्यन्दन शब्द के ये दो अर्थ हैं।

कृष्ण और क्षीर शब्द के नाम

कृष्णं तमःसमाख्यातं , कृष्णश्चाधोक्षजस्तथा ।
अमृतं क्षीरमित्युक्तं , क्वचिच्चेष्टं समुद्रजम् ॥22॥

अर्थ - कृष्णं = (नपुं) तमः - अन्धकार , कृष्णः = (पु.) अधोक्षज = कृष्ण जी ये दो अर्थ कृष्ण शब्द के होते है । क्षीरं - (नपुं) = अमृत और पानी (अमृत को समुद्र से उत्पन्न हुआ भी मानते हैं।) ये दो अर्थ क्षीर शब्द के होते हैं।

शव और धृत शब्द के नाम

शवं च सलिलं प्रोक्तं, मृतमाहुः शवं तथा ।
तोयं घृतमिति प्रोक्तं , घृतं सर्पिः क्वचिद् भवेत् ॥23॥

अर्थ - शवं = (नपुं.) - सलिल , पानी , शवं , मृतक की लाश को भी शव कहते हैं। घृतं = (नपुं.) -पानी और घी , इन दो अर्थों में घृत शब्द का प्रयोग होता है।

विष और कर शब्दके नाम

पानीयं च विषं प्रोक्तं , क्वचिद्धालाहलं विषम् ।

हस्तिहस्तः करः प्रोक्तः , करो हस्तः प्रचक्ष्यते ॥24॥

अर्थ - विषं = (नपु.) - पानी और हालाहल ये दो अर्थ 'विष' शब्द के होते हैं। करः = (पु.) हाथी की सूंड को कर कहते हैं और 'हाथ' को भी 'कर' कहते हैं।

कीलाल और भुवन शब्द के नाम

कीलालं रूधिरं प्रोक्तं, नीरं चैव प्रशस्यते ।

भुवनं सलिलं प्रोक्तं, आकाशं भुवनं स्मृतम् ॥25॥

अर्थ - कीलालं = (नपुं) - खून और निर्मल पानी, (अमृत के समान देवताओं के पेय पानी को भी कीलाल कहते हैं।) ये दो अर्थ कीलाल शब्द के होते हैं।

भुवनं - (नपुं) पानी और आकाश ये दो अर्थ 'भुवन' शब्द के होते हैं।

कोमल और सदन शब्द के नाम

प्रवालं कोमलं ज्ञेयं, कोमलं स्पष्टवाचकम् ।

सदनं च स्मृतं तोयं , सदनं वेश्म उच्यते ॥26॥

अर्थ - कोमलं = (नपुं.) प्रवाल = कोंपल और स्पष्ट वचन , इन दो अर्थों में कोमल शब्द का प्रयोग होता है। सदनं = (नपुं.) पानी और घर, इन दो अर्थों में सदन शब्द का प्रयोग होता है।

सद्म और संबर शब्द के नाम

तोयं सद्मेति गदितं , निलयं सद्म निगद्यते ।

संवरं च जलं प्रोक्तं, संवरः पर्वतो भवेत् ॥27॥

अर्थ - सद्म = (नपुं.) पानी और घर ये दो अर्थ सद्म शब्द के होते हैं। संवरं = (नपुं.) जल और पर्वत ये दो अर्थ संवर शब्द के होते हैं।

संबर और इडा शब्द के नाम

संवरश्चासुरः ख्यातो, यो बिभर्ति रसां प्रियाम् ।
स्वरवाक् क्ष्मास्विडां प्राहुरिडा चाम्बर देवताम् ।।28।।

अर्थ - संवरः = (पु.) संवर - एक असुर का नाम है , जिसने प्रद्युम्न का हरण किया था । और वह एक रस विशेष को धारण करता था ।

इडा - (स्त्री.) - इडा = पृथ्वी - (डलयोरभेदः) 'डा' और "ला' मे भेद नही होता । इसलिए , यदि 'इडा' के 'डा' के स्थान पर 'ला' कर दिया जाय तो पृथ्वी अर्थ भी होता है । 'इडा' = स्वर , वचन, क्षमा , पृथ्वी, अम्बर देवता = बुध की स्त्री इतने नाम 'इडा' शब्द के होतें हैं ।

इडा और अदिति शब्द के नाम

पत्नीं चन्द्रेरिडां प्राहुरिला तत्समतां मता ।
अदितिः पृथिवी ज्ञेया, देवमाताऽदितिः क्वचित् ।।29।।

अर्थ - इडा - (स्त्री.) चन्द्रमा की पत्नी को भी इडा कहते हैं । पृथ्वी भी इला मानी जाती है ।

आदितिः - (स्त्री.) पृथ्वी और देवमाता, इन दो अर्थों में अदिति शब्द का प्रयोग होता है ।

भिदि और वृष शब्द के नाम

अध्यूढ़ा भार्या परित्यक्ता, त्वद्भिदिश्च निगद्यते ।
वृषो धर्म्मः क्वचिज्ज्ञेयो, गवामपि पतिर्वृषः ।।30।।

अर्थ - भिदिः = (पु.) सती को सत्पथ से डिगाना, भिदि कहलाता है । वृषः = (पु.) धर्म और बैल इन दो अर्थों में 'वृष' शब्द का प्रयोग होता है।

वृषन् और रोहिणेय शब्द के नाम

वृषा कर्णश्च गदितो , वृषा चोक्तः शतक्रतुः ।
रौहिणेयो बलः प्रोक्तो , रौहिणेयो बुधः क्वचित् ।।31।।

अर्थ - वृषा = (पु.) वृषन् - कर्ण , (कर्ण का दूसरा नाम वृषा भी है)। वृषा = इन्द्र इन दो अर्थों में 'वृषा ' शब्द जानना चाहिये । रौहिणेयः = (पु.) बलभद्र और बुधग्रह, इन 2 दो अर्थों में 'रौहणेय' शब्द आता हैं ।

शेष और राम शब्द के नाम

बलदेवो मतः शेषो नागो वा शेष उच्यते ।
रामस्तु लांगली ज्ञेयो, रामो दाशरथिः क्वचित् ।।32।।

अर्थ - शेषः = (पु.) बलदेव और नाग ये दो अर्थ शेष शब्द के है। रामः = (पु.) राम - (बलभद्र) को लांगली कहते हैं। राम = राजा दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र भी राम है।

रामश्च शुक्लो वर्णो, रामश्च क्षत्रनाशनः ।

अर्थ - रामः = (पु.) शुक्ल वर्ण, क्षत्रनाशनः = परशुराम , राम शब्द के ये दो अर्थ ग्रहण करना चाहिए। परशुराम ने 7 बार क्षत्रियों से रहित पृथ्वी को किया था , इसलिये परशुराम को क्षत्रनाशनः कहतें हैं।

वराह शब्द के नाम

वराहः केशवः ख्यातो, वराहो जलदः क्वचित् ।।33।।

अर्थ - वराहः = (पु.) कृष्ण और मेघ। कृष्णजी का तृतीय वराह अवतार था। वराह शब्द के निम्न लिखित अर्थ और जानना चाहिये।

वराह और अज शब्द के नाम

वराहः शूकरो ज्ञेयो, विष्णुर्मेधो हरिस्तथा ।
अजाराट्स्मरेन्दवो ज्ञेयास्त्रिनेत्रश्चाप्यजो मतः ।।34।।

अर्थ - वराहः = (पु.) शूकर , विष्णु , हरि और बादल , वराह शब्द के ये अर्थ और जानना चाहिये।

अजः - (पु.) राजा, स्मर,(काम) चन्द्रमा , शंकर निम्नलिखित श्लोक में भी 'अज' शब्द के और भी अर्थ देखे।

अज और शरीरज के नाम

अजः पशुश्च विख्यातो, तथा जौ ब्रह्म केशवौ ।
शरीरजः स्मृतो रोगः , पुत्रश्चापि शरीरजः ।।35।।

अर्थ - अजः = (पु.) पशु (बकरा), यव, ब्रह्मा और श्रीकृष्ण ये आठ अर्थ 'अज' शब्द के जानना चाहिये। शरीरजः = रोग और पुत्र ये दो अर्थ 'शरीरज' शब्द के होते हैं। क्योंकि किसी भी शब्द के आगे 'ज' शब्द जोड़ देने से उत्पन्न होना अर्थ हो जाता है।

पुष्कर और कूल शब्द के नाम

ज्ञेयं पुष्करमब्जं च नागनासाग्रमेव च ।
कूलं नभः समाख्यातं कूलं रोधः प्रचक्षते ।।36।।

अर्थ - पुष्करम् = (नपुं.) कमल , हाथी की नाक के अग्र भाग को भी पुष्कर कहते हैं। कूलम् = (नपुं.) आकाश और रोधः = नदी के तट को रोधः कहते हैं। रोधस् - (नपुं.) ये दो अर्थ 'कूल' शब्द के होतें हैं।

अनन्त शब्द के नाम

खं चानन्तमिति प्रोक्तमनन्तं च वलं क्वचित् ।
विष्णुः क्वचिदनन्तः स्यान्नागश्चानन्त उच्यते ।।37।।

अर्थ - अनन्तं = (नपु.) आकाश , अपरिमित शक्ति, विष्णु और शेषनाग ये 4 अर्थ 'अनन्त' शब्द के पु. और नपुं. दोनो लिङ्गों में जानना चाहिए।

प्रजापति के नाम

प्रजापतिः स्मृतो राजा, ब्रह्मा चापि प्रजापतिः ।
प्रजापतिः स्मृतः क्षत्ता, क्षत्ता च चर उच्यते ।।38।।

अर्थ - प्रजापति = (पु.) राजा, ब्रह्मा और क्षत्ता = मूर्ति बनाने वाला या कुम्भकार , और क्षत्ता = द्वारपाल , प्रजापति शब्द के इतने अर्थ होते हैं।

वाम शब्द के नाम

वामः पयोधरः प्रोक्तो वामः स्याद् द्रविणं हरः ।
वामश्च मदनः प्रोक्तो वामश्चप्रतिकूलके ।।39।।

अर्थ - वामः = , पयोधर = मेघः, स्त्री के स्तन , द्रविणः = धन, हर= शंकर, मदन = कामदेव , प्रतिकूल = कुटिल, वक्रप्रकृति, दुराग्रही, हठी वाम शब्द के ये नो अर्थ होते हैं।

आगोप और अंक शब्द के नाम

आगोपो गोपको ज्ञेयः, क्वचिदागोपको ध्वजः ।
उरश्चाङ्कः समाख्यातः, स्थानमङ्कः स्मृतस्तथा ।।40।।

अर्थ - आगोपः = (पु.) गोपकः = ग्वाला और ध्वज, इन दो अर्थों में

आगोपक शब्द का प्रयोग होता है। अङ्कः = (पु.) उरः = छाती और स्थान, इन दो अर्थों में 'अङ्क' शब्द का प्रयोग होता है ।

वासर और विभावसु शब्द के नाम

वासरस्तु स्मृतो नागो वासरो दिवसो मतः ।
विभावसु र्निशा ज्ञेया, गन्धर्वश्च क्वचिन्मतः ॥41॥

अर्थ - वासर = (पु.) नाग और दिवस ये दो नाम वासर शब्द के हैं। विभावसुः = रात्रि और कहीं पर 'गन्धर्व' भी माना है।

शर्बरी और सान्द्र शब्द के नाम

शर्वर्यो रात्रयः प्रोक्ताः, शर्वर्यश्च स्त्रियो मताः ।
सान्द्रं घनमिति प्रोक्तं, स्निग्धं सान्द्रं निगद्यते ॥42॥

अर्थ - शर्वरी = शब्द के (स्त्रीं) - रात्रि और स्त्री ये दो अर्थ होते हैं। सान्द्रं = (नपुं) घन = कठोर और स्निग्ध = चिकना इन दो अर्थों में 'सान्द्र' शब्द आता है।

स्व शब्द के नाम

स्वः स्वर्गस्य मतं नाम , स्वः सुखं क्वचिदुच्यते ।
स्व आत्मा चैव निर्दिष्टः, स्वः प्रोक्तो गृहमूषिकः ॥43॥

अर्थ - स्वः = (अव्यय) स्वर्ग सुख आत्मा और गृहमूषिक इन चार अर्थों में 'स्वः' शब्द का प्रयोग होता है।

ककुप् शब्द के नाम

ककुश्छन्दो विशेषज्ञो, मतः शास्त्रेपि ना ककुप् ।
ककुम्महीरुहः प्रोक्तो, ज्ञेयास्तु ककुभोदिशः ॥44॥

अर्थ - ककुः = छन्द, ककुप् = शास्त्र अर्थ में भी माना है। ककुप् = महीरु ह (वृक्ष को महीरुह कहते हैं) कुकुप् = दिशा ये 4 अर्थ 'ककुप्' शब्द के होतें हैं।

क्षय और प्लव शब्द के नाम

क्षयं वेश्म समुद्दिष्टं, क्षयं रोगं प्रचक्षते ।
जलदस्तु प्लवो ज्ञेयः प्लवो ज्ञेयस्तथोडुपः ॥45॥

अर्थ - क्षयं = (नपुं.) वेश्म = घर, क्षय = रोग, ये दो अर्थ 'क्षय' शब्द के जानना चाहिये। प्लवः = (पु.) मेघ और उडुपः = नाव ये दो अर्थ 'प्लव' शब्द के जानना चाहिये।

प्रसाद और घन शब्द के नाम

प्रासादो मण्डपः प्रोक्तो , विहारश्चापि कथ्यते ।
घनं घनं विजानीयाद् , घनं विपुलमुच्यते ॥46॥

अर्थ - प्रासादः = (पु.) मण्डप और घूमना (विहार) इन दो अर्थों में 'प्रासाद' शब्द आता है। घनम् = (नपुं.) मेघ और अधिक या बहुलता को भी 'घन' कहते हैं।

घन और वरुथ शब्द के नाम

प्रयुज्यते च कस्मिंश्चिद् , घनं संघातवाद्ययोः ।
बरूथं स्यन्दनाग्रं स्याद् वरूथं वेश्म उच्यते ॥47॥

अर्थ - घन शब्द को कोई संघात = समूह और वाद्य = वाजा , इन अर्थों में प्रयोग करते हैं।

वरुथम् = (नपुं.) स्यन्दन = रथ का अग्र भाग और वेश्म = घर, इन दो अर्थों में 'वरुथ' शब्द का प्रयोग जानना चाहिये।

वर्म और असुर शब्द के नाम

चमूश्च वर्म सहसा, प्रवदन्ति मनीषिणः ।
असुराश्च सुरा ज्ञेयाः क्वचिद्देवारयोऽसुराः ॥48॥

अर्थ - 'वर्म' शब्द का अर्थ विद्वान् लोग 'सेना' करते हैं।

असुरः - (पु.) देव और देव का शत्रु (देवों के शत्रु को भी असुर कहते हैं) ये दो नाम 'असुर' शब्द के जानना चाहिये।

नाग और गन्धर्व के नाम

नागाश्च द्विरदा ज्ञेयाः पन्नगाश्च क्वचिन्मताः ।
गन्धर्वश्च तथा वायुः , क्वचित् स्याद् देवगायनः ॥49॥

अर्थ - नागः = (पु.) नाग = हाथी और सर्प ये दो अर्थ नाग शब्द के जानना चाहिये। गन्धर्व = (पु.) गन्धर्व = हवा और देवों में गाने वाले देव गन्धर्व कहलातें हैं। ये दो नाम गन्धर्व शब्द के जानना चाहिये।

तार्क्ष्य और वालेय के नाम

तार्क्ष्यो हयः समुदिष्टस्तार्क्ष्यश्चापि पतत्रिराट् ।
बालेयानसुरानाहु र्बालेयांश्च क्वचित् खरान् ।।50।।

अर्थ - तार्क्ष्यः = (पु.) घोड़ा और गरुण, इन दो अर्थों में 'तार्क्ष्य' शब्द जानना चाहिये। बालेयः = (पु.) असुर और गधा इन 2 अर्थों में बालेय 'शब्द' जानना चाहिये।

तृणी और शिखरी शब्द के नाम

तृणी वनस्पतिः प्रोक्ता , क्वचिदार्द्राश्च कथ्यते ।
शिखरी वृक्ष उद्दिष्टः शिखरी पर्वतः स्मृतः ।।51।।

अर्थ - तृणी = (स्त्री.) वनस्पति और आर्द्रा = गीला ये दो अर्थ 'तृणी' शब्द के जानना चाहिये। शिखरी = (पु.) शिखरिन् = वृक्ष, और पर्वत, इन अर्थों में 'शिखरी' शब्द जानना चाहिये।

द्विज और मलिम्लुच शब्द के नाम

द्विजो विप्रश्च दन्तश्च द्विजः पक्षी निगद्यते ।
चौरो मलिम्लुचो ज्ञेयो, वातश्चापि मलिम्लुचः ।।52।।

अर्थ - द्विजः = (पु.) ब्राह्मण, दाँत और पक्षी इतने अर्थों में 'द्विज' शब्द का प्रयोग होता हैं। मलिम्लुचः = (पु.) चोर और हवा, इन दो अर्थों में मलिम्लुच शब्द जानना चाहिये।

आत्मज और कीनाश के नाम

आत्मजं रक्तमुद्दिष्टं सुतः कामस्तथैव च ।
कीनाशः मृतको ज्ञेयः, कीनाशश्चापि राक्षसः ।।53।।
कीनाशोऽग्निः कृतघ्नश्च, कृपणो यम एव च ।
कीनाशः कर्षको ज्ञेयः , कीनाशश्च वृकोदरः ।।54।।

अर्थ - आत्मजम् = खून, पुत्र और काम ये , तीन अर्थ 'आत्मज' शब्द के होते हैं। कीनाशः = (पु.) मृतक , राक्षस, अग्नि, कृतघ्न, कृपण = कन्जूस, यम = यमराज, कर्षक = खेत जोतने वाला और वृकोदर = भीम ये सात अर्थ कीनाश शब्द के जानना चाहिये।

अवदात और ज्योति के नाम

अवदातं प्रधानं स्यादवदातं च पाण्डुरम् ।
ज्योतिर्ल्लोचनमुद्दिष्टं ज्योतिर्नक्षत्रमुच्यते ॥55॥

अर्थ - अवदातं = (नपुं.) प्रधान = मुख्य और पाण्डुर = सफेद 'अवदात' शब्द के दो अर्थ हैं। ज्योतिः = (नपुं.) - लोचन = आँख और नक्षत्र ये दो अर्थ 'ज्योति' शब्द के जानना चाहिये।

अब्द और बलाहक के नाम

अब्दः सम्वत्सरो ज्ञेयो, मेघश्चापि क्वचिन्मतः ।
बलाहका महामेघाः, शिखरी च बलाहकः ॥56॥

अर्थ - अब्दः (पु.) वर्ष और मेघ ये 2 अर्थ अब्द शब्द के जानना चाहिये। बलाहकः = (पु.) महामेघ = सघन मेघ और शिखरी = पर्वत ये 2 अर्थ 'बलाहक' शब्द के जानना चाहिये ॥56॥

तोयद और जीमूत के नाम

तोयदं जलदं प्राहुस्तोयदं कथ्यते घृतम् ।
जीमूतश्च मतो नागो, जीमूतः क्वचिदम्बुदः ॥57॥

अर्थ - तोयदम् = (नपुं.) मेघ और घी, ये दो अर्थ 'तोयद' शब्द के जानना चाहिये। जीमूत = (पु.) नाग = हाथी , सर्प और अम्बुद = मेघ ये तीन अर्थ 'जीमूत' शब्द के जानना चाहिये ।

पौलस्त्य और शुचिकृत् के नाम

पौलस्त्यं तु मतं युद्धं पौलस्त्यं पौरूषं विदुः ।
शुचिकृद्रजकश्चैव प्रोक्तो नित्यं बुधै रसः ॥58॥

अर्थ - पौलस्त्यम् = (नपुं.) युद्ध और पौरुष = पुरुषार्थ, ये दो अर्थ पौलस्त्य शब्द के जानना चाहिये । शुचिकृत् = (पु.) रजक = धोबी और रस 'शुचिकृत्' शब्द के ये दो अर्थ है ऐसा विद्वानों नें कहा हैं।

ज्योति और प्रधान के नाम

ज्योतिश्च गदितो वह्निः , काव्येषु मुनिपुङ्गवैः ।
प्रधानं सज्जनं ज्ञेयं , प्रधानं श्वेतमुच्यते ॥59॥

अर्थ - ज्योतिः = (नपुं.) शब्द का अर्थ- अग्नि , काव्यों में श्रेष्ठ मुनियों के द्वारा कहा गया है। प्रधानं = (नपुं.) सज्जन ,और श्वेत = सफेद ये दो अर्थ 'प्रधान' शब्द के जानना चाहिये।

पर्यजन्य और शिलीमुख के नाम

पर्जन्यं जलदं प्राहुः पर्जन्यं तु शतक्रतुः ।
शिलीमुखाः स्मृता बाणा, भ्रमराश्च शिलीमुखाः ।60।

अर्थ - पर्जन्यम् = (नपुं.) मेघ और शतक्रतुः = इन्द्र ये दो अर्थ 'पर्जन्य' शब्द के जानना चाहिये।

शिलीमुखः = (पु.) वाण और भ्रमर = भौरा ये दो अर्थ शिलीमुख शब्द के जानना चाहिये।

लेखा और अम्बरीष के नाम

लेखा सीमेति विज्ञेया, लेखा चित्रकृतौ मता ।
अम्बरीषं क्वचिद् भ्राष्टं क्वचिद् युद्धं निगद्यते ।।61।।

अर्थ - लेखा = (स्त्री.) सीमा और चित्रकृति = चित्र बनाने वाला ये दो अर्थ लेखा शब्द के होते हैं।

अम्बरीषम् = (नपुं.) भ्राष्ट्र = भाड (जिस बर्तन में चनादि अनाज सेंका जाता हैं उसे भाड़ कहतें हैं) कही पर अम्बरीष = युद्ध कहा जाता हैं ये दो अर्थ अम्बरीष शब्द के जानना चाहिये।

पुंस और असु के नाम

पुस्त्वं चापि मतं युद्धं पुस्त्वं पौरूषमुच्यते ।
विद्वांसोऽरिपवो ज्ञेया विद्वांसस्त्वसवोमताः ।।62।।

अर्थ - पुस्त्वम् = (नपुं.) युद्ध, और पुरुषार्थ , ये दो अर्थ पुस्त्व शब्द के जानना चाहिये।

विद्वान् = (पु.), सज्जन और असु = अध्यात्म जीवन ये दो अर्थ 'असु' शब्द के होते हैं।

माया और मधु के नाम

मायाऽविद्येति विज्ञेया, क्वचिन्माया तु सांवरी ।
मधु द्राक्षीति विज्ञेया, क्वचित्स्यान्मधुमाक्षिकम् ।।63।।

अर्थ - माया = (स्त्री.) अविद्या = अज्ञान और सांवरी = जादूगरनी ये दो अर्थ 'माया' शब्द के जानना चाहिये। मधु = (नपुं.) द्राक्षी = दाख या अंगूर और माक्षिकम् = शहद ये दो अर्थ 'मधु' शब्द के जानना चाहिये।

मधु और खं के नाम

मधु चाम्बु समाख्यातं सुराश्च मधुसंज्ञका ।
खं रंध्रमिति विज्ञेयं खं गृहं नभ एव च ॥64॥
खमिन्द्रियमिति ख्यातं खं च नक्षत्रमुच्यते ।
धार्तराष्ट्रो महाहंसा, धृतराष्ट्रसुताः क्वचित् ॥65॥

अर्थ - मधु = अम्बु = (पानी) और सुरा = मधु नाम का देव, इस प्रकार 'मधु' शब्द के दो अर्थ जानना चाहिये। खम् = (नपुं.) छिद्र , घर, आकाश , इन्द्रिय और नक्षत्र ये पाँच अर्थ 'खम्' शब्द के जानना चाहिये।

धार्तराष्ट्रः = (पु.) महाहंस और कहीं पर धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम भी धार्तराष्ट्र है ये दो अर्थ धार्तराष्ट्र शब्द के जानना चाहिये।

प्रभाकर और सफेद के नाम

प्रभाकरो मतः सूर्यो वह्निश्चापि प्रभाकरः ।
सितं शुक्लमिति ज्ञेयं सितं बद्धं प्रचक्षते ॥66॥

अर्थ - प्रभाकरः = (पु.) सूर्य और अग्नि ये 2 नाम प्रभाकर के जानना चाहिये।

सितम् = (नपुं.) , शुक्ल = सफेद और बद्धं = बँधा हुआ ये दो नाम सित शब्द के जानना चाहिये।

काला और नकुल के नाम

असितं कृष्णमित्युक्तं अशितं भक्षितं स्मृतम् ।
वभ्रुस्तु नकुलो ज्ञेयः पाण्डवो नकुलस्तथा ॥67॥

अर्थ - असितम् = (नपु.) कृष्ण = काला , अशितं - भक्षितं = खाया हुआ ये दो अर्थ असित शब्द के होते है। नकुलः = (पु.) नेवला और पाण्डवः = (पाँचों पाण्डवों में एक पाण्डव का नाम भी नकुल था) ये दो अर्थ 'नकुल' शब्द के जानना चाहिये।

बिल्ली और यम के नाम

त्रिशङ्कु माहुर्मार्जारमृषश्चापि तथेष्यते ।
यमस्तु वायसो ज्ञेयो, यमः प्रेताधिपस्तथा ॥68॥

अर्थ - त्रिशंकु = (पु.) मार्जार = बिल्ली और मृषः = झूठ ये दो अर्थ त्रिशंकु शब्द के जानना चाहिये , यमः = (पु.) वायस = कौआ और प्रेताधिप= (पु.) यमराज ये दो अर्थ 'यम' शब्द के जानना चाहिये ।

लक्ष्मण के नाम

लक्ष्मणं सारसं विद्यात् तथा दशरथात्मजम् ।
लक्ष्म चन्द्रस्य कार्ष्ण्यं स्याल्लक्ष्मः केतुः प्रकीर्तितः ।69।

अर्थ - लक्ष्मणम् = (नपुं.) सारसं = सारसपक्षी और दशरथात्मज = राजादशरथ के पुत्र का नाम भी लक्ष्मण था । लक्ष्म = (नपुं.) , चन्द्रमा की कृष्णता को लक्ष्म कहते है और लक्ष्मः = केतु (ध्वजा) इतने अर्थ लक्ष्म शब्द के जानना चाहिये ।

दक्ष के नाम

केतुश्चापि मतः काव्ये लक्ष्मेति मुनिपुङ्गवैः ।
आरूणेयः स्मृतो दक्षो दक्षश्चाचेतसः क्वचित् ॥70॥

अर्थ - मुनियों ने काव्य में लक्ष्म का ध्वजा अर्थ भी माना है ।

दक्षः = आरूणेयः और अचेतस ये दो अर्थ 'दक्ष' शब्द के जानना चाहिये ।

निपुण और आदित्य के नाम

आशुकारी भवेद्दक्षः स्यादली तोमरः स्मृतः ।
आदित्यं च रविं विद्याद् दैत्यश्चाप्यदितेः सुतः ।71।

अर्थ - आशुकारी = (पु.) दक्षः (निपुण), अली = (भौरा) और तोमरः (बाण), ये तीन नाम आशुकारी शब्द के जानना चाहिए । आदित्यं = (नपुं.) रवि (सूर्य) और अदिति का पुत्र दैत्य भी आदित्य कहलाता है ।

रोग और नितम्ब के नाम

रोगो रजस्तथा रेणू , रजो लोहितमुच्यते ।
स्कन्धो नितम्बसंज्ञः स्यान्नितम्बं जघनं तटम् ।72।

अर्थ - रजः = (नपुं.) - रोग धूलि और लोहित (खून) ये रज शब्द के 3 नाम जानना चाहिए। नितम्बं = (नपुं.) - स्कन्ध और जघनतट को भी नितम्ब कहते हैं।

वसु और सारंग के नाम

हेमवस्त्विति विज्ञेयं , वसु तेजो निगद्यते ।
सारङ्गं चातकं प्राहुः स्वर्णे चापि सितासिती ॥73॥

अर्थ - वसु = स्वर्ण और तेजः (किरण), ये दो नाम 'वसु' शब्द के जानना चाहिए। सारंगम् = (नपुं.) चातक = पपीहा (कवि समय के अनुसार यह केवल वर्षाऋतु में ही रहता है) स्वर्ण और चितकवरा ये तीन नाम सारङ्ग शब्द के जानना चाहिये।

कदली और मेघ के नाम

रम्भाश्च कदलीः प्राहू रम्भा स्वर्गाङ्गना मता।
ग्रावाणो गिरिजाः प्रोक्ता मेघाश्चापि मनीषिभिः ।74।

अर्थ - रम्भा = (स्त्री) कदली = केला का वृक्ष और स्वर्गाङ्गना = देवाङ्गना ये दो अर्थ 'रम्भा' शब्द के जानना चाहिए। ग्रावाणः = (पु.) गिरिजाः = पहाड और मेघ ये दो अर्थ ग्रावाण शब्द के जानना चाहिये।

आत्मा और कर्ष के नाम

अक्ष आत्मेति विज्ञेयः केचिदाहु र्विभीतकम् ।
ज्ञेयमिन्द्रियमक्षं च शाकटं कर्ष एव च ॥75॥

अक्षः = (पु.) आत्मा, विभीतक = बहेडा का पौधा, गाडी का भौंरा इन्द्रिय और कर्ष = सोलह माशे की एक तौल है जिसको कर्ष कहते हैं ये पाँच अर्थ अक्ष शब्द के जानना चाहिये।

पांसा और कमल के नाम

अक्षं च पाशकं विद्याद्व्यावहारिकमेव च ।
पद्ममिन्द्रियमित्युक्तं पद्मं तामरसं विदुः ॥76॥

अक्षम् = पांसा, और व्यवहारिकम् = कानूनी कार्य विधि ये सभी 'अक्ष' शब्द के अर्थ जानना चाहिये, पद्मम् = (नपुं.) कमल और इन्द्रिय ये दो अर्थ 'पद्म' शब्द के जानना चाहिये।

आयतन और पुष्प के नाम

चैत्यमायतनं प्रोक्तं , नीडमायतनं तथा ।
पुष्पं लोहितमुद्दिष्टं पुष्पं च कुसुमं तथा ।।77।।

आयतनं = (नपुं.) चैत्यं = पुण्यस्थान , नीड = विश्रामस्थल या घोसला ये दो अर्थ आयतन शब्द के जानना चाहिए ।

पुष्पं = (नपुं.) लोहितं = लालरंग और कुसुम = फूल ये दो अर्थ पुष्प शब्द के जानना चाहिये ।

वाजी के नाम

वाजी तुरङ्गमो ज्ञेयो वाजी श्येनो विहङ्गमः ।
विष्णविन्द्र सिंहमण्डूकचन्द्रादित्यास्तु बानरान् ।78।

अर्थ - वाजी = (पु.) वाजिन् = घोडा, श्येन = वाज, विहङ्गमः = पक्षी, विष्णु, इन्द्र , सिंह, मण्डूक = मेढ़क, चन्द्रमा , सूर्य और बन्दर ये 10 अर्थ वाजिन् शब्द के जानना चाहिये ।

हरि के नाम

वभ्रुशिवानिलहयान् हरीनिच्छन्ति कोविदाः ।

अर्थ - हरिः = (पु.) वभ्रुः - भौह, शिव , अनिल = हवा , और हय = घोडा ये हरि शब्द के 5 नाम जानना चाहिये ।

ललाम और शुक्रा के नाम

पुरुषध्वज-लिङ्गेषु-हयभूषण-लक्ष्मषु ।।79।।
रामशेषावनीन्द्रेषु ललामं नवसु स्मृतम् ।
शुक्रा स्मृताक्षि दोषोना लवली मञ्जरी तथा ।।80।।

अर्थ - ललामं = (नपुं.) पुरुष , पताका, चिह्न, घोडा, आभूषण, लक्षण, सुन्दर , शेष = शेषनाग और राजा ये 9 अर्थ ललाम शब्द के जानना चाहिये । शुक्रा = (स्त्री.) अक्षिदोष = नेत्रविकार , लवली और मञ्जरी = मोर (आम की मञ्जरी को मोर कहते हैं), इतने अर्थ शुक्रा शब्द के जानना चाहिये ।

वक्रवक्त्र और पुलिन के नाम

वक्रवक्त्रः शुको ज्ञेयः कोकिला वचन प्रिया ।
पुलिनं जल विच्छेदः, पङ्कजः स्यात् कुशेशयम् ।।81।।

अर्थ - वक्रवक्त्र = (पु.) - शुक = तोता । वचनप्रिया = (स्त्री.) कोयल का नाम है पुलिनं = (नपुं.) पुल या सेतु को कहते हैं तथा कुशेशयम् = कमल का नाम जानना चाहिये।

पाप, शीघ्र और प्रातः काल के नाम

रतं पापमिति ज्ञेयं सत्वरं शीघमुच्यते ।
पिशङ्गं रोचनाभं स्यान् मेचकस्तिलको मतः ॥82॥

अर्थ - रतं = (नपुं.) पाप कहलाता है सत्वरं = (नपुं.) शीघ्र का वाची है, पिशङ्गं = (नपुं.) प्रातः काल के सूर्य की किरणों को 'रोचनाभ' कहते हैं। मेचकः = (पु.) तिलक कहलाता है।

तिलक और निकष के नाम

ललाटेऽवस्थितं चिह्नं विद्वद्भिस्तिलकं मतम् ।
परिचर्यं च कटकं निकषस्तु कषो मतः ॥83॥

अर्थ - तिलकं = (नपुं.) तिलक = ललाट पर स्थित चिह्न को विद्वान् तिलक कहते हैं, परिचर्य = कटक कहलाता है, निकषः = कसौटी अर्थ में आता है।

मञ्जूष और केसरि के नाम

नानारत्नैरूपचिता मञ्जूष रागिणी स्मृता ।
दिनकृद्वाजिसिंहेषु केसरित्वं विधीयते ॥84॥

अर्थ - नाना रत्नों से बनाये हुये सन्दूक या मञ्जूष को 'रागिणी' कहते हैं।

केसरि = सूर्य, घोडा और सिंह, इन तीन अर्थों में केसरी शब्द का प्रयोग किया जाता है।

अलात और कल के नाम

अव्यक्तो मधुरः शब्दः कल इत्यभिधीयते ।
अलातमुल्मुकं ज्ञेयं, छेदो नाम भयङ्करः ॥85॥

अर्थ - कलः = (पु.) अव्यक्त और मधुर शब्द को 'कल' कहते हैं।

अलातम् = (नपुं.) उल्मुकं = जलती हुयी लकड़ी और मसाल अर्थ में आता है , छेदः (पु.) = भयंकर अर्थ में आता है।

भाव और विलास के नाम

भावः श्रृङ्गारमाधुर्य भावोऽवस्था प्ररूपणम् ।
विलासः कामजो दोषस्तदेव ललितं मतम् ॥86॥

अर्थ - भावः (पु.)= श्रृंगार, माधुर्य = मधुर श्रृंगार और अवस्था अर्थ में आता है, विलास (पु.)= कामजा दोषः (काम से उत्पन्न होने वाले दोष को 'विलास' कहते हैं) उसी को 'ललित' भी कहते है।

कवन्ध और पगड़ी के नाम

उत्तमाङ्ग-बिना-देहं-कवन्धं चेति शस्यते ।
शिरसो वेष्टनं यद्वै, तदुष्णीयं निगद्यते ॥87॥

अर्थ - कबन्धम् = (नपुं.) - शिर के बिना 'धड' मात्र को कबन्ध कहते हैं।
उष्णीषं = (नपुं.) - पगड़ी (शिर के वेष्टन को 'उष्णीष' कहते हैं)।

मण्डूक के नाम

आहतं समदीर्घं स्यान्निविडं पीडितोन्नतम् ? ।
मण्डूको भेक संज्ञः स्याद् वर्षाभूश्चातको मतः ॥88॥

अर्थ - मण्डूक - (पु.) और भेक ये दोनो मेंढक के नाम है।
तथा चातक (पु.) को वर्षाभू कहते है।

शिवा, शंकर और किसान के नाम

शिवा पिङ्गवती ज्ञेया, विशालं सवलं मतम्।
दुश्चर्मा शिपिविष्टः, स्यात्कर्षकस्तु कृषीबलः ॥89॥

अर्थ - शिवा = (स्त्री.) - पिङ्गवती = पार्वती को कहते है , विशालं = (नपुं.)-सवल कहलाता है, दुश्चर्मा और शिपीविष्ट ये दो शंकर के नाम है , कर्षकः और (पु.) कृषीवल ये दो किसान के नाम हैं।

कानीन और उत्कृष्ट के नाम

कन्याजातश्च कानीनो षण्डः क्लीव इति स्मृतः ।
उत्कृष्टः श्वसुरः स्यातां, क्लिष्टमव्यक्तवाचकम् ।90।

अर्थ - कानीनः = (पु.) कानीन = अविवाहित स्त्री के पुत्र को कानीन कहते है, जैसे व्यास और कर्ण। षण्डः = (पु.), क्लीवः = नपुंसक या शक्तिहीन का नाम है।

श्वसुर उत्कृष्ट माना जाता है तथा अव्यक्त वचनो को क्लिष्ट कहते हैं।

हस्तिदाँत और हस्ति बंधन के नाम

रदनो हस्तिदन्तः स्याद् दानं कटकसंज्ञितम्।
तोदनं चाङ्कुशं विद्यादालानं हस्तिबन्धनम् ॥91॥

अर्थ - रदनः = (पु.) हस्तिदन्तः = हाथी का दाँत कहलाता है, दानं = कटक = मदोन्मत्त हाथी के मस्तक से चूने वाला रस 'दान' कहलाता है, तोदनं = अंकुश का नाम है, आलानम् = (नपुं.) हस्तिबन्धनम् = हाथी बाँधने के खूटें को आलान कहते हैं।

घनाघन और बुद्धि के नाम

घनाघनः इति ख्यातः, शास्त्रेष्वधिकपौरूषः।
अपाचीनं मनोज्ञं च बुद्धिर्ज्ञेया तु शेमुषी ॥92॥

अर्थ - घनाघनः = (पु.) - अधिकपौरुषः = कर्मठ, दक्षिणी और मनोहर ये तीन अर्थ घनाघन शब्द के जानना चाहिये, शेमुषी = बुद्धि को कहते हैं।

वृक्ष और नदी के नाम

अर्कस्तु पादपे ज्ञेयो, नदी स्यात् फेनवाहिनी।
अश्वारोहो मरूद्यानोऽश्वानां ह्दयेध्वनिः ॥93॥

अर्थ - अर्कः = (पु.) पादपे = आक के पौधे को 'अर्क' कहते हैं। फेनवाहिनी = (स्त्री.) नदी का नाम है। घोडे के हृदय की ध्वनि को मरुद्यान कहते हैं।

रुदन और कच्चे मांस के नाम

आक्रन्द इति विज्ञेयः खुराश्च शफ संज्ञिता।
आम मांसं भवेत्क्रव्यं, पक्वं पिशितमुच्यते ॥94॥

अर्थ - आक्रन्दः = (पु.) रोना और खुर = सुम या एक प्रकार के सुगन्धित द्रव्य या खाट का पाया कहलाता है , शफः = (पु.) सुम घोड़े की टाप या वृक्ष की जड को शफ कहते हैं।

क्रव्यं = (नपुं.) - आममासं = कच्चा मांस , क्रव्य कहलाता है।

पक्वं = (नपुं.) पिशित - पके मांस को पिशित कहते हैं।

मोती के नाम

शुष्कं तु विरसं ज्ञेयं मृष्टं सरसमुच्यते ।
शङ्खजं शुक्तिजं चैव वाराहं तिमिमौक्तिकम् ॥95॥

अर्थ - शुष्कं = (नपुं.) विरस = रस हीन या सूखा। मृष्टं = (नपुं.) सरस = रस से सहित या गीला। मौक्तिकम् = (नपुं.) शंख , शुक्ति , बराह = सूअर, तिमि = मछली इन चार वस्तुओं से मोती उत्पन्न होता है।

बाँस, मेघ और चतुर के नाम

वंशादाशी विषान् नागाज्जीमूताच्च तथाष्टमम् ।
लोकज्ञो दक्षिणो ज्ञेयो, दक्षिणश्चतुरः स्मृतः ॥96॥

अर्थ - वंश = बाँस से, नाग = हाथी से या, सर्प से (मणया साँप से), जीमूत = मेघ से एवं मछली से (स्वाति नक्षत्र में मेघ का पानी यदि मछली के मुख मे चला जाय तो वह मोती बन जाता है) ऊपरि कथित चार , अधोकथित 4 ये 8 नाम मोती के उत्पन्न होने के स्थान हैं।

दक्षिणः = (पु.) लोकज्ञः = देशकाल की बात को जाननेवाला दक्षिण कहलाता है।

दक्षिण = (पु.) चतुरः = निपुण अर्थ में आता है जैसे 'दक्षिणः गाथकः कुशलः गायकः इत्यर्थः।

आकूत और मुख के नाम

आकूतं तु मतं विद्यात् , कण्टकं गहनं मतम् ।
आननं चाकुले नेत्रे चिकुरं चापि शस्यते ॥97॥

अर्थ - आकूतम् = (नपुं.) मतं = अभिप्राय को कहते हैं , कण्टकं =गहन (काँटा या जंगल), आननं = (नपुं.) आकुल= नेत्र, चिकुर = बाल इतने अर्थों में आनन शब्द का प्रयोग होता है।

श्याम, कपिल , दूर के नाम

पापः श्यामः इति प्रोक्तो वभ्रुस्तु कपिलो मतः ।
स्थविष्टं स्थावरे चैव , दविष्टं दूरमुच्यते ॥98॥

अर्थ - श्यामः = (पु.) पाप कहलाता है , वभ्रुः = कपिल - भूरा रंग, का नाम है स्थविष्टं = स्थावर वृद्ध को कहते हैं , दविष्टं = (नपुं.) - अत्यन्त दूर अर्थ में जानना चाहिये ।

श्रेष्ठ और स्नेह के नाम

परमेष्ठी मतः श्रेष्ठः, प्रेम प्रियमुदाहृतम् ।
प्रकाशः स्त्री गृहेरक्तः, शैलूष इति संज्ञितः ॥99॥

अर्थ - श्रेष्ठः = (पु.) - परमेष्ठी = (परमे पदे तिष्ठति इति परमेष्ठी), श्रेष्ठ पुरुष, प्रेम = (नपुं.) प्रिय, स्नेही। शैलूषः = (पु.) स्त्रीगृह मे स्पष्ट रूप से आसक्त पुरुष को शेलूष कहते हैं या अभिनेता भी शैलूष कहलाता है।

चर्मकार नाई और लावण्य के नाम

पदकृच्चर्मकारः स्यान्नापितस्त्वजयः स्मृतः ।
लावण्यमाहुर्माधुर्यं चित्रं च शुभकर्मजम् ॥100॥

अर्थ - पदकृत् = (पु.) चर्मकारः = हरिजन (चमार) का नाम है , नापितः = (पु.) अजयः = (न जयः इति अजयः) नाई लावण्यम् = (नपुं.) मार्धुय को कहते हैं , मनोहर, चित्र, शुभकर्मजम् = अच्छे कर्म से उत्पन्न , ये तीन नाम 'लावण्य' शब्द के जानना चाहिये ।

रोग के नाम

व्याधयश्चामयाः प्रोक्ताः, पानीयं तु समुच्चयः ।
अधयस्तु स्मृताः प्राज्ञैश्चित्तोत्पन्ना उपद्रवाः ॥101॥

अर्थ - व्याधिः = (पु.) आमय = रोग, पानीयं = (नपुं.) समुच्चय वाचक , आधिः = (पु.) मन से उत्पन्न होने वाले विकार को 'आधि' कहते हैं।

वेग और क्यारी के नाम

रंहो वेगः समाख्यातः, सत्रं सच्चरितं स्मृतम् ।
आलबालं स्मृतं सद्भिरपां वेगनिवारणम् ॥102॥

अर्थ - रंहो = (पु.) - वेग = चाल, आतुरता, प्रचण्डता, उत्कटता और उग्रता ये सभी 'वेग' शब्द के पर्यायवाची शब्द है। सत्रं = (नपुं.) सच्चरित्र = सदाचार कहलाता है आलवालं = (नपुं.) क्यारी, पानी के वेग को निवारण करने वाले को सज्जन पुरुष 'आलवाल' कहते हैं।

चिड़िया के नाम

चटकः कलविङ्कः स्यात् तुल्यं सदृशमुच्यते ।
किलासं पाण्डुरं ज्ञेयं , दोला प्रेङ्खेति शस्यते ॥103॥

अर्थ - कलविङ्कः = (पु.), चटकः = चिड़िया। तुल्यं = (नपुं.) सदृशं = समानता, किलासं = (नपुं.) पाण्डुर = सफेद और दोला, प्रेङ्ख = गमन अर्थ में जानना चाहिये।

मंदिर , इन्द्र और युद्ध के नाम

मंदिरं नगरं ज्ञेयं , निलयं चापि मंदिरम् ।
सहस्रनयनोऽगारिः प्रधनं युद्धमुच्यते ॥104॥

अर्थ - मंदिरम् = (नपुं.) नगर और निलय = घर ये दो अर्थ मंदिर शब्द के होते हैं , अगारिः = (पु.) सहस्रनयन = इन्द्र और प्रधनं = (नपुं.) युद्ध अर्थ में जानना चाहिये।

हरित, नीलारंग, बैल और भैंसा के नाम

पलाशो हरितो वर्णो, मेचको नीलपिञ्जरः ।
उक्षाणं वृषभं विद्याल्लुलायो महिषो मतः ॥105॥

अर्थ - पलाशः = (पु.) हरित वर्ण को पलाश कहते हैं। मेचकः = नील पिञ्जर= नीलारंग , या ललाई लिये हुये खाकी रंग को नील पिञ्जर कहते हैं , उक्षाणम् = (नपुं.) वृषभ = बैल। लुलायः = (पु.) महिष = भैसा अर्थ में जानना चाहिये।

बंध्यास्त्री और बाँस के नाम

उखा वंध्या वसा वेहत् पृष्ठौही गीर्भिणी हि या ।
व्याख्यातो मस्करो वेणुस्त्वचिसारः परिकीर्तितः॥106॥

अर्थ - उखा - (स्त्री.) बन्ध्या, वसा, वेहत् ये तीन बन्ध्या स्त्री के नाम है।

गर्भिणी स्त्री को (स्त्री.) पृष्ठौही कहते हैं , मस्कर, त्वचिसार और वेणुः (पु.) ये तीन बाँस के नाम है।

काम और पाप के नाम

हिलं कामं शपं चैव रोषमाहुर्मनीषिणः ।
कलभोऽल्पवयो नागः कलुषं चाविलं मतम् ॥107॥

अर्थ - हिलम् = (नपुं.) काम, शाप और रोष = क्रोध, ये तीन नाम हिल शब्द के हैं। कलभः = (पु.) अल्प उम्र वाले हाथी को कलभ कहते हैं। आविलं = (नपुं.) - कलुष = पाप, माना गया है ।

राजा और रतन के नाम

वृजिनं कुटिलं विद्यात्सम्राट् राजा च भूभुजौ ।
रत्नं वज्रं विजानीयात् त्रियामा क्षणदा-मता ॥108॥

अर्थ - वृजिनम् = (नपुं.) - कुटिल = पाप या टेडी चाल जानना चाहिए, सम्राट और भूभुज ये दो राजा के नाम है , रत्नं = (नपुं.) वज्र कहलाता है , क्षणदा और त्रियामा ये दो शब्द रात्रि अर्थ में जानना चाहिये।

दीर्घ और बहुत के नाम

दीर्घं प्रांशुं विजानीयात् , ह्रस्वं नीचकमुच्यते ।
भूरि प्रभूतमुद्दिष्टमभितः सर्ववाचकम् ॥109॥

अर्थ - प्रांशुम् = (नपुं.) दीर्घ = बड़ा या लम्बा , नीचकम् (नपुं.) = ह्रस्व या छोटा , प्रभूतम् = भूरि (बहुत) , अभित = (अव्यय) सर्ववाचक चारो ओर के अर्थ में जानना चाहिये।

हवा और प्रियवाक्य के नाम

पवनश्चानिलो ज्ञेयः पवनश्चाधमोजनः ।
प्रियवाक्यो भवेदार्यः स्नातश्च परिकीर्तितः ॥110॥

अर्थ - पवनः = (पु.) अनिल = हवा, पवन - अधमोजनः = नीच पुरुष, ये दो नाम पवन शब्द के होते हैं, प्रियवाक्यः = (पु.) आर्य = सज्जन और स्नात ये दो नाम प्रियवाक्य शब्द के जानना चाहिये।

बाजा के नाम

आडम्बरश्च पटहो व्यञ्जनं बोधनं मतम् ।
विपंची वल्लकी ख्याता बीणा चैव निगद्यते ॥111॥

अर्थ - आडम्वरः = (पु.) पटह = बाजा, व्यञ्जन और बोधन ये तीन नाम आडम्बर शब्द के जानना चाहिये , बिपंची = बल्लकी (बजाने का बाजा) और वीणा ये दो नाम विपंची शब्द के जानना चाहिये ।

मालती के नाम

मालती सुमना ज्ञेया सुमना मुदितो जनः ।
वल्लरी मञ्जरी ख्याता, प्रपाऽप्शाला प्रकीर्तिताः ॥112॥

अर्थ - सुमना = मालती - मालती का पुष्प और विद्वान् ये दो नाम 'सुमना' शब्द के जानना चाहिये , मञ्जरी = वल्लरी = लता , प्रपा = अप्शाला (पानी की प्याऊं) अर्थ में जानना चाहिये ।

आयु के नाम

आयुर्निरुच्यते तोयं तेन जीवति पद्मकम् ।
तस्य पत्राक्षिमानेन रामो राजीव लोचनः ॥113॥

अर्थ - आयुः = (नपुं.) तोयं = पानी, (पानी का नाम जीवन भी है , इसलिये पानी को आयु भी कहते हैं।) पानी में जो जीवित रहे या पैदा हो उसे कमल कहते हैं पत्र = अक्षि - आँखों की पलक को पत्र कहते हैं। रामः = राजीवलोचन (राम कमल जैसी आँखों वाले थे इसलिये उनका नाम राजीवलोचन पड़ा था)

उत्कृत्य कवचं देहादसृग् दग्धं च यत्पुरा ।
इन्द्राय दत्तवान्कर्णस्तेन वैकर्त्तनः स्मृतः ॥114॥

अर्थ स्पष्ट नहीं है।

अग्नि और भीम के नाम

तीक्ष्णश्चैव प्रचण्डश्च वृको नामानलो मतः ।
स पाण्डवस्य उदरे तेन भीमो वृकोदरः ॥115॥

अर्थ - तीक्ष्ण प्रचण्ड और वृकः (पु.) ये तीन नाम अनल अर्थात् अग्नि के हैं (वह भीम पाण्डव के उदर भी थी इसलिए उन्हें वृकोदर कहते हैं)।

युद्ध शौण्ड के नाम

यस्य श्रुतिसुखावाणी, पुण्यश्लोकः स उच्यते।
यः खेटी चानिवर्त्ती च युद्धशौण्डः स उच्यते ॥116॥

अर्थ - जिनकी वाणी कानों को सुखकर होती है , वह पुण्य श्लोक कहलाता है। जो ढाल को धारण करने वाला और युद्ध से कभी नही लौटता है उसको युद्ध शौण्ड कहते हैं।

समूह के नाम

महासंसर्गसंघातं महेष्वासं प्रचक्षते ।
स्वविक्रमैस्तापयेच्च परं यूथं च तापयेत् ॥117॥
यूथं तापेद्यस्तं विज्ञेयश्च स यूथपः ।
तस्मादपि च यो वर्यः स तु यूथपयूथपः ॥118॥

अर्थ - बहुत संसर्ग के संघात को महेष्वास कहते हैं , महा-इषु-आसं = महेष्वासं। अपने पौरूष से जो दूसरो को सन्तप्त करता है और शत्रुओं को भी सन्तप्त करता है तथा यूथ को सन्तप्त करता है वह यूथप कहलाता है , इन से भी जो श्रेष्ठ है वह 'यूथपथूथप' कहलाता है।

उपमावाची और व्यक्तवादी के नाम

सिंहान्नितान्तं सौवीरः स नृसिंह इति स्मृतः ।
ये हि प्रस्पष्ट वक्तारो मतास्ते व्यक्तवादिनः ॥119॥

अर्थ - सिंहः के समान अत्यन्त शूर वीरता जिसके पास है उस मनुष्य को नृसिंह कहते हैं , (श्रेणी में प्रभाव अर्थ भी होता है) जैसे 'नृ' शब्द के आगे सिंह 'शब्द' जोड़ देने से उस व्यक्ति को प्रमुख या श्रेष्ठ समझा जाता जैसे नृसिंह 'मनुष्यों' में श्रेष्ठ।

व्यक्तवादी = (पु.) स्पष्ट बोलने वाले को व्यक्तवादी कहते हैं।

यम और मंद के नाम

यो यमित्थं च नाम्नाति स कीनाश इति स्मृतः ।
योऽप्रबुद्धोऽल्पबुद्धिश्च सतु मन्दइति स्मृत ॥120॥

अर्थ - 'यम' शब्द का प्रयोग 'कीनाश' अर्थ में जानना चाहिये ,

(कीनाश = मृत्यु और कृष्ण के अर्थ मे भी आता है।)

अप्रबुद्ध = (पु.) - अल्पबुद्धि और अज्ञानी ये दो नाम मन्द. शब्द के होते हैं।

कृतघ्न और अध्यात्म के नाम

उपकारं तु यो हन्ति स कृतघ्न इति स्मृतः ।
हर्षे गर्वे सुखे खेदे वृद्धौ च प्रतिभासते ॥121॥
स्नेह भाग्यक्षये चैव मन्दशब्दो निगद्यते ।
नातीत्य वर्तते यत्र तदध्यात्मं प्रचक्षते ॥122॥

अर्थ - कृतघ्नः = (पु.) कृतं हन्ति इति कृतघ्नः - उपकार करने वाले व्यक्ति के उपकार को भूल जाने वाले व्यक्ति को कृतघ्न कहते हैं।

मन्दः = (पु.) - हर्ष , गर्व , सुख, खेद, वृद्धि, स्नेह और भाग्यक्षय इतने अर्थों में मंद शब्द का प्रयोग होता है।

अध्यात्मं = (अव्यय) - जो आत्म स्वरूप को छोड़कर बाहर न जाये उसे अध्यात्म कहते हैं।

समाधि और दान्त के नाम

चेतसश्च समाधानं समाधिरिति गद्यते ।
सर्व क्लेश विनिर्मुक्तो स हि दान्त इति स्मृतः ।123।

अर्थ - समाधिः = (पु.) जिसके मन का समाधान हो गया उसे समाधि कहते हैं । दान्तः = (पु.) सर्व क्लेशो से रहित व्यक्ति को दान्त कहते हैं।

समाधिस्थ के नाम

निर्ममो निरहङ्कारो विज्ञेयः छिन्नसंशयः ।
प्रदाता देशकालज्ञः समाधिस्थः स उच्यते ॥124॥

अर्थ - समाधिस्थः = (पु.) निर्मम, निरहंकार , छिन्नसंशय = संशय से रहित, प्रदाता और देशकाल के व्यवहार को जानने वाला ये पाँच समाधिस्थ शब्द के अर्थ जानना चाहिये ।

बहुत बोलने वाले के नाम

मुखरोऽल्पमतिर्यस्तु सक्रोधश्चैव कीटकः ।
वृत्तिर्यत्र तु गृह्यानां परोक्षे वहिः तत्क्रिया ? ॥125॥

अर्थ - मुखरः (पु.) अल्पमति = मंद बुद्धि, बहुत बोलने वाला और मुखिया मुखर कहलाता है , सक्रोधः = क्रोधी पुरुष को कीटक कहते हैं।

प्रीति का लक्षण

आहारव्यवहारेषु सा प्रीतिर्निरूपद्रवा ।
परस्परं स्वदारेषु सतां येषां प्रवर्तते ॥126॥

अर्थ - आहार व्यवहार तथा स्वस्त्री मे सज्जनपुरुषों का परस्पर मे जो राग होता है उसे निरूपद्रव प्रीति कहते हैं।

ख्याति का लक्षण

विश्रम्भात् प्रणयाद्वापि सा प्रीतिर्निरूपद्रवा ।
यशः ख्यातिरिति प्रोक्तं तद्योगात् प्राहुरूच्यते ॥127॥

अर्थ - विश्वास से और स्नेह से वह निरूपद्रव प्रीति होती है। यशः (नपुं.)= ख्याति , निरूपद्रव प्रीति के निमित्त से भी ख्याति होती है।

उदारता का लक्षण

कीर्ति ख्याति यशोयोगाद् भगवान्निह चोच्यते ।
प्रियदानेषु यः शुद्धः स उदार इति स्मृतः ॥128॥

अर्थ - कीर्ति, ख्याति और यश के योग से वह पुरुष भगवान् कहा जाता है। और जो शुद्ध दान मे निपुण है वह उदार कहलाता है।

रजस्वला तु या नारी सा चोदक्या प्रकीर्तिता ।
प्रीतिर्भाव क्रिये स्वच्छरक्षालिंगी तनुं विपुम ?॥129॥

अर्थ - उदक्या = (स्त्रीं) - राजस्वला स्त्री को उदक्या कहते हैं।

तेज के नाम

तेजो रेतसि दीप्तौ तपो हि स्याद् वृषार्थकः ।
योऽन्यजातो हनो जीवः स शरारु इति स्मृतः ॥130॥

अर्थ - तेजः (नपुं.)= रेतस् = अग्नि , दीप्ति = किरण और तप = धर्म, ये तीन अर्थ तेज शब्द के जानना चाहिए। जो अन्य से उत्पन्न हुआ वह जीव 'हन' कहलाता है और उसे 'शरारु' भी कहते है।

नास्तिक के नाम

मिथ्यादृष्टिरहंमानी नास्तिकः सः प्रकीर्तितः ।

अर्थ - नास्तिकः = (पु.) मिथ्यादृष्टि और अहंकारी ये दो अर्थ नास्तिक शब्द के होते हैं।

षड्वद के नाम

कामः क्रोधश्च वै पूर्वे लोभोऽसत्यं च मध्यमे ॥131॥
अन्ते मोहो विषादश्च यस्य ज्ञेयः स षड्वदः ।

अर्थ - जिसके , पहले काम और क्रोध हो, मध्य मे लोभ और असत्य हो और अन्त मे मोह और विषाद हो उसे षड्वद जानना चाहिए ।

अमृत और गोलक के नाम

अमृते जारजः कुण्डो मृते भर्तरि गोलकः ॥132॥

अर्थ - अमृतम् = (नपुं.) जारज और कुण्ड (जिस बर्तन मे अमृत रखा जाता है उसे कुण्ड कहते है)। गोलकः = (पु.)मरण और भर्त्ता, इन दो अर्थों मे जानना चाहिये ।

अनयो र्योऽन्नमश्नाति स कुण्डाशी निगद्यते ।

अर्थ - उपर्युक्त पद में अमृते मृते, इन दोनो मे जो अन्न को खाता है वह कुण्डाशी कहलाता है ।

भ्रूणस्त्री गर्भिणी वाला ब्राह्मणी ब्रह्म जीविनी ॥133॥
परचित्ते यवीयान् योः ज्येष्ठ पत्नीं परामृशन् ।
यः पश्चिमश्च ज्येष्ठोऽपि परचि त्तः स उच्यते ॥134॥

अर्थ - स्पष्ट नहीं है ।

वस्त्रों के भेद

पुष्पजं क्षोमजं चर्म्मकोशजं भर्म्मजं तथा ।
गुणजञ्च समुद्दिष्टं तद् भेदा वस्त्रजातिषु ॥135॥

अर्थ - वस्त्र की जातियाँ इस प्रकार है, पुष्प से उत्पन्न होने वाला, क्षोमजं = रेशमी वस्त्र , चर्मकोशजं = चर्म से उत्पन्न, भर्मजं = स्वर्ण से उत्पन्न, गुणजं= डोरी या धागा से वस्त्र बनता है इस प्रकार से तैयार हुये वस्त्र के भेद जानना चाहिये।

स्त्री के भेद

बिम्बारक्तधरा या स्त्री बिम्बोष्ठीं तां विनिर्दिशेत् ।
या स्यात् संक्रीडनपरा ललनां तां विनिर्दिशेत् ।136।

अर्थ - बिम्बोष्ठी = (स्त्रीं.) जिस स्त्री के ओष्ठ लाल हो उसको विम्बोष्ठी कहते हैं। ललना = (स्त्री.) जो स्त्री क्रीडा करने मे तत्पर रहती है उसे ललना कहते हैं।

वरवर्णिनी का स्वरूप

दूर्व्वाकाण्ड प्रतीकाशा कुंभौ यंस्यास्तनू कुचौ ।
सर्वरूप बिबिक्ताङ्गी सा भवेद् वरवर्णिनी ॥137॥

अर्थ - जिस स्त्री का शरीर घास के पूले के समान कुच-कुंभ के समान हो और सर्वरूप से पवित्र जिसका अंग हो उसे वरवर्णिनी कहते हैं।

सुन्दर स्त्री के नाम

लावण्य युक्ता या नारी ललितां तां विनिर्द्दिशेत् ।
या मत्ता मत्तवज्ज्योतिः सा ज्ञेयामत्तकाशिनी ॥138॥

अर्थ - लावण्य से युक्त जो स्त्री है उसे ललिता कहते हैं। मस्त हाथी के समान चाल वाली स्त्री को मत्तकाशिनी कहते हैं।

अन्न के नाम

भूरिश्च भूरिसुद्दिष्टं अन्नं श्रव इति स्मृतम् ।
भूरिश्रवो ददातीह तस्माद् भूरिश्रवोहि सः ॥139॥

अर्थ - भूरिः = (पु.) भूरिं = बहुत, अन्नं = श्रव ऐसा माना है और बहुत अन्न को देने वाले को भूरिश्रव कहते है।

लोहितग्रीव और रावण के नाम

चतुष्पाद् विंशतिभुजो लोहितग्रीव एव च ।
निसर्गाद् दारूणात् क्रूराद्रवणाद् रावणः स्मृतः ॥140॥

अर्थ - जिसके चार पैर और 20 भुजायें होती है वह लोहित ग्रीव है, तथा स्वभाव से दारूण क्रूर और प्राणियों को रूलाने वाला हाने से रावण कहलाता है।

रोषणा या भवेन्नारी भामिनीं तां विनिर्द्दिशेत् ।

अर्थ - जो महिला क्रोध करती है उसे भामिनी कहते हैं।

न्यग्रोध का लक्षण

न्यग्रोधलक्षणं विद्याद् दधाना परिमण्डलम् ॥141॥
ताभ्यामुपेता वनिता-न्यग्रोध-परिमण्डला ।

अर्थ - न्यग्रौधः = (पु.) लम्बाई का एक नाप इसकी लम्बाई उतनी होती है जितनी कि दोनो हाथों को फैलाने से होती है। परिमण्डल = श्रेष्ठ स्त्री की परिभाषा - (स्तनौ सुकठिनौ यस्या नितंबे च विशालजा मध्ये क्षीणा भवेद्या सा न्यग्रोध परिमण्डला) (जिस स्त्री के दोनो स्तन कठोर हो, नितम्ब विशाल हो,

कमर पतली हो वो न्यग्रोध परिमण्डला नाम की स्त्री है)।

न्यग्रोध और परिमण्डल से सहित हो उसे न्यग्रोध परिमण्डल कहते हैं।

राजीव लोचन की परिभाषा

तत्तुल्ये चाक्षिणी यस्याः सा स्त्री राजीव लोचना ॥142॥

अर्थ - उपर्युक्त लक्षण से युक्त कमल के समान जिसकी आँखें हो उस स्त्री को राजीव लोचना कहते हैं।

वर्णप्रमाण निर्घोषोऽछिन्न संपद्भिरन्वितः ।
राजीव मन्ये शंसन्ति स्निग्धवर्ण सितासितम् ॥143॥
किंचिदुत्तरतद्योगात्सीता राजीवलोचना ।
बलिभिर्यास्त्रिभि र्युक्ता शङ्खकण्ठी उदाहृता ॥144॥

अर्थ - स्पषट नहीं है।

भार्या शब्द के नाम

----जराकराकारं स्यन्दनाग्रमिवाग्रतः ।
वस्त्वेति तज्ज्ञेयं तस्यैवाग्रं ॥145॥
तं मर्म संयुक्तं तत्तथालिनमुच्यते ।
ग्रहणे धारणे सामे वाहने धर्म संयुता ॥146॥
रमणे क्रीणने सङ्गे भार्या नाम प्रवर्त्तते ।

अर्थ - भार्या = (स्त्री) ग्रहण मे , धारण , साम, वाहन, धर्मसंयुता, रमण, क्रीडा संग, मूढता , मुग्धा और सविधा इतने अर्थों मे भार्या शब्द आता है।

मूढतायां सविद्यायां सप्ताश्वस्त्वंशुमालिनी ॥147॥

अर्थ - अंशुमाली = सूर्य का नाम है (कवि सम्प्रदाय के अनुसार सूर्य के सात घोडे होते हैं)।

विषमाक्षदरा एते ज्ञेयाग्रं तैः विसंस्थिताः ।

कोटरस्था जन्तु के नाम

कोटरस्था इति ज्ञेयाः सर्प्पकीटखगादयः ॥148॥

अर्थ - कोटरस्थाः = (पु.) सर्प, क्रीड़ा, खग = पक्षी आदि जीवो को कोटरस्थाः कहते हैं। (ये जानवर वृक्षों की कोटरों मे निवास करते हैं इसलिये ये कोटरस्था कहलाते हैं)।

पल्लव के नाम

आताम्रपल्लवो यस्तु वृक्षाणामचिरोद्गमः ॥149॥

अर्थ - पल्लव - जिन वृक्षों के नवीन लाल कोंपल निकली हो उसे पल्लव कहते हैं । अर्ध श्लोक ही प्राप्त हुआ ।

दूरी नापने के यंत्र

सौकुमार्य किसलयं कोमलत्वं च तत्स्मृतम् ।
शतानां च चतुर्हस्तं नल्वं तदिहसंज्ञितम् ॥150॥

अर्थ - नल्वं = (नपुं.) - दूरी मापने का नाप जो 400 हाथ लम्बा हो उसे नल्व कहते हैं ।

प्रस्थ का नाम

कुम्भो वाहः प्रस्थः समं नल्व इति विधीयते ।

अर्थ - नल्वः = (पु.) घड़ा, वाह = धारण करने वाला या ले जाने वाला, प्रस्थः = माप (वरैया या पाई, जिससे अनाज नापा जाता उसे प्रस्थ कहते हैं ।) सम, इतने नाम नल्व शब्द के जानना चाहिये ।

जंगल का नाम

विपिनं शून्यमित्युक्तं विपिनं गृहमेव च ॥151॥

अर्थ - विपनं = (नपुं.) शून्य = एकान्त स्थान या जंगल और गृहं = घर, ये दो अर्थ विपिन शब्द के होते हैं ।

बर्फ का नाम

रूक्मवर्ण्णं च वामं च दर्शनीयार्थवाचकः ।
सर्वार्थश्चाप्युवर्णश्च पानीयं शीतमुच्यते ॥152॥
नीहारं शीतमित्युक्तं प्रदोषान्तो निशीथकः ।----

अर्थ - नीहारं = (नपुं.) शीतं = बर्फ , कहा जाता है । प्रदोषः = (पु.) रात्रि के प्रारम्भ को प्रदोष कहते हैं । प्रदोष के अन्त को निशीथकः कहते हैं ।

इति महाकवि श्री धनञ्जयकृते निघण्टुसमये शब्दसंकीर्णे अनेकार्थ प्ररूपणे द्वितीयपरिच्छेदः ।

अमर कवि कृत

एकाक्षरी कोशः

विश्वाभिधान कोशानि प्रविलोक्य प्रभाष्यते ।
अमरेण कवीन्द्रेणैकाक्षरनाममालिका ॥1॥

अर्थ - अमर कवि के द्वारा विश्वाभिधान कोश को देखकर यह एकाक्षर नाम मालिका कही जाती है।

अः कृष्ण आः स्वयंभूरिः काम ई श्रीरूरीश्वरः ।
ऊ रक्षणः ऋ ॠ ज्ञेयौ देवदानवमातरौ ॥2॥

अर्थ - अः = कृष्ण, आः = स्वयंभूः , इः = काम, ई = श्रीः या लक्ष्मी, उः = ईश्वर, ऊ = रक्षक - ऋ , ॠ = देवदानव - एक राक्षस और, माता, इन दो अर्थों मे ऋ ॠ शब्द को जानना चाहिये ।

ऌ र्देवसू ॡर्वाराही भवेदे र्विष्णुरैः शिवः ।
ओर्वेधा औरनंतः, स्यादं ब्रह्मपरम् अः शिवः ॥3॥

अर्थ - ऌः = देव, ॡ = वार = पानी, अहिः = सर्प, ऌः शब्द के ये तीन अर्थ होते हैं। एः = विष्णु, ऐः = शिवः = शंकर, ओः = वेधा- ब्रह्मा, औः = अनंत, अं = परमब्रह्म, अः = शिव अर्थ में आता है ।

को ब्रह्मात्म प्रकाशार्के, कः स्याद्वायुयमाग्निषु ।
कं शीर्षे सुसुखे कुस्तु, भूसौ शब्दे च किं पुनः ॥4॥

अर्थ - कः = (पु.) ब्रह्मा, आत्मा, प्रकाश, सूर्य , वायु, यम = मृत्यु, और अग्नि ये सात अर्थ 'क' शब्द के हैं। कं = (नपुं.) शीर्ष = शिर , अच्छा सुख , ये दो अर्थ 'कं' शब्द के हैं। कुः = (स्त्री.) पृथ्वी और शब्द इन दो अर्थों मे कु शब्द का प्रयोग होता है। किं = पुनः अर्थ मे जानना चाहिये ।

स्याद् क्षेपनिन्दयोः प्रश्ने, वितर्के च खमिन्द्रिये ।
स्वर्ग्गे व्योम्नि मुखे शून्ये सुखे संविदि खो रवौ ॥5॥

अर्थ - खम् = (नं.) क्षेप, निन्दा = आक्षेप और निन्दा, वितर्क , इन्द्रिय, स्वर्ग, आकाश, मुख, शून्य, सुख, संविदि = ज्ञान (पु.) और सूर्य इतने अर्थों में 'खं' शब्द का प्रयोग होता है।

गस्तु गातरि गंधर्व्वे गा गीतौ गो विनायके ।
स्वर्गे दिशि पशौ वज्रे भूमा विन्दौ जले गिरि ॥6॥

अर्थ - गः = (पु.) गाता = गाने वाला और गंधर्व ये दो अर्थ गः शब्द के होते हैं। गा = (स्त्रीं) गीति। गो = (स्त्री. पु.) विनायक = गणेश , स्वर्ग , दिशा, पशु, वज्र, भूमि, इन्दु (चन्द्रमा) पानी , गिरि = पर्वत ये नौ अर्थ 'गो' शब्द के जानना चाहिये।

घस्तु सुघटीशे घा किंकिण्या च घुर्ध्वनौ ।
ङःमञ्जने ङो वृष भेजिने चः चन्द्रचोरयोः ॥7॥

अर्थ - घः = (पु.) सुघट, अच्छा और ईश = स्वामी। घा = (स्त्री.) किंकिणी = क्षुद्रघंटी, घुः = (पु.) - ध्वनि = आवाज। ङं = मञ्जन = साफ करना , ङः = (पु.) वृष = धर्म, भेजिन ?। चः = (पु.) चन्द्रमा और चोर , इन दो अर्थों मे 'च' शब्द का प्रयोग होता है।

चः सूर्ये कच्छपे छं तु निर्मले जस्तु जेतरि ।
विजये जेतसि वाचि पिशाच्यां जिः जवेऽपि च ॥8॥

अर्थ - चः = (पु.) सूर्य और कच्छप। छं = (नपुं.) निर्मल = स्वच्छ जः = (पु.) जेता - जीतने वाला और विजय , तेजः = किरण, वचन और पिशाची = राक्षसी। जिः = (पु.) जव = वेग ये पाँच अर्थ 'ज' शब्द के होते हैं।

झो नष्टे रवे वायौ ञो गायने घर्घरध्वनौ ।
टं पृथिव्यां करटे च ठो ध्वनौ ठो महेश्वरे ॥9॥

अर्थ -झः = (पु.) नष्ट, सूर्य, वायु, इन तीन नामों का प्रयोग 'झ' शब्द से होता है। ञः = (पु.) गायन , घर्घर की ध्वनि ये दो अर्थ 'ञ' शब्द के होते है। टम् = (नपुं.) पृथिवी , करट = हाथी का गण्डस्थल, कुसुम्भ का फूल या कौवा या पतित ब्राह्मण ये पाँच अर्थ 'ट' शब्द के होते हैं। ठः = (पु.) ध्वनि और महेश्वर ये दो अर्थ 'ठ' शब्द के जानना चाहिये।

शून्ये बृहद्धूवनौ चन्द्रमंडले , डं शिवे ध्वनौ ।

अर्थ - 9 वे श्लोक के चतुर्थ पाद मे कहे हुये 'ठ' शब्द के निम्नलिखित

अर्थ होते हैं , ठः - शून्य , वृहद्ध्वनि = तेज आवाज और चन्द्रमण्डल, चन्द विम्ब 'ठ' शब्द का प्रयोग इतने अर्थों में जानना चाहिये ।

डम् = (नपुं.) - शिव और ध्वनि = आवाज ये दो अर्थ डम्' शब्द के जानना चाहिये ।

ढो भये निर्गुणे शब्दे ढक्कायां णस्तु निश्चये ॥10॥

अर्थ - ढः = (पु.) भय, निर्गुण, ढक्का का शब्द इतने अर्थों में 'ढ' शब्द का प्रयोग होता है । णः = (पु.) निश्चय और ज्ञान इन दो अर्थों में 'ण' शब्द का प्रयोग होता है ।

ज्ञाने तस्तस्करे क्रोडपुंच्छयोस् ता पुनर्दया ।
थो भीत्राणे महीध्रे, दं पत्न्यां दा दातृदानयोः ॥11॥

अर्थ - 'ण' = ज्ञान ऊपर के श्लोक में कहा गया है। तः = (पु.) तस्कर = चोर, क्रोड = सूअर, पुच्छ = पूंछ। ता = (स्त्री.) दया। थः = (पु.) भी = भय, त्राण = रक्षा और पर्वत, इन तीन अर्थों मे 'थ' शब्द का प्रयोग होता है। दं = (नपुं.) पत्नी, 'दा' = (स्त्री.) दाता और दान इन दो अर्थों मे प्रयोग होता है।

बन्धे च धा गुह्ये, केशे धातरि धीर्मतौ ।
धूर्भारकंपचिन्तासु नो नरे बन्धु बुद्धयोः ॥12॥

अर्थ - धा = (स्त्री.) गुह्य = छिपाने के योग्य, केश = बाल, धाता = ब्रह्मा, इन तीन अर्थों मे (धा) शब्द का प्रयोग होता है। धीः = (स्त्री.) मति = बुद्धि, धूः = भार, कंपन, चिन्ता इन तीन अर्थों में 'धू', शब्द का प्रयोग होता है। नः = (पु.) नर = मनुष्य , बन्धु और बुद्धि इन तीन अर्थो में 'न' शब्द का प्रयोग होता है ।

निस्तु नेतरि नुः स्तुत्यां नौः सूर्ये पस्तु पातरि ।
पावने जलयाने च फो झंझाजलफेनयोः ॥13॥

अर्थ - निः = (पु.) नेता, नुः = स्तुति। नौः = नाव , सूर्य। पः = (पु.) पाता = रक्षक , पावन = पवित्र और जलयान , इन तीन अर्थों में 'प' शब्द का प्रयोग होता है ।

फः = (पु.) झंझा = आँधी, जलफेन = (पानी के तीव्र प्रवाह से नीचे गिरने पर उसमें फेन हो जाता है) इन दो अर्थों में 'फ' शब्द का प्रयोग होता है।

भाः कांतौ भूर्भवः स्थाने, भीर्भये मः शिवे विधौ ।
चन्द्रे शिरसि मा माने श्रीमात्रोर्वारणेऽव्ययम् ॥14॥

भाः = कान्ति , भूः = भव = ब्रह्मा, स्थान, भीः = भय, मः = शिव = कल्याण या शंकर , विधि = भाग्य, ब्रह्मा, चन्द्रमा और शिर इतने अर्थों में 'म' शब्द का प्रयोग होता है ।

मा (अ.)= मान = नापना, श्रीः = लक्ष्मी, मातृ = माता , वारण = हाथी इन चार अर्थों में मा शब्द का प्रयोग होता है ।

मुः पुंसि बंधने यस्तु मातरिश्वनि यं यशः ।
यास्तु यातरि खट्वांगे याने लक्ष्म्यां च रो धृतौ ॥15॥

मुः = (पु.) बन्धन,अर्थ में 'मु' शब्द का प्रयोग होता है । यः = (पु.) मातरिश्वा = हवा । यम् = (नपुं.) यश । याः = (स्त्री.) याता = देवरानी या जिठानी, खट्वांग = खटिया , यान = वाहन और लक्ष्मी 'या' शब्द का इन पाँच अर्थों में प्रयोग होता है । रः = (पु.) धृति = धैर्य, तीव्र, वैश्वानर = अग्नि और काम इन चार अर्थों में 'र' शब्द का प्रयोग होता है । इसका श्लोक नीचे है ।

तीव्रे वैश्वानरे कामे राः स्वर्णे जलदे ध्वनौ ।
री भम्रे रूर्भये सूर्ये ल इन्द्रे चलनेपि च ॥16॥

राः = (स्त्री) स्वर्ण, जलद = मेघ, ध्वनि = आवाज , री = (स्त्री) भ्रम। रूः = भय और सूर्य इन दो अर्थों में प्रयोग होता है । ल = (पु.) इन्द्र, चलन = हवा इन दो अर्थों मे 'ल' शब्द का प्रयोग होता है ।

लं तैले लीः पुनः श्लेषे ली भये वो महेश्वरे ।
वः पश्चिमदिशा स्वामी, व इवार्थे स्मरेऽप्ययम् ।17।

अर्थ - लम् = (नपुं.) तैल, ली = (स्त्री.) = श्लेष = आलिंगन । ली = भय। वः = (पु.) महेश्वर पश्चिम दिशा का स्वामी वरूण और काम व शब्द के ये तीन अर्थ होते हैं । 'व' शब्द 'इव' अर्थ में भी प्रयोग होता है (जैसे ''मणी वोष्ट्रस्य लम्बेते प्रियौ वत्सतरौ मम) । इन चार अर्थों में 'व' शब्द का प्रयोग होता है ।

शं शुभे शा तु शोभायां शी शयने शु निशाकरे ।
षः श्लिष्टे पुनर्गर्भे विमोक्षे षः परोक्षके ॥18॥

अर्थ - शम् = (न.) शुभ। शा = (स्त्री.) शोभा। शी = (स्त्री.) - शयन , शु = (पु.) निशाकर = चन्द्रमा इन अर्थों में तालव्य 'श' का प्रयोग होता है। षः = (पु.) श्लिष्टे = आलिंगन , गर्भ = गर्भ धारण या मध्य, विमोक्ष = छोड़ना और परोक्ष इन चार अर्थों में मूर्धन्य 'ष' शब्द का प्रयोग होता है।

सा लक्ष्म्यां हो निपाते च हुस्ते दारूणि शूलिनि।
क्षं क्षेत्र रक्षसीत्युक्ता माला प्राक् सूरि सम्मता ।।19।।

अर्थ - सा = (स्त्री.) लक्ष्मी। हः = (पु.) = निपात = नीचे गिरना, नीचे उतरना, आक्रमण करना, झपटना, कूदना, फेकना, फेककर मारना, दागना, आकस्मिक घटना, अनियमितता। एतेः निपाताः - निपात शब्द के इतने अर्थ होते हैं। हुः = (पु.) दारूण = कड़ा, कठोर, क्रूर, निर्दय, निष्ठुर, भयानक,और शूलिन = (पु.) - शंकर ये सात अर्थ 'हु' शब्द के होते हैं। क्षम् = (नपुं.) = क्षेत्र और रक्षा ये दो अर्थ (क्षम्) शब्द के होते हैं इस प्रकार पूर्वाचार्यों के मतानुसार यह नाम माला कही गई है।

।। इति एकाक्षरी नाममाला समाप्ता ।।

कवि पुरुषोत्तम कृत

एकाक्षरी कोशः

अकारो वासुदेवः स्यादाका रस्तु पितामहः ।
पूजायां चापि मांगल्ये आकारः परिकीर्तितः ॥1॥

अर्थ - अ कारः = (पु.) वासुदेव = कृष्ण । आकारः = (पु.) - पितामहः = ब्रह्मा, पूजा और मांगल्यवाची ये तीन अर्थ 'आकार' शब्द के होते हैं ।

इकारं उच्यते कामो लक्ष्मीरीकार उच्यते ।
उकारः शंकरः प्रोक्त ऊकारश्चापि लक्षणम् ॥2॥

अर्थ - इकारः = (पु.) काम । ईकारः = (पु.) लक्ष्मी । उकारः = (पु.) शंकर, ऊकारः = (पु.) लक्षण, रक्षण, अर्थ और ब्रह्मा, ये 4 अर्थ 'ऊकार' शब्द के जानना चाहिये ।

रक्षणे चार्थ ऊ कार ऊकारो ब्रह्मणिस्मृतः ।
ऋकारो देवमाता स्यादृकारो दनुजप्रसूः ॥3॥

अर्थ - ऊकार = (पु.) रक्षा करने अर्थ में और आत्मा अर्थ में जानना चाहिये । ऋकारः = (पु.) देवमाता , दनुजप्रसु = राक्षस ? ये दो अर्थ ऋकार शब्द के होते हैं ।

लृकारो देवजातीनां मातासद्भिः प्रकीर्तितः ।
लृकारो स्मर्यते दैत्यजननी शब्दकोविदैः ॥4॥

अर्थ - लृकारः = पु. - देवजाती की माता को सज्जन पुरुष 'लृकार' कहते हैं । लृकार = (पु.) विद्वानों के द्वारा दैत्यजननी = दैत्यमाता को 'लृ' शब्द से कहा जाता है ।

एकार उच्यते विष्णुरैकारः स्यान्महेश्वरः ।
ओकारस्तु भवेद् ब्रह्मा औकारोऽनन्त उच्यते ॥5॥

अर्थ - एकारः = विष्णु । ऐकारः = महेश्वर । ओकारः = ब्रह्मा । औंकारः = अनन्त, कहा जाता है ।

अं स्याच्च परमंब्रह्म, अः स्याच्चैव महेश्वरः ।

अर्थ - अं = परमब्रह्म । अः = महेश्वर कहलाता है ।

कः प्रजापति रूद्दिष्ट : कोऽर्कवाटवनलेषु च ॥6॥

कश्चात्मनि मयूरो च कः प्रकाशः उदाहृतः ।

कं शिरो जलमाख्यातं कं सुखे च प्रकीर्तितः ॥7॥

पृथिव्यां कुः समाख्यातः कुः पापेऽपि प्रकीर्तितः ।

अर्थ - कः = (पु.) प्रजापति = ब्रह्मा, सूर्य अनल = अग्नि आत्मा, मयूर और प्रकाश इतने अर्थों में 'क' शब्द आता है । कं = (न.) - शिर , जल, सुख । कुः = (स्त्री.) पृथ्वी और पाप इन दो अर्थों मे कुः शब्द का प्रयोग होता है ।

खमिन्द्रिये खमाकारः खः स्वर्गेऽपि प्रकीर्तितः ॥8॥

अर्थ - खम् = (नपुं.) इन्द्रिय , खः = (पु.) स्वर्ग, अर्थ मे भी कहा गया है ।

सामन्ये च तथा शून्ये खशब्दः प्रकीर्तितः ।

अर्थ - ख = सामान्य और शून्य अर्थ मे भी 'ख' शब्द कहा गया है ।

गो गवेशः समुद्दिष्टो गंधर्वो गः प्रकीर्तितः ॥9॥

गं गीतं गा च गाथा स्याद् गौश्च धेनुः सरस्वती ।

अर्थ - गः = (पु.) गवेश = साँड या बैल और गन्धर्व = गाने वाले देवों कों गन्धर्व कहते हैं , गम् = (न.), गीत = गाना । गा = (स्त्री.) गाथा । गौः = (स्त्री.पु.) धेनु = गाय और सरस्वती इन दो अर्थो मे 'गौ' शब्द का प्रयोग होता है।

घा घष्टाय समाख्याता घो घनश्च प्रकीर्तितः ॥10॥

अर्थ - घा = (स्त्री.) घष्टाय = रगडना, अर्थ मे कहा है ,घः = (पु.) घन और मेघ अर्थ मे कहा गया है ।

घो घष्टाहननेऽधर्मे घूघोर्णा घुर्ध्वनावपि ।

अर्थ - घः - (पु.) घष्टा = रगडना, हनन = मारना, अधर्म इन तीन अर्थों मे 'घ' शब्द का प्रयोग होता है ।

घूः - घोणा = नाक या घोडे का नथुना । घुः = ध्वनि = आवाज अर्थ मे प्रयोग होता है ।

ङकारो भैरवः ख्यातो ङकारो विषयस्पृहा ॥11॥

अर्थ - ङकारः = (पु.) भैरवः = भयानक , डरावना, भीषण या भयावह।

ङकारः = (पु.) विषयस्पृहा = विषयो की इच्छा । ये दो अर्थ 'ङ' कार शब्द के होते हैं।

चश्चंद्रमाः समाख्यातो भास्करो तस्करे मतः ।

अर्थ - चः = पु. - चन्द्रमा, भास्कर = सूर्य, तस्कर = चोर , इन तीन अर्थों मे 'च' शब्द का प्रयोग माना गया हैं।

निर्मलं छं समाख्यातं तरले छः प्रकीर्तितः ॥12॥

अर्थ - छं = (न.) निर्मल या स्वच्छ, तरल = कंपमान, लहराता हुआ, अस्थिर इन अर्थों में 'छ' शब्द का प्रयोग होता है।

छेदके छः समाख्यातो विद्वद्भिः शब्द कोविदैः ।
जकारो गायने प्रोक्तो जयने जः प्रकीर्तितः ॥13॥
जेता जश्च प्रकथितः सूरिभिः शब्दशासने ।

अर्थ - छः = छेदने अर्थ मे भी आता है ऐसा विद्वानों ने कहा हैं। जकारः = (पु.) गायन, जयन = जीतना, जेता = जीतने वाला, ऐसा शब्द शासन मे जैनाचार्यों के द्वारा कहा गया है।

खे झकारः कथितो नष्टे झश्चोच्यते बुधैः ॥14॥

अर्थ - झकारः = 'खे' = सूर्य और नष्ट ये दो अर्थ 'झ' शब्द के समझना चाहिये।

इकारश्च तथा वायौ नेपथ्ये समुदाहृतः ।
जकारो गायने प्रोक्तो जकारो झर्फरध्वनौ ॥15॥

अर्थ - झकारः शब्द के = वायु और नेपथ्य = पर्दा ये दो अर्थ उदाहरण स्वरूप जानना चाहिये।

जकारः = गायन और झरझर ध्वनि ये दो अर्थ 'ज' शब्द के जानना चाहिये।

ये धीस्त्र्यां च करके रो ध्वनौ च प्रकीर्तितः ।
उकारो जनतायां स्याट्ठो ध्वनौ च शठेऽपि च ॥16॥

अर्थ - रः = (पु.) धी = बुद्धि, स्त्री, करक = ओला और ध्वनि = आवाज इन पाँच अर्थों मे 'र' शब्दका प्रयोग किया गया है।

उः = जनता का वाची है। ठः = (पु.) ध्वनि = आवाज और शठ = मूर्ख का वाची है अधोलिखित श्लोक में 'ठ' शब्द के और भी अर्थ आये है।

ठो महेशः समाख्यातष्ठः शून्यः प्रकीर्तितः।
वृहद् भानौ च ठः प्रोक्तस्तथा चन्द्रस्य मण्डले ॥17॥

अर्थ - ठः = (पु.) महेश, शून्य, बड़ा, भानू = सूर्य और चन्द्रमा का मण्डल इतने अर्थों में 'ठ' शब्द का प्रयोग होता है।

डकारः शंकरे त्रासे ध्वनौ भीमे निरूच्यते।

अर्थ - डकारः = (पु.) शंकर, त्रास = दुख , ध्वनि = आवाज और भीम = भयंकर इन चार अर्थों मे डकार शब्द का प्रयोग होता है।

ढकारः कीर्तितो ढक्का निर्गुणे निर्धने मतः ॥18॥

अर्थ - ढकारः = (पु.) ढक्का = डमरु , निर्गुण और निर्धन इन तीन अर्थों मे 'ढ' शब्द माना है।

णकारः सूकरे ज्ञाने निश्चयेते निर्णयेऽपि च।
तकारः कीर्तितश्चोरे क्रोडे पुच्छे प्रकीर्तितः ॥19॥

अर्थ - णकारः = (पु.) सूकर = सुअर , ज्ञान, निश्चय और निर्णय इन चार अर्थों में 'ण' कार शब्द आता है।

तकारः = (पु.) चोर, क्रोड = सूअर, पुच्छे = पूँछ इन तीन अर्थों में 'त' कार शब्द कहा गया है।

शिलोच्चये थकारः स्यात् थकारो नयरक्षणे।

अर्थ - थकारः = (पु.) शिलोच्चय = पत्थरों के ढेर को शिलोच्चय कहते हैं , नय और रक्षण इन अर्थों में 'थ' शब्द जानना चाहिये।

दकारोऽभ्रे कलत्रे च च्छेदे दाने च दातरि ॥20॥

अर्थ - दकारः = (पु.) - अभ्र = मेघ, कलत्र = स्त्री, छेद = छेदना, दान और दाता इन पाँच अर्थों में 'द' शब्द का प्रयोग होता है।

धं धने सघने धः स्याद् (विधा तीरमनावय)।

'विधातरि मानवश्च 'इति पाठान्तर'

धिषणा धीः समाख्याता धूश्चैवं भारवित्तयोः ॥21॥

अर्थ - धम् = (न.) धन और सघन , धः = (पु.) विधाता = ब्रह्मा और मनुष्य, धीः = (स्त्रीं.) बुद्धि , धूः = भार और वित्त = धन इन दो अर्थों में 'धू' शब्द जानना चाहिये।

नेता नश्च समाख्यात स्तरणौ नः प्रकीर्तितः ।

नकार सौगते बुद्धौ स्तुतौ वृक्षे प्रकीर्तितः ॥22॥

नः शब्दः स्वागतो बन्धौ वृक्षे सूर्ये च प्रकीर्तितः ।

अर्थ - नः = (पु.) नेता, स्तरणि = शय्या, सौगत = बौद्धमत वालों को सौगत कहते हैं , बुद्धि , स्तुति, वृक्ष, स्वागत, बन्धु = मित्र , वृक्ष और सूर्य इतने अर्थ 'न' शब्द के होते हैं।

पः कुवेरः समाख्यातः पश्चिमे पः प्रकीर्तितः ॥23॥

अर्थ - पः = (पु.) कुबेर और पश्चिम इन दो अर्थों में आता है।

पवने पः समाख्यातः पः स्यात्याने च पातरि।

अर्थ - पः = पवन = हवा, यान = वाहन और पाता = रक्षक इतने अर्थो मे 'प' शब्द का प्रयोग होता है।

कफे वाते फकारः स्यात्तथाऽह्वाने प्रकीर्तितः ॥24॥

फूत्कारोऽपि च फः प्रोक्तस्तथा निष्फलभाषणे ।

अर्थ - फकारः = (पु.) कफ = फेन या श्लेष्मा, वात = वायु, आह्वान = बुलाना, फूत्कार = फुस्कारना और अनर्थक वचन इन पाँच अर्थों में फकार शब्दका प्रयोग होता है।

वकारो वरूणः प्रोक्तो बलजेव ? फलेऽपि च ॥25॥

अर्थ - वकारः = वरुण पश्चिम दिशा का स्वामी, फल अर्थ मे इव अर्थों में बलजा = पृथ्वी , सुन्दर स्त्री , एक प्रकार की चमेली इन अर्थों में 'व' शब्द का प्रयोग जानना चाहिये।

वक्षः स्थले च वः प्रोक्तो गदायां समुदाहृतः ।
नक्षत्रे भं बुधा प्राहु र्भवने भः प्रकीर्तितः ॥26॥

अर्थ - वः = (पु.) वक्षस्थल = सीना या छाती और गद = रोग इन दो अर्थों में आता है , भं = (न.) नक्षत्र और बुध इन दो अर्थों में हैं , भः = (पु.) भवन = महल अर्थ में कहा गया है।

दीप्तिर्भास्याच्च भूर्भूमि भी र्भयं कथितं बुधैः ।

अर्थ - भा = (स्त्री.) दीप्ति, भूः = (स्त्री.) भूमि । भीः = भय, इस प्रकार विद्वानों ने कहा है।

मः शिवश्चंद्रमा वेधाः महालक्ष्मीश्च कीर्तिता ॥27॥

अर्थ - मः = (पु.) - शिव - शंकर, चन्द्रमा, वेधाः = ब्रह्मा, महालक्ष्मी इन अर्थों में 'म' शब्द कहा गया है।

मा च मातरि माने च बंधने मः प्रकीर्तितः ।
यशो यः कथितः प्राज्ञैर्या वायुरिति शब्दितः ॥28॥

अर्थ - मा = (अ.) माता, मान = नापना और बंधन इतने अर्थ 'अव्यय वाले 'मा' के जानना चाहिये , यः = (पु.) यश , या = (स्त्री) वायु = हवा इतने अर्थ 'य' शब्द के जानना चाहिये।

याने मातरि यस्त्यागे कथितः शब्दवादिभिः ।

अर्थ - यः = (पु.) यान = वाहन, माता और त्याग इतने अर्थों में 'य' शब्द को विद्वानों ने कहाँ है।

रश्चारोमेऽनिले ब्रह्मौ भूसावपि धनेऽपि च ॥29॥

अर्थ - रः = (पु.) अरोम = रोम रहित व्यक्ति, वायु , ब्रह्मा, भूमि, धन इन्द्रिय और धनरोध इतने अर्थों में 'र' शब्द आता है।

इन्द्रिये धनरोधे च रुर्भये च प्रकीर्तितः ।

अर्थ - इन्द्रिय और धनरोध ये 'र' से सम्बन्ध रखते हैं इसलिये इनको ऊपर के श्लोक के साथ पढ़ना चाहिये।

रुः = भय और इन्द्रिय अर्थ में कहा गया है।

लो दीप्तौ धांलश्च भूसौभये चाह्लादनेऽपि च ॥30॥

लः = (पु.) दीप्ति , धा = धातु अर्थ में जैसे (पाणिनीय व्याकरण में दस लकारों की भी 'ल' संज्ञा की है।) भूमि , भय, आह्लाद ये अर्थ जानना चाहिये ।

लो वाते लवणे च स्याल्लो दाने च प्रकीर्तितः ।
लः श्लेषे चाशये चैव प्रलये साधनेऽपि लः ॥31॥
मानसे वरूणे चैव लकारः सांत्वनेऽपि च ।

अर्थ - लः = (पु.) वायु, लवण = नमक, दान, श्लेष = आलिङ्गन, आशय, प्रलय , साधन मानस, वरुण, सान्त्वंना इतने अर्थों में 'ल' शब्द को जानना चाहिये ।

विश्च पक्षी निगदितो गमने विः प्रकीर्तितः ॥32॥

अर्थ - विः = (पु.) पक्षी और गमन अर्थ में 'वि' शब्द को जानना चाहिये ।

शं सुखं शंकरः श्रेयः शश्च सीरी निगद्यते ।
शयने शः समाख्यातो हिंसायां शो निगद्यते ॥33॥

अर्थ - शम् = (न.) सुख, शंकर, श्रेयः = कल्याण, सीरी = वलभद्र (सीर = हल, सीरं, विद्यते सस्य सः सीरी, इन प्रत्ययान्त है, इसलिये यह वलभद्र का विशेषण है)

शयन = सोना और हिंसा इतने अर्थो मे 'श' शब्द को जानना चाहिये ।

षः कीर्तितो युधैः श्रेष्ठे षश्च गंभीरलोचने ।
उपसर्गे परोक्षे च षकारः परिकीर्तितः ॥34॥

अर्थ - षः = (पु.) युद्ध, श्रेष्ठ, गंभीर लोचन, उपसर्ग और परोक्ष इन अर्थों में 'ष' शब्द कहा गया है ।

सः कोपे वरूणे सः स्यात्तथा शूलिनि कीर्तितः ।
सा च लक्ष्मी बुंधैः प्रोक्ता सा च सः ईश्वर ॥35॥

सः = (पु.) कोप = गुस्सा या क्रोध, वरूण (पश्चिम दिशा का स्वामी) तथा शूलिन् = शंकर , सा= (स्त्रीं) लक्ष्मी और गोरी , सः = (पु.) ईश्वर ऐसा

विद्वानों ने कहा है।

हः कोषे वारणे हश्च तथा शूली प्रकीर्तितः ।

हिः पद्यपूरणे प्रोक्तो हिः स्याद् धेत्ववधारणे ॥36॥

अर्थ - हः = (पु.) कोष = खजाना , हाथी तथा शूली = शंकर।

हिः = (पु.) पद्यपूरण = पादपूर्ति के लिये 'हि' शब्द आता है हेतु, अवधारण इतने अर्थों में 'ह' और 'हिः' शब्द का प्रयोग होता है।

क्षः क्षेत्रे वक्षसि प्रोक्तो , बुधैः क्षः शब्दशासने ।

क्षिः क्षेत्रे क्षेत्ररक्षे च नृसिंहे च प्रकीर्तितः ॥37॥

अर्थ - क्षः = (पु.) क्षेत्र = स्थान, वक्षः = सीना, विद्वानों ने शब्द कोष मे 'क्ष' शब्द के इतने अर्थ कहे हैं।

क्षिः = क्षेत्र, क्षेत्र की रक्षा अर्थ में , नृसिंह = मनुष्यों में श्रेष्ठ इन अर्थों मे क्षि शब्द कहा गया हैं।

आगमेभ्योऽभिधानेभ्यो धातुभ्यः शब्दशासनात् ।

एवमेकाक्षरं नामाभिधानं सुकृतं मया ॥38॥

अर्थ - आगम से धातुओं से और शब्द शासन से यह एकाक्षर नामक कोष मेरे (पुरुषोत्तम कवि) द्वारा किया गया है।

॥ इति पुरुषोत्तमकृत एकाक्षरी कोशः ॥

शाक वर्ग

(भाव प्रकारश ग्रन्थ से उद्धत)

वास्तुकः = वथुआ की भाजी। मेघनाद = चौरई भाजी। पालक्या = पालक भाजी। पोतकी, उपोदिकी = पोई की भाजी। यवानीशाक = अजवायन। प्रपुन्नाट, दद्रुध्नपत्र = पमार (पुवाँर)। गोजिह्वा = गोभी। कलायशाकः = मटर। शोभाञ्जनः = सहजना। कुष्माण्डः = कुमडा (कद्दू) अलावुः = तुमडिया।

एर्वारु :, कर्कटी, त्रपुष, कण्टकिफलं, सुधावासः, सुशीतलं = ये सभी नाम 'ककडी' के हैं। चीचिण्डः = चचेंडा।

कारबेल्ली, काठिल्ल, कारवेल्लः = करेला। मारिचः = मिर्च, धार्मगवः, पीतपुष्यः, जालिनी, कृतबोधना, राजकोशातकी = ये सभी नाम 'तुरई' के हैं।

महाकोशातकी = धिया तुरई। पटोल : = परवल। बिम्बी = कुंदरु, शिम्बी = सेम। कोलशिम्वी = सेमा। शोभाञ्जनफली = सोजना की कोश, वार्त्ताकुः वार्त्ताकः = भटा। डिण्डिश = ढेढश। सूरणः = सूरन।

आरुक्, आलुकः, वीरसेनः = आलु। रतालु मेद = घुँईया। लघुमूलकः = छोटीमूली। नेपालमूलकः= बड़ीमूली। गृञ्जनः = गाजर। कोशातकी = गडेलू या लोकी। अर्द्रकः = अदरक।

भोजन वर्गः

भक्तः, अन्नः, अन्धः (अन्धस् शब्द) क्रूरः, ओदनः मिस्सः, दिविद् = ये सभी नाम भात के हैं।

दालिः, दाली = ये कच्ची दाल दो नाम हैं।

सूपः = पकी हुई दाल को कहते हैं। पर्पटः = पापड़। कृशरः = खिचड़ी। पूकरा = कचोरी। माषवटकः = बड़ा। पायसः, परमान्न, क्षीरिका = ये खीर के नाम हैं। सेविका = सिमैयाँ (बिया)। राज्यक्तः = रायता। समिता = मेंदा। काञ्जिकवटकः = छाँछ मे भिगोया हुआ बड़ा। मण्डकः = माँडा। लोपत्री = लोई। अम्लिकावटकः = इमली के रस मे भिगोया हुआ बड़ा। पर्पटिका = परायटा। लप्सिका, यबागूः = लप्सी। अम्लिका = इमली। रोटिका = रोटी। मुद्गवटकः = मंगोडा। अङ्गारकर्कटी = बाँटी(गाकर)। यवजारोटिका = जौ की रोटी। माषजा रोटिका, धूमसी, झर्झरिका = इतने नाम उडद की रोटी के हैं।

वेढमिका

दालि संस्थापिता तोये, ततोऽपहृत कञ्चुका ।
शिलायां साधु सम्पिष्टा वेढमिका कथिता बुधैः ।
माषपिष्टिकया पूर्णागर्भी गोधूम चूर्णतः ।
रचिता रोटिका सैव प्रोक्ता वेढिमिका तथा ।।

उडद की दाल को पानी में भिगों कर शिला पर वाट कर चूर्ण को आटा में रखकर जो रोटी बनाई जाती है। उसे वेढमिका कहते हैं।

माषवटिका = उडद की बड़ी। कुष्माण्डवटिका = कद्दू की बड़ी।

मुद्गवटिका = मूंग की बड़ी।

अलीकमत्स्य = पान पर उडद की पिट्ठी लगाकर धूप मे सुखावे, जब सूख जावे तब टुकडे पर तेल लगाकर, घी मे तले उसे अलीकमत्स्य कहते हैं।

क्वथिका = बेसन (कड़ी)

दालयञ्चूर्णकानां तु निस्तुषा यंत्र पेषिता।
तच्चूर्णं बेसनं प्रोक्तं, पाकशास्त्रविशारदैः ।।

तुष रहित चनों की दाल को चक्की में पीसने से जो चूर्ण होता है उसको पाकशास्त्र के ज्ञाता 'बेसन' कहते हैं।

मठ = खुरमा। सम्पावः = पूरन पुडी, फेनिका = फेनी। शष्कुली = पूडी।

बेसन मोदकः = मुगद का लड्डू। सेविका मोदक = सिमैयों का लड्डू। मुद्ग मोदकः = बूँदी का लड्डू।

धूमसी = मूग का चूर्ण। मोदकः = लड्डू। कटाह = कढाही। तप्तकः = तवा। झर्झरः = झारा। झर्झरी = झरिया। कुण्डलिनी = जलेबी।

सिता = शक्कर। सितोपल = मिश्री। शर्करा = बूरा। शर्करोदकम् = सरबत। प्रपानकः = पना । सक्तुः= सत्तू।

धाना = (यवास्तु निस्तुषा भृष्टाः स्मृता धाना इति स्त्रियाम्)

छिलका रहित भुने हुये 'यव' को धाना कहते हैं।

लाजा : = धान के फूला (लाई), पृथका चिपिटः = चिवडा।

होलकः = होरा। गेंहू और जौ की भुनी हुई बाल को होरा कहते हैं।

दुग्धस्य पक्वस्य पिण्ड प्रोक्तः किलाटकः ।।

नवनीतं = मख्खन। किलाट = खोवा (मावा)
सन्तानिका = मलाई ।।

इक्षुः वर्गः

इक्षुदीर्घच्छदः प्रोक्तस्तथा भूमिरतोऽपि च ।
गूढमूलोऽसि पत्रञ्च तथा मधुतृणः स्मृतः ।।

अर्थ – इक्षुः, दीर्घच्छदः, भूमिरसः , गूढमूलः, असिपत्रं , मधुतृणं = ये सभी ईख के नाम है।

कोशकः = कालागन्ना।

धान्य वर्गः

गोधूमः, सुमनः = गेंहू। माधूली = पिसी। मुद्गः = मूंग। माषः = उडद, राजभाषाः चपलः, चवलः ये सभी नाम रोंसा के हैं।

मकुष्ठः, वनमुद्गः, मकुष्ठः मुकुष्ठकः ये सभी नाम मोठ के हैं।

मङ्गल्यकः, मसूरः, मङ्गल्या, मसूरिका ये सभी नाम मसूर के हैं।

आढकी, तुवरी, शरणपुष्पिका ये सभी नाम अरहर (राहर) के हैं।

चणकः, हरिमन्थकः सकलप्रियः ये तीन नाम चना के हैं।

कलायः , वर्तुलः, सतीनः, हरेणुकः ये चार नाम मटर के है।

कुलत्थिका , कुलत्थः ये दो नाम कुलथी के हैं।

तिलः यह एक नाम तिली का है।

रामतिलः, पीतपुष्पी ये दो नाम रमतिली के हैं।

अलसी, नीलपुष्पी, पार्वती, उमा, क्षुमा ये पाँच नाम अलसी के हैं।

तुवरी तेवरा , सिद्धार्थः = पीला सरसों।

सर्षपः , कटुक , स्नेहः , तुन्तुभः, कदम्बकः ये पाँच नाम लाल सरसों के हैं।

राजी, राजिका, तीक्ष्णगन्धः, कुञ्जनिका, सुरी ये पाँच नाम राई के हैं।

क्षुद्रधान्यः, कुधान्यः ये दो नाम पसाई चाँवल के हैं।

कङ्गु, पियङ्गु ये दो नाम कांगनी के हैं और स्त्रीलिंग हैं।

श्यामकः = समा। कोद्रवः , कोरदूषः ये दो नाम कोदों के हैं।

उद्यालः = जंङ्गली कोदों। वंशयवः = बाँस के बीज का नाम हैं।

प्रसाधिका नीवारः, ऋणान्नं ये तीन नाम निवार के हैं।

यावनालः = ज्वार। पनेश और यव ये दो नाम जवा के हैं।

धान्यं, शाली, ब्रीहीः, कमलः, षाष्ठिक ये पाँच नाम धान के हैं।

फल वर्गः

आम्रः, रसालः, सहकारः, कामाङ्गः, मधुदूतः, माकन्दः, पिकवल्लभ ये सात नाम आम के हैं। वालाम्रः = कैरी (छोटी छोटी अमियाँ)।

शुष्काम्रफलं = अमचुर। पक्वाम्रः = पका हुआ आम।

आमाम्रः = कच्चा आम।

आम्रावर्तः = पके हुये आम के रस को कपड़े में फैलाये और धूप में सुखायें उसको आम्रावर्त कहतें हैं। जैसे कहा है।

पक्वस्य सहकारस्य पटे विस्तारितो रसः।
धैर्यशुष्को मुहुर्दत्तः आम्रावर्त इति स्मृतः।।

आम्रवीजः = आम की गुठली।

राजाम्र, टङ्क, आमात्, कामाह्व और, राजपुत्रक ये पाँच नाम कलमी आम के हैं। आम = कच्चा आम।

पनस, कण्टकिफलं, पणश और अतिवृहत्फलं ये चार नाम कटहल के हैं।

कदली, वारणा, मोचा, अम्बुसारः अंशुमतिफलं और रंभा ये छह नाम केला के हैं।

चिर्भटः, धेनुदुग्धं, गोरक्ष और कर्कटी ये चार नाम कचरियाँ के हैं।

नारिकेर, नारिकेल, लाङ्गली, कूचशीर्षक, दृढ़फलं, महाफलं और श्रीफल ये सात नाम नारियल के हैं।

कालिन्द, कृष्णबीजं , कालिङ्ग और सुवर्तुल ये चार नाम कलींदें के हैं।

दशाङ्गुलं और खुर्बूजः ये दो नाम खुरबूजा के हैं।

''घोण्टा, पूंगी, पूग , गुणाक , क्रमुक और उद्वेगः ये छह नाम सुपारी के हैं।

तालः , लेखपत्रं , तृणराजः और महोन्नतः ये चार नाम ताड़ पत्र के हैं।

विल्वः, शाण्डिल्यः, शैलूषः, मालूरःऔर श्रीफलं ये पाँच नाम वेल के है।

कपित्थः, दधित्थः और पुष्पफलं ये तीन कैंथा के नाम हैं।

नारङ्गः, नागरङ्गः, त्वक्स्कन्धः और मुखप्रियः ये चार नाम नारङ्गीं के हैं।

तिन्दुकः, स्फूर्जकः, काकेन्द्रः, विषतिन्दुः और मर्कटतिन्दुः ये पाँच नाम कुचला के हैं।

फलेन्द्रः, नन्दः, राजजम्बुः और महाफला ये चार नाम बड़ी जामुन के हैं।

क्षुद्रजम्बुः, सूक्ष्मपत्रं, नोदयी और जलजम्बुका ये चार नाम छोटी जामुन के हैं।

कर्कन्धुः, वदरी , कोलः, आजप्रियः, कुहः और कोलीविषमः ये छः नाम बेर के हैं। (छोटें बेर)

फेनिलः, कुवलः और घोण्टः ये तीन नाम बड़े बेर के हैं।

सुगन्धमूलः, लवली, पाण्डुः, कोमलः, वल्कतः = हरफरखेड़ी।

करमर्दः और सुषेणः ये दो नाम करोंदा के हैं।

करमर्दिकः = करोंदी।

प्रियालः, खरस्कन्धः, चारः बहुवत्कलं, राजादनः, तापसेष्टः और सन्नकद्रुः ये सात नाम अचार के हैं। (चिरोंजी वालें अचार)

राजादानः, फलाध्यक्षः, राजन्यः और क्षीरिका ये चार नाम खिरनी के हैं।

विकङ्कतः, सुव्रावृक्षः, ग्रन्थिलः, स्वादु कण्टकः, यज्ञवृक्षः, कण्टकी और व्याघ्रपादः ये सात नाम कढ़ाई के हैं।

पद्मवीजः, पद्माक्षः, गालोयः, पद्मकर्कटी ये चार नाम कमलगट्टा के हैं।

मखान्नः, पद्मबीजाभः और पानीयफलं ये तीन नाम मखाने के हैं।

शृङ्गाटकः, जलफलं और त्रिकोणफलं ये तीन नाम सिंघाडे के हैं।

मधुकः, गुडपुष्पः, वानप्रस्थः, मधुपुष्पं, मधुष्ठलः और मधुलकः ये छः नाम महुआ के हैं।

परुषकः, परुषः और अल्पास्थिः ये तीन नाम फालसा के हैं।

तूतः, स्थूलः, पूगः, क्रमुकः और ब्रह्मदारुः ये नाम अलूत सुपाड़ी के हैं।

दाडिमः, शीतः, उछालः, शेलुः, श्लेष्मातकः, पिच्छिलः और भूतवृक्षः ये सात नाम रसल्ला (लिसोडा) के हैं।

पायः, प्रसादः और कतकः ये तीन नाम निर्मली के है

द्राक्षः, स्वादुफला, मधुरसा, मृद्वीकः, हारहूरा और गोस्तनी ये छः नाम मुनक्का दाख के हैं।

अबीजः और स्वल्प सेधा ये किसमिस के दो नाम है।

आमाद्राक्षः = बड़े अङ्गूर। आमाबीजः = छोटे अङ्गूर।

भूमिखर्जूरिकः, स्वादी, दुरारोहः, मृदुच्छदा, स्कन्धफला, काकर्कटी और स्वादुमस्तका = खजूर के ये सात नाम है।

खर्जूरी और तरुतोयम् ये दो शराब के नाम हैं।

सुलेमानी, मृदुला, दलहीनफला, खर्जूरः, वाताद्, वातवैरिन्, नेत्रोपमफलं ये सात नाम बादाम के हैं।

सिवितिकाफलम् = सेव। अमृतफलम् = नासपाती।

पीलु, गुडफलः, स्रंसी और शीतफल ये चार नाम पीलुफल के हैं।

पीलुः, शैलभवः, अक्षोटः और कर्परालः ये चार नाम अखरोट के हैं।

वीजपूरो, मातुलिङ्गो रुचकः और फलपूरकः ये चार नाम विजोरा के हैं।

वीजपूर, मधुर और मधुकर्कटी ये तीन नाम मधु ककडी के हैं।

जम्वीरी दन्तशठा जम्म जम्मीरः और जम्मलः ये पाँच नाम जम्बीर के हैं।

निम्व, निम्बुक और निम्बूक ये तीन नाम नींवू के है।

अम्लिका, चक्रिकाम्ली, चुक्रादन्त शठा आम्ला चविका चिञ्चा तिन्तिकिका तिन्तिडह ये 9 ईमली के नाम हैं।

आमलकः = आँवला (त्रि.लि.)

''वटादि वर्गः''

वट रक्तफलः शृङ्गी न्यग्रोध स्कन्धजिः ध्रुवः क्षीरी वैश्रवणो वासो बहुपाद वनस्पतिः ये 10 नाम वटवृक्ष के हैं।

उदुम्बरो, जन्तुफलो, यज्ञाङ्गो, हेमदुग्धकः ये चार ऊमर के नाम हैं।

काठोम्बरिका फल्गूः, धनेफला ये तीन नाम कठूमर के हैं।

प्लक्ष जटी और पर्कटी ये तीन नाम पाकर के हैं।

शिरीष, भण्डिल, भण्डी, भण्डीर, कपीतनः, शुकपुष्पः, शुकतरु, मृदुपुष्प और शुकप्रिय ये नव नाम शिरीष के हैं।

शल्लकी, गजभक्ष्या, सुवहा और सुरभीरसा ये चार नाम सलई के हैं

महेरुणा कुन्दरुकी, वल्लकी, बहुसुवा, शिंशिपा, पिच्छिला, श्यामा, कृष्णसारा और सागुरु ये नौ नाम सीसम के हैं।

कोहा = ककुभोऽर्जुननामाख्यो नदी सर्जश्च कीर्तिनः।

इन्द्रन्दुः वीरवृक्षश्च वीरश्च धवलः स्मृतः॥

ककुम, अर्जुन, नदीसर्ज, कीर्तिन, इन्द्रेन्दु, वीरवृक्ष, वीर और धवल ये सात नाम कोहा के है।

खैर = खदिर, रक्तसार, गायत्री , दन्तधावनः, कण्टकी , बालपत्र , बहुशल्य और यज्ञियः ये आठ नाम खैर के हैं।

बबूल = बब्बूलः , किङ्किरात, किङ्किण और सपीतकः ये चार नाम बबूल के हैं।

रीठा = अरिष्टक, मांगल्यः, कृष्णवर्ण , साधनः, रक्तबीजः , पीतफेनः फेनिलः और गर्भपातकः ये आठ नाम रीठा के हैं।

तमालः = तमाल , तापिच्छः काल स्कन्धो और अमितद्रुमः ये चार नाम तमालवृक्ष के हैं।

तुन : = तूणी तन्नक आपीनतुणिक और कच्छका ये चार नाम तुन के हैं।

भोजपत्र = भूर्जपत्रः भूर्ज चर्मी वहुत और वल्कलः ये चार नाम भोजपत्रके हैं।

सेमर = शाल्मलि , मोचा पिच्छिला , पूरणी, रक्तपुष्पा, स्विरायु ,कण्टकाढ्या और तूलिनी ये आठ नाम सेमर वृक्ष के हैं।

धवः , धवो ,नन्दितरूः, स्विरो गौरों और धुरन्धरः ये पाँच नाम धव के हैं।

सागोन , भूमीरुह, द्वारदारूः नीरदारू और खरच्छद ये चार नाम सागोन के हैं।

मैनार , मदनपूछर्दनः, लेण्डोनटः, और पिण्डीतक ये पाँच नाम मेनार के हैं।

"पुष्प वर्गः"

काई - वारिपर्णी और कुम्भिका ये दो नाम काई के हैं।

चोई - शैवाल और शैवल ये दो नाम चोई के हैं।

गुलाब - शतपत्री , तारुण्युक्ताकर्णिका, चारुकेशरा , महाकुमारी , गन्धाढ्या लाक्षा कृष्णति और मञ्जुली ये नव नाम गुलाब के पुष्प के हैं।

वेला - श्लोपदी, षट्पदा, नन्दा , वार्षिकी और मुक्तवन्धना ये पाँच नाम वेला के हैं।

चमेली - जातिः, जती , सुमना , मालती और राजपुत्रिका ये पाँच नाम चमेली केहैं।

पीली चमेली - चेतिका, पीता और स्वर्णजातिका ये तीन नाम पीली चमेली के हैं।

जुही - यूथिका ट गणिका और अम्बष्ठा ये तीन नाम जुही के हैं।

पीली जुही - पीता और हेमपुष्पिका ये दो नाम पीली जुही क है।

मोलसिरी - वकुलः, मधुगन्धः और सिंहकेसरकः ये तीन नाम मौलसिरी या बकोली के हैं।

कदम्ब - कदम्बः, प्रियको, नीपो, वृत्तपुष्पः और हरिप्रियः ये पाँच नाम कदम्व के हैं।

मालती - मल्लिका, मदजनित और शीतभीरू , भूपदी ये चार नाम मालती के हैं।

माधवीमोलिया - माधवी , वासन्ति, पुण्ड्रक , मण्डक, अतियुक्त , विमुक्त, कामु और भ्रमरोत्सव ये आठ नाम माधवीमोतिया के हैं।

केवड़ा - केवक सूचिकापुष्प जम्वुक और क्रकचच्छद ये चार नाम केवडा के हैं।

कनेर - कर्णिकारः , परिव्याधः और पादपोत्पल ये तीन नाम कनेर के हैं।

अशोक -अशोक, हेमपुष्प, वञ्जुल , ताम्रपल्लव, कङ्केलि पिण्डपुष्प, गन्धपुष्प और नट ये सात नाम अशोक के हैं।

कुन्द - कुन्द माध्यं और सदापुष्प ये सभी नाम कुन्द के हैं।

तिलक - तिलकः क्षुरकः श्रीमान् पुरुषश्छिन्न और पुष्पक, ये पाँच नाम तिलक के हैं।

दुपहरिया - वन्ध , बन्धुजीव , रक्तो और माध्यह्निक ये चार नाम दुपहरियाँ के हैं।

दमनक - उक्तो दमनको दान्तों मुनिपुत्रस्तपोधनः।
गन्धोत्कटो व्रह्मसटो विनीतः कलपत्रकः ।।

दमनक, दान्त, मुनिपुत्र, तपोंधन, गन्धोत्कट, ब्रह्मजट, विनीत, कलपत्र ये सभी (पु.) नाम दमनक के जानना चाहीये।

'कपूर वर्गः'

जायफलः - जातिफलं , जातिकोशं और मालतीफलम् ये तीन नाम जायफल के हैं।

जायपत्री - जातिफलस्य त्वक् प्रोक्ता जातिपत्री भिषम्वरैः।
जायफल की छाल को जायपत्री कहतें हैं।

लौंग - लवंग, देवकुसुम, श्रीसंज्ञं और श्रीप्रसूनकम् ये चार नाम लौंग के हैं।

बड़ी इलायची या डौंडा - एला , स्थूला , बहुला , त्रपुटा ,भद्रैला वृहदैला, चन्द्रवाला, निष्कुटिः ये सात नाम बड़ी इलायची के हैं। इसे डौंढा भी कहते हैं।

दाल चीनी - त्वक् स्वादी तु तनुत्विक् स्यात्तथा दारूसिता मता।

त्वक् स्वादी, तनुत्वक् तथा दारूसिता (सफेद लकड़ी) ये तीन नाम दाल चीनी के हैं।

सोंठ - शुष्ठी, विश्वा , विश्वं , नागर ,विश्वभेषजम् उष्णं कटुभद्रं , शृङ्गवेरं और महौषधम् ये आठ नाम सौंठ के हैं।

अदरक - आर्द्रकं, शृङ्गवेरं स्यात् कटुभद्रं तथाद्रिका।

अर्थ - आर्द्रक, शृङ्गवेर, कटुभद्र (खाने में कटु होने पर भी स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद) और आद्रिका ये चार नाम अदरक के हैं।

कालीमिर्च - मारिचं वेल्लजं कृष्णभूषणं धर्मपत्तनम्।

अर्थ - मारिच, वेल्लज, कृष्णभूषण, (कालीत्वक् उसके ऊपर रहती हैं) और धर्मपत्तन ये चार नाम कालीमिर्च के हैं।

अजवायन - यवानिकोग्रगन्धाच ब्रह्मदर्भाज मोदिका।

अर्थ - यवानिक, उग्रगन्धा, ब्रह्मदर्भा और अजमोदिका ये चार नाम अजवायन के हैं।

जीरा - जीरको जरणो ऽजाजीकणा स्याद् दीर्घ जीरकः।

अर्थ - जीरक, जरण, अजाजीकण, दीर्घजीरक - ये चार नाम जीरे के हैं।

धना - धान्यकं धानकं धान्यं धाना धनियकं तथा।

अर्थ - धान्यक, धानकं, धान्य, धाना, धनियक ये पाँच नाम धना के हैं।

मेथी - मेथिका मेथिनी मेथिः दीपनी बहुपत्रिका।
बोधनी बहुबीजा च जातिगन्ध फला तथा।
वल्लरी कामथा मिश्रा मिश्रपुष्पा च कैरवह।

अर्थ - मेथिका, मेथिनी, मेथि, दीपनी, बहुपत्रिका, बोधनी, बहुबीजा, जातिगन्ध, फलगन्ध, वल्लरी, कामथा, मिश्रा, मिश्रपुष्पा और कैरवी ये चौदह नाम मेथि के हैं।

हींग - सहस्रबोधि जातुकं, वाह्भीकं हिंगु और रामठम् ये पाँच नाम हींग के हैं।

वच - वच उग्रगन्ध गोलोभि और शतपर्विका ये चार नाम वच के हैं।

हल्दी - हरिद्रा काञ्चनी पीता निशाख्यावर वर्णिनी।
कृमिघ्ना, हलदी योषितप्रिया विलासिनी।

अर्थ - हरिद्रा, काञ्चनी, पीता, वरवर्णिनी, कृमिघ्ना और योषितप्रिया आदि ये सात नाम हलदी के हैं।

लहसुन - लशनुस्तु रसोनः स्यादुग्र गन्धो महौषधम् ।
अरिष्टो म्लेच्छकन्दश्च यवनेष्टो रसोनकः ॥

अर्थ - लशुन, रसोन, उग्रगंध , महौषधं, अरिष्ट, म्लेच्छकन्द, रसोनक, यवनेष्ट (मुसलमानो के लिये इष्ट) ये नाम लहसुन के हैं।

प्याज - पलाण्डुः यवनेष्टश्च दुर्गन्धो मुखदूषकः ।

पलाण्डु, यवनेष्ट (मुसलमानों को इष्ट है उससे दुर्गन्ध आती है इसलिये उसे दुर्गन्धः कहते हैं) । जिसके खाने से मुह दूषित हो जाता हैं इसलिए उसका नाम मुखदूषित है।

भाँग - भंग, गञ्जा मातुलानी मादिनी विजयाजया ये छः नाम भाँग के हैं।

अफीम - आफूक और अहिफेनकम् ये दो नाम अफीम के हैं।

खसखस - खसखस और तिलाः ये दो नाम खसखस के हैं।

पोस्ता - तिलभेदः और खसतिलः ये दो नाम पोस्ता के हैं।

सेधानमक - सेन्ध वोऽस्त्री शीतशिवं मणिमन्यं च सिन्धुजम्।

अर्थ - सेन्धव, शीतशिव, मणिमन्थ और सिन्धुज (समुद्र से उत्पन्न होता है इसलिये उसको सिन्धुज कहते हैं) ये चा नाम नमक है।

सामर नमक - शाकम्मरीयं कथितं गुडाख्यं रोमकं तथा ।

सुहाग - सौभाग्यं टङ्कणं क्षारों धातुद्रावकमुच्यते।

अर्थ - सौभाग्य , टङ्कण, क्षारः , धातुद्रावकः ये चार नाम सुहाग के हैं।

चिरायता - किरात तिक्तः कौरातः कटुतिक्तः और किरातकः ये पाँच नाम चिरायता के हैं।

महाकवि धनञ्जय

नाममाला के लेखक 'महाकवि धनञ्जय' हैं। इन्होंने स्वयं अपने किसी ग्रन्थ में अपने समय आदि के बारे में निर्देश नहीं किया है। वे गृहस्थ थे, द्विसन्धान महाकाव्य के अन्तिम श्लोक की व्याख्या में उसके टीकाकार ने धनञ्जय के पिता का नाम 'वसुदेव', माता का नाम श्रीमती 'श्री देवी' और गुरु का नाम दशरथ सूचित किया है। इनकी ख्याति 'द्विसन्धानकवि' के नाम से थी। नाममाला के अन्त में पाया जाने वाला यह श्लोक स्वयं इसका प्रमाण है:-

प्रमाणमकलङ्कस्य पूज्यपादस्य लक्षणम् ।
द्विसन्धानकवेः काव्यं रत्नत्रयमपश्चिमम् ।।

अर्थात् : अकलङ्क देव का 'प्रमाणशास्त्र', पूज्यपाद का' लक्षण व्याकरण शास्त्र' और द्विसन्धान कवि का 'द्विसन्धानकाव्य' ये तीनो अपूर्व रत्नत्रय है।

द्विसन्धान काव्य अपने समय में पर्याप्त प्रसिद्धिप्राप्त कर चुका था। इसका उल्लेख 'वादिराज सूरि' ने अपने 'पार्श्वनाथ चरित्र' के प्रारंभ में प्रशंसा पूर्वक किया है। एवं धाराधीश भोजराज के समकालीन 'आचार्य प्रभाचन्द्र' ने अपने 'प्रमेयकमलमार्त्तण्ड' (पृ. 402) में किया है। धनञ्जय कवि के द्वारा प्रस्तुत ग्रन्थ 'शब्द कोश निघण्टु' एवं 'विषापहार' नामक स्तोत्र भी बनाया गया है जिसमें उपजाति छन्द में चालीस श्लोक निरुपित हैं। यह अपने प्रसाद ओज और गाम्भीर्य के लिए प्रसिद्ध है। कहते हैं कि एक बार उनका पुत्र बगीचे में फूल तोडने गया। उसे साँप ने काट लिया उसकी माँ ने नौकरों के माध्यम से बुलवाया। सेठजी भगवान की भक्ति में लीन थे। उन्हे भक्ति में दृढ़ आस्था थी अतः वे पूजन छोडकर नही आये। पत्नि को गुस्सा आ गया और पुत्र को मन्दिर में ले आयी और कहने लगी भगवान थोडे हि मन्दिर छोडकर भाग रहे थे। पुत्र की दवा करा कर बाद में भक्ति कर सकते थे। फिर भी उन्होने ध्यान नही दिया पूजन के वाद उन्होंने विषापहार स्तोत्र की रचना शुरु कि जैसे हि उन्होने निम्न श्लोक बोला :-

विषापहारं मणिमौषधानि, मन्त्रं समुद्दिश्य रसायनञ्च ।
भ्राम्यन्त्यहो न त्वमिति स्मरन्ति, पर्यायनामानि तवैव तानि ।।

अर्थात : हे भगवन् लोग विष को दूर करने के लिए मणि,मन्त्र, औषधि, रसायन का उद्देश्य करके भ्रमण करते हैं। पर आश्चर्य है कि वे आपका नाम स्मरण नहि करते क्योंकि वे मणि मन्त्र आदि तो आपके हि पर्यायवाची नाम हैं। इत्यादि श्लोक पढ़ते हि जहर उतर गया और वालक इस प्रकार उठकर बैठ गया जैसे कि सोकर ही उठा हो।

समय विचार :-

विद्वानों के अनेक प्रमाणों के आधार से महाकवि धनञ्जय का समय ई. 8 वीं का उत्तरभाग और नौवीं का पूर्व भाग प्रमाणित होता है।

परिचय के गवाक्ष से



ब्र. पवन कुमार जैन

नाम	: ब्र. पवन कुमार जैन
जन्म	: 2-10-1967
जन्मस्थान	: तारादेही (दमोह)
पिता का नाम	: श्री हुकुमचन्द डेवड़िया
माता का नाम	: श्रीमती पुत्तीबाई
भाई दो बड़े	: कैलाश, चन्द्रकुमार
अध्ययन	: सिद्धान्तरत्न, न्यायरत्न
ब्रह्मचर्य व्रत	: 21-6-1990 (मुनि श्री निर्वाणसागर जी)
कृतिसम्पादन	: सूक्तिमुक्तावली, सुबोध संस्कृत भारती, श्रावकचर्या, धर्म स्कन्ध, बृहद्सामायिक पाठ, नाममालादि शब्द कोश

नाम	: ब्र. कमल कुमार जैन
जन्म	: 5-4-1970
जन्मस्थान	: तारादेही (दमोह)
पिता का नाम	: श्री भागचन्द्र बडकुल
माता का नाम	: श्रीमती मालतीबाई
भाई दो छोटे	: अखिलेश, प्रवीण
बहिने दो	: सुशीला, संगीता
अध्ययन	: सिद्धान्तरत्न, न्यायरत्न
ब्रह्मचर्य व्रत	: 21-6-1990 (मुनिश्री निर्वाणसागर जी)
कृतिसम्पादन	: सूक्तिमुक्तावली, सुबोध संस्कृत भारती, श्रावकचर्या, धर्म स्कन्ध, बृहद्सामायिक पाठ, नाममालादि शब्द कोश

